कैवल्य

संरक्षक

परम पूज्य गुरुदेव

समायोजक

डॉ. गिरीश पाण्डेय डॉ. बद्री जायसवाल

डॉ. कि. वा. देवरस

संपादक

सुश्री मंगला देवरस

संपादन सहयोगी

श्री अरविंद शर्मा

विशेष सहयोग

श्री राहुल बाजपेई

-:- आव्हान -:-

स्मरणिका यह नाम परम पूज्य गुरुजी द्वारा दिया गया है। स्मरण रहे कि हमें गुरुजी की दी हुई अनुकम्पा को आत्मरत होकर भोगना नहीं है समाज में उसे प्रसारित करना है अब यही हमारा मूल उद्देश्य हो ऐसी मेरी कामना है।

स्मरण रहे कि हमारा परिवार दिव्य परिवार है तथा विरल भी., हम अपने इस परिवार के माध्यम से सारे समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत कर रहें हैं। समाज के खोए हुए हुए मूल्यों को पुर्नस्थापित करने में भले ही किंचित मात्र, क्यों न ही, – सहायक हो सकते हैं।

स्मरण रहें कि आज विश्व को एक ऐसी आंधी की आवश्यकता है, जो अपनी शक्ति से सारे के सारे, दुर्विचारों को हटाकर–सात्विक बिचारों का अवतरण करने में समर्थ हो सके इसमें दो मत नही, कि परम पूज्य गुरुजी ने अपने अनुग्रह से, हममें ऐसी आंधी की सम्भावनाओं के बीज आरोपित हो रहें हैं आवश्यकता है केवल अपने आपको पहचानने की एवं पुरुषार्थ को क्रियान्वित करने की।

आइये ! क्यो न हम इसी क्षण से अपने इस गौरवमयी – संस्कृति का विस्तार करने हेतु संकल्प करें तथा उस कार्य में तन मन धन से अपने आपको समर्पित कर दें – यही हमारे सतगुरु को सद्कामना है।

सद्भावनाओं सहित –

सदेव आपका

गुरु पर्व, एकदशी
सम्वत् २०४४

डॉ. गिरिश पांडेय
राजेन्द्र नगर, बिलासपुर (म॰ प्र.)

वासुदेवोपनिषद	-	पृष्ट ५
संभावनाएं	-	,, २२
बन्धु परिचय	-	,, ४०

दो शब्द

वर्तमान समय में जब सामाजिक मूल्यों की अस्मिता संकट में है, समाज के प्रत्येक क्षेत्र में हिंसा तथा उन्माद
छाया है, मानवता की विराट छवि धूमिल सी हो रही है, इस समय नैतिकता सम्पन्न पुरुष की आवश्यकता है
जो समाज का दिशा दर्शक हो, शांति एकाग्रता तथा आत्म साक्षात्कारकी दिशा दिखाते हुये समाज के विराट
परिवार को एक सूत्र में बाँध सके। पूज्य वासुदेव तिवारी ऐसे ही दिव्य पुरुष हैं जिनकी स्निग्ध छाया
में गुरु परिवार फूला फला है। बिलासपुर के गुरु परिवार ने पूज्य
गुरु परिवार की सामीप्यता तथा उनकी निकटता के लिये
गुरु की कृपा से स्मारिका के प्रकाशन की योजना बनाकर क्रियान्वित की। यह बिलासपुर
गुरु परिवार की भेंट है। भक्तों से लेख तथा अनुभव आमन्त्रित किये गये। किन्तु इनका
अपेक्षित परिणाम नहीं मिला, इसी कारण स्मारिकामें बिलासपुर तथा
रायपुर के गुरु परिवार के लेख एवं अनुभव की अधिकता है। हमारी
पृथ्वी के नक्शे में इधर-उधर फैले गुरु परिवार से अनुरोध है कि प्रति
वर्ष अपने नवीन अनुभव एवं धर्म तथा अध्यात्मिक क्षेत्र के लेख सम्पादक
मंडल के पते पर भेजें जिससे उसका उपयोग भविष्य में प्रकाशित होनेवाली
पुस्तक अथवा "स्मारिका" में किया जा सके।

"स्मारिका" के तीन अंक हैं, प्रथम खंड में गुरु मुख से सामग्री
का संकलन है, द्वितीय खंड में विभिन्न भक्तों के बिचार तथा
लेखहै, तृतीय खंड भक्तों के पवित्र अनुभवों का है। इन सभी
खंडों की सामग्री निश्चित ही गुरु परिवार के सदस्यों
तथा आम आदमी के लिये भी जीवन में महत्वपूर्ण
भूमिका अदा करेगी, ऐसा सम्पादक मंडल का
बिश्वास है।

गुरु की सुरभि दिग-दिगंत तक फैले गुरु
परिवार विराट से विराटतर हो
ऐसी इच्छा स्वाभाविक है,
"स्मारिका" इस मील का स्तंभ
साबित होगी, यह विश्वास
हैं। बिचारों की तरंगे
आंदोलित होंगी हमअपनी
स्थिति के बारे मेंगहराई
से सोचेंगे इस उम्मीदके
साथ स्मारिका की
त्रुटियों हेतु हम
क्षमा केप्रार्थी हैं।

आप सभी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुये "स्मरणिका" का यह प्रथम पुष्प गुरु चरणों में सादर समर्पित।

बिलासपुर (म. प्र.)
(२२ जुलाई ८७)

कु. मंगला देवरस
सम्पादक

परम पूज्य गुरुजी एवं माताजी
सन् १९६८

माया और विज्ञान

माया - माया का अर्थ है, मेरा और तेरा। मै अरु मोर, तोर - तेय माया। माया का अर्थ है मै और मेरा, - मायने मेरा और तेरा, ... खतम। आप मेरा और तेरा कहते हैं और मै, मेरा - तेरा कहता हूं, शब्द एक ही है, आप देख लीजिए, मेरा तेरा का अर्थ - यह सभी मे व्याप्त दिखलाई पड़ता है, यह मेरा और तेरा की प्रवृति स्थायी या स्थिर नहीं होने देती, इस मेरा और तेरा के भाव से दूर होने के लिए अयं निजः परो वेति के भाव के आत्मसात होने के लिए, आत्मबल की आवश्यकता है। आत्मबल अभ्यास से प्राप्त होता है। इस माया में रहकर भी न रहने के लिए [illegible]

सब समाप्त हो जाते हैं एवं अशुण्य रूप से शुद्ध कार्य होने लगते हैं। ऐसा होने पर हम 'अभय' प्राप्त कर पाते हैं - याने किसी भी प्रकार का भय जो मनुष्य को उसके 'शाश्वत' मार्ग से अलग करता है वह 'भय' ही दूर हो जाता है, यह स्थिति प्राप्त करनी है - यह तभी होगा जब हमें आत्मदर्शन हो जाये।

इस शरीर में पांच कोश है, उसमें से एक है विज्ञानमय - कोश, साधना करते हुए हम वहां पहुचे, इसे Certre of Peace कहा जाता है, यह क्या है ? - [illegible]

वासुदेवोपनिषद

चले जाए, ठीक उसी तरह जैसे जलाशय के पानी में काई के पड़े रहने से जल पारदर्शी नही रह पाता, लाइट आया, पत्थर रुपी काई के खुल जाने से, हट जाने से उस आत्मा के प्रकाश में हम आगे बढ़ते चले जाते है। आत्मा का यह प्रकाश, चरित्र रुपी जल पर विषय वासना रुपी काई को हटाने का कार्य करता है। एक बार इस 'काई' के हट जाने से प्रयास यह होना चाहिए कि हम पुन: उस काई को अपने ऊपर आच्छादित न होने दें। चरित्र से काई हट गई, काई फिर न आये - यह होना चाहिए। यह स्थिति हम सभी को ध्यान में रखना चाहिए।

यह स्थिति निरंतर अभ्यास वह भी जन्म जन्मांतर तक चलने वाले अभ्यास (निरंतर - अंतर रहित) से प्राप्त होती है, इसे Contineously (-याने बंद नहीं होना चाहिए) अभ्यास बनाए रखने से चरित्र दोषों से मुक्त रहता है। इस आत्म शुद्धि के बाद बिकार रुपी जितने कार्य होते हैं - वे

और 'आनन्दमय कोष' की अवस्था में शोक चिंता दुख :- साधक को कुछ भी नही व्यापता, सब कार्य अपने - आप होते रहते हैं और जीवात्मा उसे साक्षी भाव से भोगते हुए आगे निकलता चला जाता है। यह भारतीय संस्कृति और उसका विज्ञान है, इस तथ्य को आत्मसात करके अभ्यास द्वारा आगे बढ़ना चाहिए।

"तस्यापि निरोधेत्सर्वनिरोधान" अर्थात 'सेन्टर ऑफ पीस' के भी ऊपर साधना द्वारा जब आप चले जायेंगे – (यहां पर आकाश है पर इसके ऊपर आकाश नहीं है) जिसे Above–time & Space कहा गया (उदा :– एक आदमी भेज दिया घड़ी बांध दिया – १ बजे हैं – जायेगा ऊपर वहां से लौटकर आयेगा, – 'वहां' से लौटकर आने पर १ ही बजे होंगे, तब तक दुनियां बदल गई, परंतु उसकी घड़ी में १ ही बजते हैं जब नीचे आया तो घड़ी शुरु होती है – ये अनुभूतियां हैं)

सर्वं निरोधानि याने सबका निरोध हो जाता है — देशकाल से परे जाने पर – निरोध याने नाश नहीं होता है – आप उसको टाल सकते हैं, इसी जन्म में टाल सकते हैं। अब आगे सिद्धावस्था को प्राप्त करो ये राम-कृष्ण जो हैं इसी सिद्धावस्था को प्राप्त किए हुए सिद्ध हैं। इन्हें अवतार कहा जाता है। इन्हें अवतार क्यों कहा, क्योंकि ये माँ के पेट से जन्म नहीं लेते, ये जब चाहते हैं, संसार में आते हैं, और संसार का कार्य करके चले जाते हैं। – ये मेरा छोटा सा अनुमान है। और केवल अनुमान ही नहीं, हम इस मत पर आ गये हैं ऐसा मैंने समझा, पाया और आपके सामने रख दिया।

लेकिन इस सब के लिए दृढ़ भूमि का निर्माण करना होगा या भूमिका दृढ़ करनी होगी कबीरदास जी ने अपने दोहे में कहा है –

"हद से अनहद हुआ किया शून्य स्थान"

हद याने सीमा – ये अभी जो कहा देश काल से परे देश काल जहां तक हो उसे 'हद' कहा है, इससे परे जो (Above time & Space) है, वह अनहद चले जाने की स्थिति है, यहां उस शून्य में स्नान किया ऐसा इन्होंने बतलाया, यहां तक आकाश है, इससे आगे आकाश नहीं है, इस आकाश से ऊपर चले जाने के बाद शून्य है, वहां स्थान किया

"मुनि जन मंन हल न पाइयां – तहां कीन्ह विश्राम"

अर्थात मुनि जन मन हल न पाइयां, अर्थात – जिस रहस्य को जानपाने में मुनियों को भी सफलता नहीं मिली अर्थात वह अलभ्य स्थिति केवल तपस्या से वास्तविक पुरुषार्थ करने से साध्य है।

'तन्हा कीन्ह विश्राम' अर्थात वहां पहुंचना चाहिए, –पहुंचना है। वह शून्य ही सुषुप्तावस्था कहा गया है। इस अवस्था में प्रकृति भी सो जाती है, यह स्थिति न स्वप्न की स्थिति है, न ही जागरण की इन में आप (अपना) या पराया का बोध नहीं रह जाता इसी को हम समाधि कहते हैं। शून्य से आगे याने अकार, उकार एवं मकार के आगे जो गये वह तो प्राप्त अनुभूतियों में ही मगन रहता है, मुस्कुराता रहता है। महात्मा कबीर ने कहा भी है –

"शून्य शहर तक सब गये, शून्य से आगे नाहि
शून्य से आगे जे गये, ते मन्द मन्द मुस्काहि,"

यह कबीर की अनुभूति थी, हमारे परिवार में भी ऐसे साधक हैं एक साधिका हमारे परिवार में मुंगेली के साधक शिष्य श्री भानुगुप्त: की श्रीमति जी ही है वह साधका है, आप लोगों ने उन्हें देखा है। (१)

अब हमें विचार करना चाहिए, कि हम कहां है कैसे हैं, क्या कर रहे हैं, अथवा नहीं कर रहे हैं, कितना अभ्यास करते हैं, कितना मिलता है, अधिकारी व्यक्ति है, जो वेदान्त या तर्क शास्त्र पढ़े हैं उनमें स्वाभाविक विचारणा शक्ति आवश्यक है, अन्यथा उन्हें भी समझने में कठिनाई होती है, दीक्षा जो सदगुरु (किसी योग्य अनुभवी) से प्राप्त होती है, वह भावों के गूढ़ रहस्य को समझने की प्रेरणा देता है, प्रयास करना चाहिये जो कहा जा रहा है, उसे समझें, न सम्भव हो समूचा कुछ समझ में न आये तो भी चिन्ता नहीं कम से कम भाव को तो समझने का प्रयास करें। यह सब भी – अभ्यास से होगा। अभ्यास से मुंह मत मोड़ो, सभी को शांति, अनुभूति, आनंद और जो जो चाहिए सब मिलता चला जायेगा।

भूमि दृढ़ होती चली जायेगी आप सामर्थ्यवान बनते चले जायेंगे, इसी से रामदास जैसे योगी सन्त समर्थ होते हैं, और समाज का उपकार, अपना उपकार इसी से होते चला जाता है। ये योगी सन्त दिव्य लोक में रहते हैं, जरुरत पड़ने पर, समय पड़ने पर समाजसेवा के लिए आते हैं। शरीर इसीलिए धारण करते हैं, शरीर इसीलिए मिलता भी है, कि समाज में आकर कर्तव्य करके समाज का जो ऋण हम पर है उससे उऋण हों, तभी मुक्त हो पायेंगे। तभी वास्तविक शांति मिलेगी। हम सब तभी "मैं और मेरा" के मायावी आवरण से मुक्त होते चले जायेंगे, समाज में विभेद नहीं एकता बढ़ेगी, वसुधैवकुटुम्बकम् चरितार्थ हो सकेगा। ऐसा तभी होता है, जब साधु की संख्या बढ़े।

साधू। किसे कहते हैं, साधू उसे कहते हैं जो साधना करे, या साधन रत हो। "साधना नाम बाहि साधना निरपेक्ष वृत्ति से होना चाहिए, मान रहित मोह रहित होकर साधक होना चाहिए, मुनने के

-0 शुभेच्च एवं विचारणा 0-

साधना की प्रक्रिया में जब सुषुम्ना का मार्ग खुल जाये, तब कुंडलिनी रुपी महाशक्ति का सुषुम्ना नाड़ी के भीतर प्रवाह (आना जाना) प्रारंभ हो जाता है। ऐसी स्थिति को प्राप्त करने से इच्छा शुभत्व युक्त हो जाती है इसे ही शुभेच्छा कहते हैं, शब्द क्षोभ से आया है। क्षोभ शक्ति है, याने आकर्षण की शक्ति। हमारे विचार कृति एवं वाणी शुभ हो तो सारा माहौल शुभत्व युक्त (शोभायमान) अथवा संस्वनात्मक शक्ति से युक्त हो जाये। जब हम निरपेक्ष वृति से साधना कर शुभेच्छा से युक्त हुए, इस शक्ति को लेकर समाज में प्रवेश करते हैं – सेवा करने के लिए तब साधक स्वयं भयमुक्त होकर समाज की सेवा करता है और समाज की सेवा इसलिए करता है, ताकि अन्य भी भयमुक्त हो। शुभेच्छा से युक्त होकर वह (साधक) दुनिया में लोगों की इच्छा या कामना पूर्ति के लिए लग जाता है।

इच्छा क्या है ? व्यवहार में ऐसा रहना, ऐसा होना है, इसे निश्चित करो। ऐसा करने से मनुष्य और फिर समूचा समाज सुखी होगा।

इससे शक्ति प्राप्त होगी शक्ति उदय होती हैं, तब वह साधक (आत्मा) कहीं आता जाता नहीं शोभायमान हो जाता है। इस स्थिति के प्राप्त होने पर, सुषुम्ना खुल जाने पर वह (साधक) स्वयं तो सेवा करता जाता है, पर किसी प्रकार की अपेक्षा मन में नहीं रहती। ऐसा सोचिए समझिए। अन्यथा स्वाद, क्रोध, भय ये क्या इच्छा के वास्तविक या स्वाभाविक रुप कहे जा सकते है।

वास्तविक शुभत्व प्राप्त करने के लिए या इच्छा शक्ति के स्वभाव रुप में प्राप्त होने के लिए, साधना की आवश्यकता एवं साधना द्वारा मरने की आवश्यकता है। (यहां मरने का विशेष तात्पर्य है, अहं का नाश, मै कर्ता नहीं हूं विचार) सद्गुरु सहायता से ही यह सम्भव है। उसके पास जाना चाहिए, जैसा बुलडोजर बर्फ को हटाकर मार्ग बनाता है, वैसे ही वासना रुपी वर्फ को हटाकर आत्मा का मार्ग प्रकाशित करते हैं। यहीं प्रथम भूमिका है।

अब 'विचारणा' को लें। मन को विचारें। कोई सुखी नहीं प्रतीत होता। यह बाह्य जगत में देखने से लगता है। क्योंकि हम बाहरी दौड़ भाग में व्यस्त है, मन की गति असीम है और इसकी दौड़ भाग ही दुखों की जड़ है जब मन की स्थिरता प्राप्त हो जाती है, तब दुख से भी बचते चले जाते है।

यदि मनुष्य का मन अंतर्मुखी हुआ और भीतरी दुनिया के (आत्मिक, आध्यात्मिक संसार) रहस्यों (जो कि अत्यंत स्वाभाविक है) के प्रति अभिरुचि हुई, सेन्ट्रल केनॉल योग में मेरुदंड सेलगी सूक्ष्म नली में प्रविष्ट हुआ और आगे बढ़ता गया वह दुखों से दूर होता चला जायेगा। मनुष्य के भीतर विविध शक्ति केन्द्रो के रुप में नाड़ी समूहों का जाल जो दलों के रुप में विद्यमान है, इनमें विविध शक्तियां ऋद्धि सिद्धियां निहित है। सेन्ट्रल केनाल के माध्यम से इन दलों का स्पर्श होता है। जब वे दल (चक्र) खुलने खिलने लगते हैं तो वे शक्तियाँ प्राप्त होती चली जाती है। इस प्रकार, बाह्य जगत से अंतंजगत की यह यात्रा मनुष्य को सुखी – सानंद एवं सम्पन्न बनाती है।

इन नाड़ियों के रुप में शक्ति केन्द्रों (जो शरीर के भीतर हैं। जगारण की आवश्यकता है। इसे हम High way Number 'O' (Zeero) कह सकते हैं, ये नाड़ियां ज्ञानवाहिनी शक्ति की नाड़ियां हैं, इन नाड़ियों की संख्या १२ मानी गई है। इन शक्तियों को प्राप्त करने से मनुष्य का सांसारिक जीवन सफल हो जाता है, – इसमें संदेह नहीं।

❀

– अहं एवं संशय –

अहं, कई जन्मों तक बना रहता है, इसे अनेक जन्मों के संस्कार, बाबय एवं आकृति से भोगना पड़ता है। जब तक एक भी संस्कार बाकी है, जन्म लेते रहना पड़ेगा, भोगने के लिए। यह अहं तब तक ही काम देता है जब तक पुण्य हैं। ऐसा भोगते – भोगते जब तीनों गुण (सत् रज तम) बुद्धि के शुद्ध (निर्मल) होने से लीन हो जाते हैं, (प्रकृति में), एवं प्रकृति में पुरुष में लीन हो जाते हैं, तब वह अवस्था प्राप्त होती है, जिसे सिद्धावस्था कहते हैं, इस सिद्धावस्था के प्राप्त होते तक 'अहं' भोग के रूप में बना ही रहता है।

वासना का बीज अहं है, यह पुण्य–पाप का कारण है 'मैं' या अहं के समाप्त होने पर ही हम उस अवस्था में पहुंचते हैं, जिसे निर्बीज समाधि कहा गया। इस स्थिति को प्राप्त करने पर साधक ज्योतिर्मय पिंड हो जाता है। हम जिसे ईश्वर या ईश्वरत्व कहते हैं, वह मायोपाधि (माया -ा- (की) उपाधि) है। जिसे हम योगमाया कहते हैं, वह ईश्वरीय है यह पराशक्ति से प्राप्त हो जाती है। परन्तु इससे भी ऊपर जाना है जिसे Above time & Space कहा गया, यह अवस्था ही पूर्वोक्त 'निर्बीज' अवस्था है, जिसमें वह साधक ज्योतिर्मय पिंड हो जाता है। कहा गया है, God is Light इस स्थिति को प्राप्त कर लेने के बाद उसका (साधक) संसार में जन्म नहीं होता संसार के मायने क्या है — सम्यक–सार अर्थात साधना इसी संसार में रहकर, समाज में रहकर की जा सकती है, इस अपने आपको जानने की जो साधना है, इसी को पुरुषार्थ कहा गया है, जो इस 'पुरुषार्थ' को मानव जीवन प्राप्त करके भी सम्पन्न नहीं करता, वह मनुष्य के शरीर में भी पशु से भिन्न कैसे हो सकता है ?

तात्पर्य यह कि साधना। अभ्यास करो – २ साधक अहं से मुक्त हो सकता। लेकिन समस्या क्या है ? बहुजन समाज ऐसा है, कि यहां सब प्रकार के लोग, – भले और बुरे लोग मिल जायेंगे, कोई प्रकट रूप में दुष्ट है, कोई गुप्त रूप दुष्ट। इनकी कमी नहीं है। तब क्या इनके भय से संसार छोड़ देना होगा। नहीं – निर्भय होना है, संसार छोड़कर जंगल में जाकर तप करने वाला पलायन - करता है – वह संसार से विभक्त है, तब वह भक्त कैसा होगा। जो विभक्त है, वह भक्त नहीं हो सकता। तब क्या करना होगा, दुष्ट प्रवृत्तियों का निरोध करना होगा तब, कीचड़ में कमल की स्थिति होगी। ऐसा कैसे सम्भव होगा? यह अभ्यास -मात्र से ही संभव है।

'निर्बीज–समाधि' की स्थिति में जब साधक पहुंचता है, तब उस विषय का जानकार न होने पर डाक्टर कहता है, – मर गया। वह जो साधक सुषुप्त अवस्था में है, मर गया है। लेकिन वस्तुत: वह मरा नहीं है, सिद्धावस्था में साधक की जब यह स्थिति हो जाये तो २४ से ३६ घंटे रुकना चाहिए, बॉडी फूलने - अकड़ने लगती है, लेकिन उसे मृत्यु नहीं समझना चाहिए २४ से ३६ घंटे बाद ही उसकी अंतिम क्रिया करनी चाहिए।

हम विचार कर रहे थे, कि जब तक अहं है जन्म लेना होगा। इस 'अहं' को आत्म शक्ति से ही हटाया जाता है। आत्मा ही शक्ति है, कचरा साफ होने के बाद जब तक तुम सोये रहते हो जीव हो, सोये रहने तक ही जीवत्व है, – परवश हो। कहा भी गया है।

"परवश जीव स्ववश भगवंता"

अभ्यास करते करते, अन्तर्मुखी होकर साक्षी भाव से देखते जाइए, सब कुछ अपने आप होता चला जाता है एवं धीरे–धीरे–अहं भाव समाप्त हो जाता है, अहं के समाप्त होने पर निर्बीज समाधि की स्थिति प्राप्त होती है, और यहीं आत्म साक्षात्कार हो जाता है लेकिन संशय नहीं होना चाहिए, संशय आत्मा का विनाश करता है, कहा गया है

"संशय –आत्मा विनश्यति"

जब जीव जाता है, तो भोग समाप्त होता है तब वह अपने आपमें आकर स्थिर हो जाता है, इसी को सम्यक चरित्र कहा गया है। एवं सम्यक चरित्र की प्राप्ति मोक्ष है।

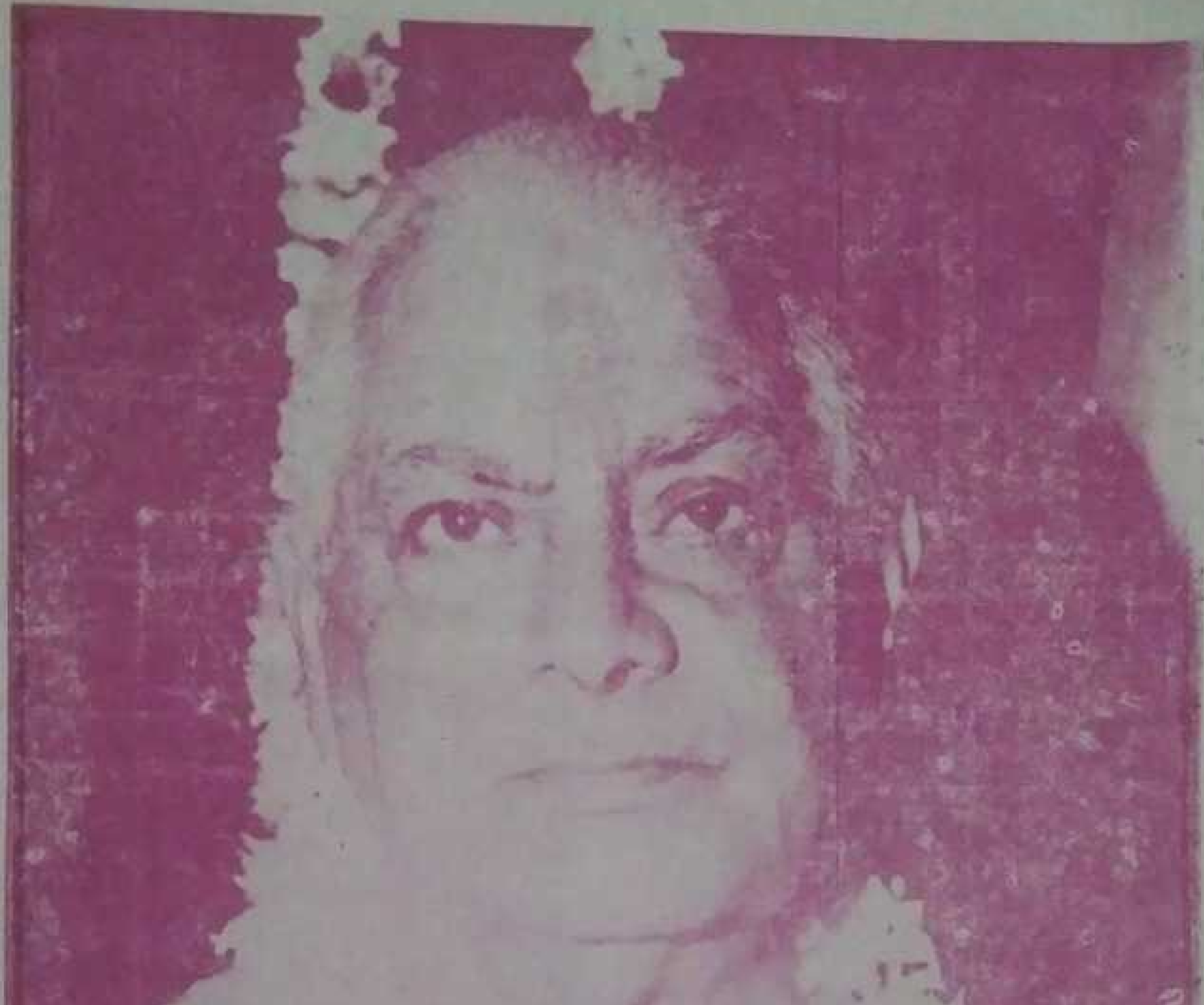

परम पूज्य गुरुजी

गुरु पुर्णिमा विलासपुर सन् १९८०

देह और देवालय

देह ही देवालय है, कहा भी गया है, मन्दिर मस्जिद, गिरजा और गुरुद्वारा केवल स्मारक ही हैं – देवताओं के लेकिन देह रूपी सजीव देवालय में आत्मा ही देव है। आत्मा - जो दिखती नहीं, वही निरंजन है, वह निरंजन तुम ही हो कहा भी गया है।

"देहो देवालयं प्रोक्तं"

जिस प्रकार बिना दर्पण के हम स्वयं को नहीं देख पाते वैसे ही बिना सद्गुरु के हम अपने आपको (अपने आत्मा को) नहीं देख पाते (नहीं जान पाते) वह सतगुरु अंजन लगाता है, उस अंजन के बिना अपने आपको जानने में हम समर्थ कहाँ हो पाते हैं ?

हम उसे (ईश्वर या परमात्मा) को देवताओं में, सन्तों के प्रवचन – कीर्तनों में ढूढ़ते हैं, लेकिन वह बस केवल कर्तव्य बोध है, यह पुस्तकों और ग्रंथों से ज्ञात नहीं होता है, यह गूढ़ तत्व ढूंढ़ने से नहीं मिलता, ऐसी दुर्लभ वस्तु दी जा रही है, स्वयं को खोजने की विधि भर ज्ञात हो जाये, फिर उसे अन्यत्र खोजना नहीं पड़ेगा।

कबीर ने कहा है —

"तेरा साई तुझ्झ में, ज्यों पुहुपन में बास"
कस्तूरी के मिरग ज्यो, फिर – फिर ढूंढे घास"

कहा गया, "स्व अक्ष – अग कुरु" अक्ष -- याने संशय है। स्व – अक्ष का संशय दूर हो जाता है, तो अपने आपमें आ जाता है वह स्थिर हो जाता है। इस स्थिरता को ही सम्मक चरित्र कहा गया है। कहा गया है :–

कि – सम्यक प्रदाय = सम्प्रदाय"
सम्यक से ही सम + प्रदाय है।

अर्थात सम्यक प्रदाय = याने ऐसा कुछ नियम और शिक्षण देना चाहिये, जिससे समाज में उचित परिवर्तन आ सकें। आज सम्प्रदाय के नाम पर लोगों में आपस में वैमनस्य लड़ाई - झगड़ा है। आज सम्प्रदाय के उद्देश्य की पूर्ति कोई नहीं करता न स्कूल न कालेज न मन्दिर मस्जिद न गिरजा – गुरुद्वारा। वे केवल जातिवाद की शिक्षा देते हैं – वह भी धर्म के नाम पर।

धर्म कोई जाति तो है नहीं धर्म शब्द भी इनके लिए अपना एक अलग अर्थ रखता है – सभी सम्प्रदायवादी इसकी व्याख्या अपने तरीके से करते है। कुछ सुबह उठना, निष्कर्म को ही धर्म कहते हैं, इसका हेतु क्या है। कितनी पीढ़ी बीत गई धर्म की वास्तव व्याख्या और मान्यताओं की ओर न हम गये न हमारे बाप दादे ले गये। धर्म के ये ठेकेदार दुकानदारी तक ही सीमित हो गये – व्यवसाय करते रहे। धन – दौलत खाने पीने की व्यवस्था तक ही धर्म की व्याख्या सीमित होकर रह गई है। आज की भाषा में यही धर्म है।

इसके लिए सम्प्रदाय ऐसा नियम और शिक्षण दें, जिससे हम सम्यक उद्देश्यों को, सामाजिक विकास को, प्राप्त कर सकें वह भी स्वाभाविक रूप से। आज ऐसा कहाँ हो पा रहा है।

हमारे अनुसार धर्म – धृ धातु से बना है धृ – धारयति = जिसने धारण किया (धारण करना चाहिए) या धारण कर लिया एवं म – महान याने महान् वह जो ब्रम्ह है, (All Mighty) – जिसका आदि अंत नहीं है। (अनन्त) म ने मकार, एवं मकार से तीन कर्म - उत्पन्न होना, अस्तित्व में रहना एवं लीन हो जाना अर्थात उदय वर्तमान एवं अस्त (यही ब्रम्ह है) (व्याकरण में मूल – 'म – कार' का अनुस्वार हुआ है और ये उदय, वर्तमान और अस्त – तीन गतिविधियां है, जिसमें वह मकार है)

यह 'मकार' बिन्दु स्वरूप है, (Full Stop) नासिक अनुस्वार का अर्थ हो सकता है? ओ३म् (ॐ)। ॐ यह स्वर निकलता है यह स्वर ही

महाशक्ति है, यह अनुच्चार्य है (इसका उच्चारण नहीं होता) सोना उठना, बैठना यह सब महाशक्ति द्वारा होते हैं। वह महाशक्ति ही शरीर के भीतर 'आत्मा' है। क ख ग घ ये ध्वनि संख्या जैसे – जैसे बढ़ती जाती है सीटी बन जाती है। सारे कार्य इस आत्मशक्ति (महाशक्ति) के द्वारा सम्पन्न होते हैं, यह महाशक्ति आत्मा ही वह बिन्दु है, जो आज्ञाचक्र में है। क ख ग घ की ध्वनि ही सीटी के रुप परिवर्तित होकर ॐ रुप में अभिव्यक्त होती है या अनभिव्यक्त रहती है। यह अखंड ध्वनि ॐ है, यह एकाक्षर ब्रम्ह है। अक्षर का पर्याय है ज्ञान। ज्ञानी वह जो इस आत्मज्ञान से सम्पन्न हो गये वस्तु जानता है, (और अपने ज्ञान द्वारा समाज कल्याण हेतु प्रस्तुत होता है) हम लोगों में से कितने इस तत्व पर चिंतन कर आपसी मनोमालिन्य को त्यागने तत्पर होते हैं, यह समय पर है।

मकार (अनुस्वार) की चार अवस्थाएँ हैं :— जागृत, स्वप्नावस्था, देह एवँ तुरीयावस्था इन चारों अवस्थाओं में जो समाज के कल्याण हेतु स्वाभाविक रुप से समर्पित है – वही ज्ञानी है। वही धर्मात्मा है, वही कह सकता है, कि वह धर्म को जानता है। अन्यथा विद्वेष फैलाना षडयन्त्र रचना धर्मों का उद्देश्य या तात्पर्य बिल्कुल नही है। उस आत्मा को धारण करना, (उसकी शक्ति को धारण करना) उससे सामाजिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त अपने आप जो होता चला जाता, यहाँ धर्म है, यही मानव मात्र की रक्षा में सक्षम होगा, ऐसा वैदिक शाश्वत और मेरा अपना निजी मत है – ऐसा ही मैंने समझा है।

उपरोक्त ज्ञान जब तक नहीं हैं, अपने अल्पज्ञान अल्पबुद्धि, अल्पशक्ति के कारण अपने को पहचानने की हमारी सीमा हैं, तब धर्म – चक्र कैसे चल सकता है। ज्ञानी ही अपने ज्ञान से विवेक से लोगों का भला बुरा समझता है और धारणा – शक्ति से युक्त हो जाता है। सुकरात का कथन है :—

ज्ञान ही धर्म है, अज्ञान ही पाप।

"Vertue is Kno Wledge, Ignnorance is Vice" अज्ञान ही भय का कारण है, भय मुक्त न होने के कारण ही लोग एक दूसरे के विरुद्ध अज्ञात – भय से प्रेरित हो दुष्चक्र में लगे रहते हैं, भय को दूर करने लिए मकार = (आत्मा) को धारण कर आत्मशक्ति को प्राप्त करना होगा, जब यह संकल्प लेकर हम अभ्यास करते हैं, तो सुषुम्ना का द्वार खुल जाता है, हम बाहर आने जाने (बहिर्मुखी होने) के बजाय अर्न्तमुखी हो जाते हैं। अभ्यास के माध्यम से साधक दिव्य सागर में स्नान करता है। – ऐसा योग्य सत्पुरुष के साथ = उसके मार्गदर्शन में अभ्यास करने से ही सम्भव है। इसके अभाव में हम 'दुर्बल' के लिए कोई स्थान नहीं है, उन्हें किसी प्रकार का सुख प्राप्त नहीं हो पाता। दुर्बलों को सभी सताते है। कहा गया हैं, दुर्बल देव घातक सतगुरु की सहायता से सेन्ट्रल केनाल खोलना है। हम इसे मुक्ति कहते हैं। इस सेन्ट्रल केनाल में घुसने के बाद ही स्थिरता अथवा शांति मिलती है।

धर्म याने आत्मा। – यह जो 'परम' है उसे ही 'परमात्मा' कहा गया, उस परमात्मा का साक्षात्कार इन दोनों में कोई भेद नहीं है, – एक ही है। यही साक्षात्कार ही मुक्ति कहलाती है। इस प्रकार का साक्षात्कार जिसने कर लिया समाज ने उसे कंधों पर उठाया है, वह सबका प्रिय हो जाता है, क्योंकि ज्ञानी पुरुष के माध्यम से आश्वासन मिलता है, सामाजिक परिवर्तन की दिशा में वह आशा का केन्द्र होता है, उससे समाज का वास्तविक कयालण संभव होने के कारण लोग उसे चाहने लगते है।

हमें समाज कल्याण के कार्य में भी लगना है जो बिना ज्ञान के सम्भव नही हमें यह नही भूलना चाहिए, कि समाज का हम पर बहुत बड़ा ऋण बहुत बड़ा उपकार है। यह उपकार एक दो नहीं कई है भले बुरे का ज्ञान, संस्कृति और शिक्षा, परम्पराएं और संस्कार साहित्य और कला मान और सम्मान बौद्धिक विकास यह सब उपलब्धि हमें समाज के समाज के एक घटक के रुप में प्राप्त हुई हैं, परिवार (माँ बाप)

तो केवल निमित्त मात्र हैं, वस्तुतः उपरोक्त अनुभव हम समाज से ही प्राप्त करते हैं। अतएव माँ-बाप के साथ ही समाज का ऋण जितना (जहां तक) बन सके चुकाते जाना है। समाज का ऋण दूर नहीं होता, लेकिन जहां तक हो सके उऋण होना है। मेरी दृष्टि में समाज सेवा अनिवार्य है। यह ऋण कैसे चुकाना है – मन, बुद्धि, द्रव्य तन जैसा जिस समय जिस रुप में बने चुकाते चलिए। निष्पक्ष भाव से (किसी के पक्ष में न रहकर) समाज की सेवा कीजिए यही धर्म का व्यवहारिक रुप है। जो दीन हैं, दुखी है-सड़े गले हैं उनकी सेवा करना साधुता है, साधना है। वह मन्दिर, मस्जिद, गिरजे में नहीं आपमें है, हम इसे समझ क्यों नहीं पाते। वासना या कामना रुपी धूल आत्मा रुपी मणि पर चढ़ गई हैं, इसे साफ करना होगा।

आप सब बड़े पुण्यात्मा हैं। क्यों? ऐसा नहीं सोचना है, अच्छे मार्ग में आइए आपकी जीविका आदि सभी कार्य होने लगते हैं। इस साधना (आत्म-तत्व की साधना) से बंधनों से। वासना से आप मुक्त होने लगते हैं, गीता में इसकी चर्चा है।

(सर्वधर्म परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज) और भी (योग क्षेम् वहाम्यहं) यह सब मैं यूं ही नहीं कहता हूं, स्वभाव है मेरा। अणिमा, गरिमा इत्यादि सिद्धियाँ सब तुममें है इस आत्मयोग से सब बलवान होते चले जाते हैं। मनुष्य स्वयं अपने नाश का कारण बनता है, यदि वह अज्ञानी बना रहना चाहे, सच्चे धर्म, सच्चे पुरुषार्थ एवं समाज से विमुख रहे। ग्रन्थ और किताब जहां समाप्त होते हैं वहां से अभ्यास प्रारंभ होता है, इसी से आत्मयोग सर्वश्रेष्ठ योग कहा गया है। पहला कदम तो रखो। कर के देखो।

(शेष पृष्ट ६ का)

मिलता है, कुंडलियां जग गई है वस्तुत कुंडलिनी सोई हुई नहीं रहती वह दबी हुई रहती है। कुंडलिनी के रुप में महाशक्ति मानव तन में भरी पड़ी है। साधना करने से वह 'आपा' अपना कार्य करती है। जो जो कार्य हैं अपने आप होते चले जाते हैं ऐसा तभी होता है जबकि सुषुम्ना मार्ग खुल जाये, ❀

-: गुरुजी उवाच :-

जिसको जितना आनंद हो रहा है, जितना लेना देना है, वो आप लेंगे, देंगे, लड़ाई लिए बिना, रागद्वेष रहित होकर, काम – क्रोध, लोभ, मोह से मुक्त होंगे, ऐसा कब होगा; जब आप सद्गुरु की बतलाई, पद्धति से ध्यान कर, Space में बैठ जायेंगे (स्थिरता को प्राप्त कर लेंगे)। यह स्थिति जब प्राप्त हो जाती है, भोग-कब आते हैं, कब जाते है, पता नहीं चलता, सब कुछ हम साक्ष्य भाव से भोगते चले जाते हैं।

❀

– अवस्थाएं –

संसार में कर्तव्य ही प्रमुख है, इसकी शुरुआत परिवार से ही होती हैं, फिर समाज, देश विश्व और अखिल ब्रम्हाण । पति-पत्नि लड़के बच्चे ये सब रिश्ते एक दूसरे के प्रति कर्तव्यों के लिए ही बनें हैं। सबके प्रति सबका कर्तव्य है, सब पिछले जन्म के साहूकार है, अपना अपना वसूलने आये हैं, इसलिए कोई अपना कर्तव्य करते हुये यह न सोचे कि वह किसी दूसरे के लिए कर रहा है। वस्तुतः वह अपना ऋण ही तो चुका रहा है। सेवा कोई क्या किसी की कर सकेगा, खिलाने पिलाने पढ़ाने लिखाने अपने पैरों में खड़ा करने के लिए माता पिता प्रयास करते हैं, इसका ध्यान रखना भी चाहिए आगे हर व्यक्ति अपने जन्म जन्मांतरों में बोये हुए को ही काटता है। सेवा का अहं न उत्पन्न हो इसलिए लाजिमी है ऐसा सोचना कि पिछले जन्मों का कर्ज है, जो चुकाया जा रहा है। भारतीय संस्कृति की ये मान्यतायें सत्य हैं।

हम सोचते हैं, हम बच्चे के लिए ये कर देंगे, वह कर देंगे। क्या कोई किसी लड़के का भविष्य जैसा वह चाहे बना लेता है। यदि ऐसा संभव होता तो सभी सफल हो जाते। बात दर असल यह है कि मां बाप अपना कर्तव्य करते हैं, भविष्य का बनना पूर्व जन्म के कर्मों का देना पाने पर निर्भर है, मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का विधाता होता है, अतएवं उसे सद्मार्ग में सत्कार्य में जैसा बने जितना शीघ्र बने लग जाना चाहिए तात्पर्य यह कि इस मार्ग में आने के पहले, अनेक जन्मों के पुण्य का उदय जब हो जाता है, तब उस ओर बुद्धि अग्रसर होती है।

ईश्वर है, ईश्वर है, यह मायोपाधि है, हमें केवल यहीं तक सीमित नहीं रहना हैं, इससे आगे योगमाया जिससे लोकिक एवं अलौकिक शक्तियां जुड़ी है उस शक्ति को जिसने प्राप्त किया है वह समर्थ है, शक्तिवान हैं ऐसा समर्थ व्यक्ति विनाश एवं पुर्ननिर्माण अष्टसिद्धियां नौ निधियों को प्राप्त कर लेता है। ये सब साधकों को प्राप्त हो जाती है।

जिसने धर्म को धारण किया है, बिन्दु मे मकार की साधना की है) सारे जगत को ही बिन्दुमय है समझना है)। वह इस मार्ग में आगे बढ़ता है। तो सबसे पहले हुआ धारणा का होना, फिर वह आत्म विज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखते है। यह आत्मदर्शन की ओर बढ़ने की पहली सीढ़ी है।

ईच्छा :- सर्वप्रथम इस मार्ग में आने की इच्छा उत्पन्न होने से ईच्छुक जहां तहां जाता है देवालयों या अन्य स्थानों में विज्ञान लोगों से गूढ़ तत्वों व अनसुलझे पहलुओं को पूछता है किताबी पंडित है ऐसा अनुभव प्राप्त होता है तब उसकी ईच्छा में और वृद्धि होती है तब उसे सद्गुरु की प्राप्त होती है। यह प्राथमिक अवस्था है। प्रथम स्तर है।

विचारणा :- द्वितीयतः वह विचार करता है कि क्या भला है क्या बुरा है क्या बंधन हैं क्या मुक्ति हैं, मुक्ति का मार्ग क्या है या क्या करने से मुक्ति मिलती है, जो सुनता है, उस पर विचार करता है, मालूम नहीं ऐसा कहते हुए हमने कैसे कैसे कर्म किए पिछला अगला पर विचार कर उसे आचरण में लाता है, सद्गुरु की प्राप्ति के बाद वह आगे बढ़ता है।

तवमानसा :- इस अवस्था में अभ्यास करता करता है, नहीं भी करता, जैसे भीतर वैसे बाहर, माया है यह मायोपाधि है संस्कार दिखता है वर्णों में आता है मन में साधक सोचता है हमारा कहां तक बढ़ा कहां तक हम सफल हुए, क्या स्थिति है। मन में यह विचार करता है हम बुरे है बन्द कर देना चाहिए, पारिवारिक सामाजिक ऋण में से उऋण होता चला जाता है संपत्ति के बोझ से छुटकारा पाना चाहता है, अपनी संपत्ति अर्पित करने के लिए तैय्यार रहता है, ऐसी स्थिति में मौन आ जाना चाहिए सद्गुरु से मिला चचा-नरती आ जाती है।

अपनी मानसिकता में परिवर्तन के फलस्वरूप

साधक यह सोचने - विचारने लगता है, किसका यह परिवार कैसा ये परिवार कोई किसी का नहीं है । — यह सत्य है कि परिजन जो कुछ ऋण हमारे संस्कारों में है, उसे वसूल करने हैं । ऐसे भावों को हृदयंगम कर वह अपने कर्तव्यों को करता चला जाता है, उसके ऋण से उऋण होता चला जाता है । सद्गुरु मिलनेसे तरक्की करता है, चाल में मस्ती आ जाती है ।

सत्वापत्ति :— यह चतुर्थ अवस्था कही जा सकती है — इतना ही मेरा है, बनाएगा नहीं, घुसखोरी नहीं करेगा, खुद का जो भी जितना भी है, लेना - देना वह सब होता चला जाता है ऐसी अवस्था में वह किसी से लेगा नहीं, वरन अपने पास से देगा - ऐसी प्रवृति होती चली जाती है, यहाँ से चरित्र बनता है । इससे पूर्व 'माया' है । माया क्या है — शंकर, विष्णु एवं ब्रम्हा का प्रतीक है । पूर्व की जितनी भी उप-लब्धियाँ हैं, वे जो पद उपाधियाँ देखी जाती है, वह 'मायोपाधि' है । उनसे निकलने पर - उबरने पर सत्वगुण की वृद्धि के फलस्वरुप साधक सतोगुणी होता चला जाता है । हम ब्रम्हा, विष्णु, महेश को ही अन्तिम सत्ता समझेंगे तो आगे उन्नति कैसे होगी, इनके भी गुरु हैं, ऐसा गुरु जो सबका गुरु है, वह इनका भी गुरु है । इस स्थिति से उबरने का एक मार्ग है, सतत अभ्यास तब सद्गुरु की कृपा से अधिक आगे की अवस्थाओं में पहुंचता है ।

धूतपाप :— यह पँचमावस्था 'अवधूत' की अवस्था है, 'अवधूत' वासना रहित होता है यह अवधूत वही है जिसे उर्दू में वली भी कहते है । यह समाधि की अवस्था है । यह सब का और अपना कल्याण करता है ।

हंसावस्था - यह अवस्था पुनः उन्नति (निरंतर उन्नति) से प्राप्त अवस्था है । साधक को ऐसा लगता है— 'मर जाऊंगा बचाओ' अनुभूति होती है कि कोई काम नहीं आता, काल आता है, फंदा डालता है, Till Death (बाबा बतलाना कहां कहां लेना देना है,सब उसे छोड़ देते है, कोई काम नहीं आते, साधक निरंतर साधना से ऊपर चला गया, इस अवस्था से भी आगे । दूध में कितना पानी है— पानी में कितना दूध है, यह जानने लगता है । और भूत भविष्य वर्तमान भी ।

तुरीयावस्था :— इसमें यह बोध हो जाता है, जो योग्य है,जो कुछ मिलता है, कर्तव्य पालन करता चला जाता है, तब वह एकनिष्ठ हो पाता है । तब वह साक्षी भाव से निष्पक्ष और निरपेक्ष होता चला जाता है । (उससे) समाज का भला करता है । समाज भी उसका भला करता है । समाज के काम का हो जाता है समाज का लेना देना प्रारंभ में बनता है, तुरीयावस्था में आने के बाद नहीं बनता ।

आप लोगों की आयु है, राधेश्याम करने से नही बनता (सच्चा पुरुषार्थ करो) लेकिन हम लगे हुए है, जो कुछ हमें आता है, उसे बेचने में तब कल्याण कैसे हो ? तुलसी ने युग प्रभाव की चर्चा की है ।

"बेचहि वेद धर्म गृह लेही ।
" ज्ञान को बेचते हैं, तो समाज का हित कैसे हो ।

सप्तमावस्था :— यही Above Time & Space की अवस्था होती है यह बिना सद्गुरु के प्राप्त नहीं होता, साधना का अमृत पियो उसे पचाओ परन्तु गिरो मत, सुषुम्ना खुलने के बाद फिर कर्मफल नहीं बनता, आगे बढ़ता है, गिरना नही है । इस अवस्था में पहुंचना स्थिति में अन्तर प्राप्त करना है, फिर अवमूल्यन नहीं होता, परमोत्कर्ष के लिए ये स्थितियां आवश्यक है । 'तस्यापि निरोधे' (अर्थात् उससे भी आगे निरोध करने पर बढ़ने पर) जिस समाधि की अवस्था प्राप्त होती है, वह उन्नत स्थिति है, जबकि एक भी संस्कार नही रह जाते, बुद्धि तब प्रकृति में, एवं प्रकृति पुरुष में लीन हो जाती है, यही मोक्ष है ।

गीता में, योगदर्शन के आधार पर
" संजात् संजयः कामः

इन सब बातों को समझकर कार्य करें - समाज में दुष्टों का संग पहले होता है सुसंगति तो सन्तों के पास ही प्राप्त हो सकती है । जो योगी है, ध्यानी है, उनकी संगत से समाज का लाभ होता है, समाज के प्रति ऋण चुकता है ।

संसर्ग से ही गुण एवं दोष दोनों होते है ।

– वेदान्त और व्यवहार –

'वेदान्त' ? या तत्व ? ऊहापोह बना रहता है, (कई साधकों के मन में) वस्तुतः, संसार, वेन्दात और व्यवहार के ताने बाने में ही सरक रहा है या संसार उसका ही ताना बाना है – कहिए। इस ताने बाने से कहीं दूर नहीं जाना है। इसमें रहकर ही आगे के मार्ग की तैयारी करनी है और साधनारत रहना है। यही सहज–साधना है। ऐसे सहज साधना के अनुयायी ही थे – रामानुजाचार्य।

सबके अपने कर्म हैं, व्यापार है प्रसंगवश वे कर्म या व्यापार सामने आते जाते है, उन्हें उसी भांति लेना है, उनमें रहकर भी लिप्त नहीं होना है। (न आना है – न जाना है – न घूमना है – न फिरना है) यह सब इसलिए कि आत्मा आती जाती कहीं नहीं। न, ही खाती पीती। अतएव आने जाने खाने पीने का कार्य शरीर करता है। शरीर को ही आत्मा मान लेने ही आने–जाने–खाने–पीने–दौड़–भाग की बात कर सकते हैं, अन्यथा शरीर यह सब कार्य करता है – आत्मा नहीं। आत्मज्ञान हो जाने से वे सांसारिक कार्य और उनसे सम्बन्धित चिंतायें दूर हो जाती हैं। आत्म ही सबसे प्रिय हो जाता है। साधक आत्मा की ही वाणी सुनता है, वही करता है। अतएव आत्म प्रेरणा से आगे बढ़ना चाहिए। ऐसा करने से साधक लौकिक और अलौकिक दोनों क्षेत्रों में निष्णात् होता चला जाता है। भय से दूर होकर निर्भय हो जाता है, चिंता मुक्त होइए, सद्गुरु के ऊपर सबकुछ छोड़ दीजिए, (कर्तापन के अहं को छोड़िए)।

यह आत्मसाक्षात्कार रूपी ज्ञान ही सभी के लिए अनिवार्य एवं स्वाभाविक है। अधिक समय इसके लिए नहीं दे सकते तो न सही। 5 मिनट या 10 मिनट इसके लिए पर्याप्त हैं, इतने से ही साधक अपने आपको पहचान लेता है। जिसने अपने आपको पहचान लिया नहीं पहचान सका। या जिसे हम सूफी कहते हैं वह ही मिट जाता है। व्यक्ति यदि चाहे कभी इसे यह किया प्राप्त होती है, किन्तु बिन मरा (या मरे)

उनका कार्य हो गया, वे प्रतिक्षण अपना काम ... पा रहे हैं जिन्हें नहीं मिला वे बिना कुछ किए ... सोचे समझे स्वयं ही किंकर्तव्यविमूढ़ प्रतिक्षण ... जाल में समा जाने के लिए बढ़ रहे हैं। इसे ...

हमारे लिए वेदान्त और व्यवहार दोनों में ... अंतर नहीं है। अंतर केवल अपने को निर्देशित ... में, जीवन क्षेत्र में, इसे Apply करने (अमल ...) से है। व्यवहार क्या है ? – देखने में आया कि ... कहीं गये, मिलने के लिए, स्वागत करता है, बैठता ... इस बीच जब आप उनसे चर्चा करना चाहते हैं, कि... आपसे समय लेकर वह अन्य किसी से बातचीत प्रारं... कर देता है; आप उनसे बोलना चाहते हैं, पर बीच ... बोल नहीं सकते क्योंकि दो के बीच बोलने वाला मू... है।

कभी ऐसा होता है, कि उसके घर के हित ... लिए उससे कुछ कहा जाता है, लेकिन व्यस्त होने ... कारण, फुरसत न होने के कारण, नाना प्रकार ... विषय – झंझटों में घिरे रहने के कारण (उसके) ... में क्या कहा जा रहा है। वह इस पर ध्यान नहीं ... पाता। व्यक्ति आज व्यवहार में इसी प्रकार ... होता चला जा रहा है। उसके हित में कोई बात ... जाती है, तब वह सुनी अनसुनी कर देता है। ... रहकर भी जिससे कुछ कहा जा रहा है, वह नहीं ... पाया, यह क्या है ? यही व्यवहार है। इस व्यक्ति ... Neglect कर देना, जो काम का नहीं है, उसे ... देना, जो काम का हो उसे collect करना ... यह है। आत्मा रूपी सूर्य से दूर होकर यह ... –कुशलता नहीं आ सकती।

मन, बुद्धि, चित्त अहं आदि की धारणा ही ... बोधन है। इन सबको धारण कर एवं ... से बचते हुए, नाना प्रकार के विचारों का ... सीखते हुए, आगे बढ़ते हैं, लेकिन क्या ... इसे निश्चित करते समय या एक को ...

चाहिए। विद्वान जन्मना शूद्र हो तो भी ब्राह्मण है शूद्र या भंगी ब्राह्मण या विप्र जन्मना कोई नहीं होते, चाहे जो कोई हो यदि विद्वान है तो उससेमिलना चाहिए, न जानेकिस क्षण किससे कौन सा ज्ञानप्राप्त हो जाये। हम जाति पर विश्वास न करें, यहां जातिगत कोई भेद नहीं हैं। अपने को सच्चा और दूसरों को कच्चा बताने की अपेक्षा विद्या से कला से उनके जानने वालों से प्रेम करें।

हमें विषय से प्रेम नहीं होता। जो विषय से प्रेम करते हैं, विषयाधीन हो जाते हैं, कामनी और कंचन में कामना व्यस्त होती चली जाती है। साधना को विषयासक्त होने के कारण टालते चलते हैं, जीवन त्रासमय हो जाता है, जीवन में फुरसत नहीं है – ऐसा कहने के साथ–२ वह आत्मविद्या से आत्मा रुपी सूर्य से दूर होता चला जाता है। इन स्थितियों से सावधान = (याने) अवधान पूर्ण रहना चाहिए। अवधान पूर्ण का अर्थ है सदैव तत्पर। इसका तात्पर्य यह है कि समझ बूझ कर कार्य करो, व्यवहार में निष्णात हो, यह नहीं कि तुम्हारे हित की बात हो रही है, फिर भी उठकर चले 'या चल दिए। अब जिस बंधन में पड़ रहे हो समझ लो किस ओर जा रहे हो। अन अवधानपूर्ण व्यवहार करने से हम त्रस्त होकर, दुखी होकर दलदल में फसे हैं।

आत्मा महान है। आत्मा के योग से बुद्धि तीक्ष्ण होती चली जाती है। यही बुद्धि आत्मा के योग से सूक्ष्मतर होती जाती है, बुद्धि की सूक्ष्मता की सीमा ही साक्षात्कार है। आत्मा का ही क्यों किसी भी विषय का साक्षात्कार इसी तरीके से सम्भव है। हर वस्तु के रहस्य को जान लेना इसे (बुद्धि को) पैनी करने, तेज करने से सम्बन्धित है। यह अवधानपूर्वक होना चाहिए। अव = बोधने, धा = धारणे। हमारा ज्ञान बना रहे मिलने वाला आनंद शास्वत रुप से मिलता ही रहे, इसलिए, इस बोध में आकर आत्मस्थ रहकर व्यवहार एवं वेदान्त दोनों करते चला जाने वाला ही सच्चा वेदान्ती और सच्चा व्यवहारिक है।

गीता में है – योगस्थ (आत्मस्थ) कुरु कर्माणि व्यवहार = वि+अव+ह = अर्थात विशेष प्रकार से आपकी भाषा, कुशलता; का बोध होते हुए उसकी प्राप्ति एवं अपना काम आपके द्वारा (अपने द्वारा) करा लेना ही व्यवहार है एक बात और ध्यान में रखना चाहिए, कि इस व्यवहार के लिए, कूद-फांद की जरुरत नहीं है। आत्मा स्वयं बोध है, अतएव आत्मस्थ रह कर ही सारे संसार का व्यवहार हो जाता है।

वेद = ज्ञान। वेद कहा है ज्ञान को। इसके अतिरिक्त कोई ज्ञान नहीं। अर्थात जिस शास्वत ज्ञान को प्राप्त करने के बाद कोई अन्य ज्ञान प्राप्त करना शेष न रह जाए, वही वेद है। और ऐसे ज्ञान की चरम सीमा जिसके आगे जाना कुछ भी शेष नहीं रहा, वही वेदान्त कहा गया। वह ज्ञान कौन सा है; परम-सत्ता (आत्मसत्ता) का ज्ञान। ध्यान रहे कि मन–वचन–कर्म से किसी को आघात न हो इस बात को ध्यान में रखकर जो कर्म किया जाता है वह कर्म मुक्ति प्रदान करती है - इसी को कहा गया गया —

"सा विद्याया विमुक्तये"। सत्वगुण या सतो–गुण से मुक्त होकर मुक्त होने के लिए इस अर्थ में वेदान्त और व्यवहार का जानना आवश्यक ही तो है ?

कभी–कभी साधक मन अवसाद में डूब जाता है– कि मेरा जीवन इतना दुखःमय है, दुख से इतना कातर हो या है, घृणा शंका, भय, लज्जा, निंदा, स्तुति और तज्जन्य अवसाद से भरा है – ऐसा व्यक्ति सोचने लगता है। द्वेष, घृणा, शोक, भय लज्जा, निंदा, स्तुति और अज्ञान ये आठ प्रकार के दोष कहे गये हैं।

इन दोषों को मार्ग में साधक नहीं बाधक सम–झना चाहिए, इनके कारण ही साथ देना तो दूर, बोलने देखने, सुनने (सत्संग) का समय भी हम नहीं निकाल पाते। अवधान में रहा, (काल चक्र घूम रहा है) एक सेकेंड बाद ही क्या होगा, यह कौन जान सकता है ? जब हाथ का अवसर निकलने लगता है, तो पछताते हैं। "अब पछताए होत क्या - - - - जब चिड़िया चुग गई खेत।" –अर्थात जब करना चाहिए तब कुछ नहीं

किया, बाद में पश्चाताप होता है, तब समय नहीं रह जाता ।

सुख दुख का फल जो होना है, उस पर ध्यान नहीं देना चाहिए । हानि–लाभ को बराबर रखकर कर्म कर । हानि, लाभ, मान–ज्ञान और स्तुति–दान सब समान हैं, बिना शत्रु उत्पन्न किए, किसी को उद्विग्न किए बिना इसे समभाव (समत्वभाव से) से देखना चाहिए । गीता में "सन्नं चक्रात व धनजय ।" (सुख–दुख का ध्यान नहीं रखने, सब पूर्व नियोजित है, कहा गया है) अतएव सिद्धि असिद्धि हानि लाभ बराबर करके कार्य करो । यही व्यवहार है । वेदान्त और व्यवहार एक सिक्के के दो बाजू हैं, मन, बुद्धि, अहं, चित्त से आत्मा में बने रहना है तभी हम आदर्श होंगे-हमारा यह समाज आदर्श होगा । आशा दुख का कारण है, मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा नाती पंती व्यवहार सब कुछ किसी का है । शुद्ध हो गये तो आत्मशुद्धि के बाद व्यवहार करना जरुरी है व्यवहार करना चाहिए आत्मस्थ रहकर करना चाहिए, यथायोग्य । कोई भी आपसे रुठे नहीं। मन–वचन क्रम से व्यवहार करना व्यवहार है । वेदान्त में तन मन धन इन तीनों का समर्पण कर देना उचित कहा गया है । सद्गुरु कर्म धन को लेता नहीं वह केवल मन को लेता है । ये सब सद्गुरु का है, ऐसी भावना जिस दिन, जिसक्षण आ गई उसी दिन से आप मुक्त हैं । लेकिन आशा गई नहीं –तब चक्कर कैसे मिटेगा, जहां मन होगा वहीं तन और धन होगा । यदि मन, विषय और कामना के पीछे दौड़ रहा है, तो कार्य सिद्ध कैसे हो, निश्चि कैसे हों ?

- गुरुजी उवाच -

आप लोगों को प्रतिनिधि होकर, इन कार्यों को करना है, (क्योंकि मन तो पूर्ण रुप से गुरुजी को समर्पित कर दिया है) और किसी कार्य को करने या भोगने से गुरु जी ने सद्गुरु ने मना तो किया नहीं है । जीवन में आनेवाले सुख दुख, एवं कर्म में लगे रहने की आवश्यकता है । कर्म से अवकाश या काम से फुरसत मिलते ही पुनः गुरुजी का ध्यान आना चाहिए ।

बढ़े जाओ । साधना मार्ग में । ऐसी स्थिति जो बतलाई गई प्राप्त करना ही उत्तमा–सहजावस्था है २४ घंटे कहीं भी आये गये गये काम कर लिए, यह तो भोगना ही ,है लेकिन इसमें मन बाधा डालने का कार्य करना है । गुरुजी का आदेश है, इसे छोड़ना नहीं है – ऐसा याद रखना चाहिए ।

– आज्ञा - चक्र –

जो सत्य मुझे मिला, वही मैने दीक्षा के रुप में मैने दिया । अब आपकी क्या स्थिति होती है ? यह प्रत्येक जातक की अपनी अलग – २ अनुभूति है । अनुभूतियों पर निर्भर है । इसमें किसी अन्य का कोई उत्तरदायित्व नहीं । इस मार्ग में मस्ती है आनन्द है· जो लोग मस्ती के लिए आनन्द के लिए नशा करते हैं, वह कृत्रिम है, बाह्य है, इस मार्ग में मस्त रहने वाला बिना शराब पिये ही मस्त रहता है । लोगों को यह प्राप्त हुआ हैं, इसी जन्म में प्राप्त हुआ है । धैर्य धारण करना चाहिए, यह प्रत्येक व्यक्ति में प्रत्येक परिवार में अलग–अलग है । सभी परिवारु में धैर्य नहीं है । सुनने में बड़ा मीठा लगता है, बड़ा आनंद आता है, (लेकिन करने में) । तात्पर्य यह कि सुनो ! फिर धैर्यपूर्वक आचरण करो ।

इस मार्ग में जो कुछ प्राप्त होता है, लोग गृहस्थ जीवन में इसे प्राप्त करते हैं कर रहे हैं । गृहस्थ लोग इसे प्राप्त नहीं कर सकते – ऐसी बात है ही नहीं । चौथा आश्रम तो शंकराचार्य ने चलाया । इसे सन्यास आश्रम का नाम दिया । १४ वीं व १६ वीं शताब्दी के बीच अनेक ऐसे सन्त हुए जो बाल बच्चे–दार थे, गृहस्थ थे । उन्होंने गृहस्थ रहकर आत्मकल्याण और दूसरों का कल्याण किया । इसलिए इस आत्मपद आत्मज्योति को प्राप्त करने वाले सभी क्षेत्रों के सभी प्रकार की अनुभूतियां वाले हो गये है । कहने का तात्पर्य यह है, कि मुक्ति के लिए घर – परिवार से बाहर जाने, जंगल जाने की आवश्यकता नहीं हैं । गृहस्थ रहकर भी लोग मुक्त हैं ।

नशे को पचाओ (साधना में जो मिलता है. उसे आत्मसात करो) पचाना आ गया तो सारी शक्तियाँ मिल जाती हैं । नहीं तो यह भी होता हैं, कि शक्तियां नही भी मिलती हैं, घर घाट का कहीं का नहीं रह जाता - घर वाले भी छोड़ देते हैं । अन्यथा साधना की शक्तियों को आत्मसात करते चलना चाहिए, जो शक्तियां प्राप्त होती हैं वे कौन सी शक्तियाँ हैं ।

प्रातिभ (याने प्रतिभा) / श्रावण / वेदना / आदर्श / आस्वाद / वार्ता / ये छह शक्तियां मिल जायेंगी । ये छह शक्तियाँ मिल जाती है, धैर्यपूर्वक साधना द्वारा ये प्राप्य हैं ।

इन शक्तियों को प्राप्त कर, जानने के अहंकार से बचना चाहिए । एक ऐसी स्थिति में पहुंचना है, जहां से वाणी टकराकर वापस आ जाती है, ऋद्धि के चक्कर में नहीं पड़ना है । ये जो विद्याएं मिली हैं, मिलती जाती हैं जो जिस उद्देश्य से आया है, वह बनता चला जाता है । भाग्य की गठरी अपने आप पूरी हो जाती है । अतएवं सिद्धियों के फेर में पड़े बिना आगे बढ़ते जाना ही उचित है । सिद्धि असिद्धि हानि, लाभ को समान समझो ये तो भोग है, पचना है, पाप कर्म करते करते ।

रोते क्यों हो संयम करो, और जितना मिला उसे पचाओ और तब आगे बढो, जितना इस मार्ग में मिलता है, वह जाता नहीं बना रहता है, हालत और अच्छी हो जाती है । यह जो आत्म ज्योति हैं, वह ही कल्पतरु है–सब ऋद्धियां सिद्धियां इससे सम्भव हैं, जिन्होंने अभ्यास करके ज्योति दर्शन पाया, उन्होने जो मांगा उन्हें वही मिला, जैसा मांगो मिलता है । आजकल पुजा–पाठ, पुरोहित और उनके कर्म व्यर्थ प्रतीत होते हैं । हर बात फायदा नुकसान पर आधारित हो गया है । वस्तुतः वे व्यय नहीं है, व्यर्थ केवल इतना है, कि वास्तविक पद्यति उन्हें मालूम नहीं (जब तक ग्रंथों में लिखी बातों को आत्मशक्ति से विहीन व्यक्ति द्वारा सम्पन्न कराया जाएगा, अपेक्षित परिणाम नहीं निकलेंगे)

मोह से दूर होने का मतलब यह नही कि सब कुछ छोड़कर भाग जाएं – जंगल कहां है ? यह सम्पूर्ण परिवार समाज देश जाति विश्व यही ब्रम्हवन

है। इसी ब्रम्हवन में साधना करनी है, छोड़ कर पलायनवादी की तरह भागना नहीं है। यह मत कहिए, कि ये मेरा पुत्र, पत्नी, भाई, बन्धु, जितने भी नाते रिश्ते हैं, ये मेरे नहीं है। इनके साथ व्यवहार की जो भूमिका आपको इस मनुष्य तन में मिली है, उनका निर्वाह तो करना है बिना निर्वाह के निवृति कैसे होगी, प्रवृति होकर ही निवृति का लाभ उठाया जा सकता है। लेकिन यह होगा कैसे। लाभ हानि पर ध्यान न देकर उसे बराबर करके बराबर समझकर, निरपेक्ष भाव से कर्तव्य कीजिए। जगत में रहना हैं, घर में रहना है, नही रहकर भी रहना है, न कोई स्त्री है, न पुरुष, न बेटा है, बेटी। सब ही आत्माएं हैं। ऐसी धारणा ही समत्व योग कहलाती है। न नीच है न ऊंच, न ही कोई भेद है, न ही कोई बंधन। इसे ही समत्व कहा गया। "समत्वँ योग उच्चते"

यही छठवी भूमिका की अनुभूति होती है, यही आज्ञा – चक्र है।

वैज्ञानिक जिसे मष्तिष्क या (Brain) कहते हैं, वही कल्पतरु है। आत्मा की जो ज्योति दिखती है वह कहाँ है? आपने किसी बच्चे का तालू देखा होगा, इस तालू के नीचे एक ग्रन्थि (ग्लेंड) है, वही आंख है, तीसरी आँख। साधक जब साधना करता है, तो आत्मा इसी तीसरी आंख में पहुंचती है-तालू बंद हो जाता है। इस तीसरी आंख के भीतर एक प्रकाश (Light] है। यह प्रकाश बाहर से या बाहर दिखने वाला प्रकाश नहीं है लाइट प्रकाश भीतर ही भीतर दिखलाई पड़ती है। दो आंखों से (सामान्य आंखों से) जो अनुभूति होती है, वह सब बाह्य अनुभूतियां हैं। तीसरी आंख इनसे भिन्न ही है। इस तीसरी आंख या आज्ञा चक्र को गोलोक, ब्रम्हरंध्र, बैकुण्ड, शक्तिपीठ, कैलाश सांकेत या निराम्बुज कहा गया है। यहां पहुंचकर मनुष्य निर्मल हो जाता है। सदा के लिए निर्मल हो जाता है, मल रहित हो जाता है। इस स्थिति में अपवित्रता विनष्ट होकर पवित्रता प्रविष्ट हो जाती है। इसे ही पुन्डरीकाँक्ष = पुंडरीक + अक्ष (गुरु का नेत्र) या (गुरु चक्र) कहा गया।

ॐ अपवित्र: पवित्रों वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा म: स्मरेत, पुन्डरीकाक्षं स: बाह्याभ्यान्तर शुचि।"

ये शुचि: ही पवित्र होना है। तभी आ... आत्मस्थ होता है, स्थिरता प्राप्त करता है।

यह आज्ञाचक्र लुम्बक की तरह लटकता... पीनिय बॉडी (या ग्लैंड) पर आत्म ज्योति ... फोकस होता हैं, उस फोकस में (दिव्य प्रकाश में) साधक भीतर ही भीतर देखने लगता है (अनुभ... करने लगता है)। यह फोकस अन्दर ही अन्दर फैल... इस प्रकाश की ज्योति में मनुष्य अन्दर बाह... (तात्पर्य – आंतरिक एवं बाह्य परिवर्तनों, घटना... क्रमों को देखता है – साक्षी भाव से) आज्ञा च... की यह अवस्था है; इसे पचाना (आत्मसात करना) है। अंदर – बाहर, अँदर – बाहर बने रहो।

लेकिन आप समाज में आज देखिए आत्मज्ञान... शून्य सब भाग रहे हैं. विभक्त नहीं होना हैं, ... विभक्त है, वह भक्त कैसा, ऋण कैसे चुकेगा। इ... मार्ग में आने पर भोग समाप्त होने पर शरीर ज... पार्थिव होता है, तो साधक दिव्य – मार्ग या ज्योति मार्ग से जायेंगे किन लोकों से होकर?

आकाश / अग्नि / विद्युत / इद्रलोक / प्रज प... एवं फिर सत्यलोक।

लेकिन यह एक दो दिन की बात नहीं हजार साल की प्रक्रिया है, इतने लोकों में घूमते – घामते अपना कर्तव्य करते ऋण चुकाते भोग करते निकलते चले जाते हैं, ये ही सिद्ध हैं। अन्यथा यमदूत आयेंगे, यमलोक ले जाकर विभिन्न प्रकार की योनियों में भेज देते हैं, वहां निर्णय होने के बाद जीव की जो गतियां हैं – वे प्रसंगेत्तर और सब्लिष्ट हैं।

ज्ञान पहले योगियों तक ही समझा जाता था, अब इसे Medical Scientist और Neuro Surgeor में मानने प्रमाणित करने लगे हैं। जिनकी सुषुम्ना खुल जाती है, खुल गई है, वह समझिए या जानिए कि वैतरणी तर गये, उनकी तीन पीढ़ी तर ग... तीसरी पीढ़ी में ज्यों के त्यों और चौथी पीढ़ी आ जाने पर पुन: वही हो जाता है – इसे ही आदि नाड़ी, मध्य नाड़ी अंत्य नाड़ी कहा गया, ज्योतिष इन बातों को स... कर कार्य करें, तो हो उनका कथन ब्रम्हवाक्य होगा।

ज्योतिष का तात्पर्य है, ज्योति का ईष्ट होना, ज्योति में देखकर। वह सब जाने बगैर ब्रम्हवात्र जनार्दनम् कैसे होगा?

– कर्तव्य –

'बोया पेड़ बबूल का' आत्मकल्याण के लिए पहले कभी जिन्होंने कार्य नहीं किया वे 'आत्मा' कैसे प्राप्त कर सकते हैं आत्म पशु में, दीक्षा, आत्मा स्वरुप को पहचानने के लिए होती हैं। इस मार्ग में आने वाला, जैसा करता हैं, बोलता है, उसे यह समझना चाहिए कि यह आत्मा की खेती है, जो बोते हैं वह काटेंगे, यहाँ जो इस मार्ग में देते है, वह चक्रवृद्धि ब्याज सहित प्राप्त करेंगे। वही मिलेगा, आप मेरी, हमारी नहीं अपने आपकी सेवा करते हैं। कोई भी यह न समझे की वह दूसरों के लिए कर रहा है, कर रहा है, वह सबकुछ जिसे हम दूसरों के लिए समझते हैं, वह हमारे लिए है, कोई किसी की क्या अपनी ही सेवा करले, अपना ही कल्याण कर ले, यही बहुत है, हम जब यह समझते हैं हमने दूसरों की सेवा की, तब अहं के वशीभूत हो जाते हैं, इस अहं से बचो। सब अपनी सेवा करते है। जो बोयेंगे वो ही काटेंगे-काटेंगे कि नहीं ? सब अपनी सेवा करते है, यही वेदान्त है। जहां तक हो प्रयास करें–, 'यह क्रोध न आये' क्रोध की शक्ति कोसहन शक्ति में बदलना है–यह प्रयाससेअभ्यास से सम्भव है। गन्दी बातें, गन्दे विचार किसी के सुनने में न आयें। इसे ही तप कहते हैं, यह तपस्या साधारण बात नहीं है। जँगल में तो कोई भी कर लेगा, समाज में अपना काम करते हुए आपने सेवा कार्य किया ? – यही व्यवहार है, पहले जमा करो सेवा करो, फिर भुनाओ। समाज में-व्यवहार केदोनोपहलू(दोनो बाजू) जिसे प्रेम एवं सत्य कहना चाहिए, उस पर चलो, करके दिखाओं – आचरण में जब सेवा होगी, तब उस सेवा को भुनाओ। हमें ये दोनो बाजू चाहिए, प्रेम और सत्य दोनो इसीसे समाज में हम साफ-सुथरे होंगे यही वास्तविक शुद्धि है, – अँतःकरण की शुद्धि इसे प्राप्त करना है। रामकृष्ण हुए समाज में रहकर, तप करके मुक्त हुए, यहकब होता है, सुषुम्ना के द्वार खुलने के पश्चात होता है। जिनके द्वार खुलेवह मुक्त हो गया।

'ॐ अग्नि,' यही अग्नि है, अयं आत्मा स्वयं ज्योतिर्मय इस अग्नि को धारण करने, इसके उदीयमान होने के बाद सम्भलकर रहने की आवश्यकता होती है, अन्यथा जो हम कहते करते हैं वह सब भोगने आना पड़ेगा, जो भोगना है। अभी भोग लो, यह मै वेद के आधार से कहता हूं, दूसरी ओर जिनकी सुषुम्ना खुली नहीं है वे नारायण नारायण (कामिनी कांचन) में पड़े हुए है।

तात्पर्य यह कि मधुर वाणी बोलो, जितना मिले उतने में संतोष करो, चुपचाप मौन रहकर देखो जाइए कि साधना से क्या क्या होता है। मान-अपमान आते जाते रहते है। पैसा कोई ऐसा नहीं जिसके पीछे हम भागते फिरे ऐसी सब बातें साधक को समझ में आपसे आप आने लगती है — कब, निरंतर अभ्यास करने पर। उस अभ्यास से जो लाइट (Light) या प्रकाश मिलता है, उसमें संस्कारों के काजल धुलते चले जाते हैं इस विद्या को जानने वालों का कल्याण हो रहा है, यद्यपि वह कहता है, मै नहीं जानता, इसी से वह जानता है। उसके लिए यमलोक समाप्त हो चुका है, वह यम की त्रासदी से बच गया, यह ज्योति जब दिखती है, तो जो विकास उर्ध्वगामी ही होता है। इसे प्राप्त करने के बाद हम अधीर न हों।

सत्य बोलो, प्रिय बोलो। अप्रिय सत्य न बोलना ही अच्छा है, जिस सत्य से हानि हो, आघात हो, वह पापकर्म हो जाएगा, ऐसे पापकर्म से बचना है। इस मार्ग में चलने वाले मैं "पापकर्म से बचता हूं।" ऐसे अहंकार से भी बचते चले जाते हैं, उन्हें अहं नहीं रह जाता और अहं के अभाव में वह आगे बढ़ता चला जाता हैं – यह सत्य है।

लोगों का परोपकार। यह भी एक कार्य है हम इसमें हाथ बटाएं, परोपकार क्या है ? – दूसरों को दुख न पहुंचे यही सबसे बड़ा परोपकार है, इसी में दूसरों का का और अपना हित है, समाज की भलाई है दूसरों को दुख पहुंचाने से बड़ा अपकार और पापकर्म नहीं है। Light के अन्दर हमेशा रहना चाहिए वह प्रकाश ही मार्ग प्रकाशित करता है।

दैविक शक्ति विकसित होने पर मार्ग की सभी बाधायें दूर हो जाती हैं–

वेदान्त का यदि हम विश्लेषण करें तो यह वेद+अन्त से बना है। वेद का अर्थ ज्ञान से है, ज्ञान अर्थात् आत्म ज्ञान होने पर कोई ज्ञान बाकी नहीं रह जाता। ज्ञानेश्वर जी कहते है :–

एक ज्ञानचे लक्षण ज्ञान म्हणने
ते पहावे आपणसी आपण या नावे ज्ञान ॥

ज्ञान क अर्थ आत्म ज्ञान है, वही हमें रखना है उसी का साक्षात्कार करना है।

स्व स्वरूपान् संधान हेच ही भक्ति
हेंच ही ज्ञान ॥

स्वयं को खोजना ही भक्ति है, यही ज्ञान है। भक्ति का शाब्दिक अर्थ भज्+तिन अर्थात सेवा करने की पद्धति (Method of workship) की भक्ति कहा जाता है। इसके द्वारा स्वयं को पहचानना ही ज्ञान है।

हम सभी इस सत्य की खोज में है। हम विद्यार्थी है, ढूंढ रहें हैं। Healthy शब्द का विश्लेषण हम इस प्रकार कर सकते हैं :– Heal–Thy=Myself को जानने पर Healing / Power (घाव भरने की शक्ति) विकसित हो जाती है। मार्ग की सभी बाधायें दूर हो जाती है। योग की दैविक शक्ति अत्यधिक शक्तिशाली होती है, मार्ग की समस्त बाधायें दूर हो जाती है, आत्मा ही दैविक है, मन अत्यधिक शक्तिशाली हो जाता है तथा सभी घटनायें वैसे ही घटती हैं जैसे आप चाहते हैं।

If we know Thyself, we will develop healing pewer, all obstocles are removed. Yoga means power, this devine power is so powerful that all obstacles are vanished by this devine power, Soul is devine, Mind becomes powerful and things are as you like.

संत कबीर कहते हैं :—

हद से अनहद हुआ, किनो वहां असनान्।
मुनी जन महल न पाईयां, वहा कीन विश्राम॥

जहां सीमा समाप्त हो जाती है वहां डुबकी लगायी जहां मुनिजनों को महल नहीं मिले वहां विश्राम किया। अर्थात् केवल व्रत उपवास से कुछ होता नहीं है, ज्ञान में डुबकी लगाकर ही कुछ हासिल होता है,

शून्य बाहर तक सब गये, शून्य आगे नाही।
शून्य के आगे जे गये, मँद – मद मुस्कायें॥

कबीर के इस दोहे के गूढार्थ के अनुसार शून्य के आगे की स्थिति तक पहुंचना चाहिये। योगाभ्यास में सुषुप्तावस्था से आगे तुर्यावस्था तक जो पहुंचता है वही आनंद की स्थिति है। इसे प्रज्ञावस्था (शांतता-वस्था) भी कहा जाता है। यहाँ पहुंचने पर भक्त अत्यधिक आनंद महसूस करता हैं।

विज्ञान आनन्दम् ब्रम्ह्म।

विज्ञान के आगे ही विश्लेषण किया जा सकता है। यह स्थिति ही विज्ञानमय कोष है तभी प्रज्ञा की स्थिति प्राप्त होती है।

तिथि :–

परम पूज्य वासुदेव तिवारी
डॉ. गिरीश पांडे का निवास
राजेन्द्र नगर, बिलासपुर (म० प्र०)

- गुरूजी उवाच -

'आत्म ज्योति'। यह इतनां सुन्दर हैं कि उसमें लीन होने से सबकुछ आनंदमय हो जाता है पुण्य और पाप से परे हो जाता है, उसके सम्पर्क में बोलते-बोलते आवाज कम हो जाती है - जानते है क्यों ? तल्लीनता के कारण, तल्लीनता को प्राप्त करना उस आनंद में मगन रहना यही ध्येय है।

❖ ❖ ❖

हम अपने स्वरुप को भूल गये। मोह से ग्रस्त हो गये थे, इसलिए निर्बल हो गये थे, बल्कि निर्बल नहीं बलहीन हो गये थे, आत्मा की शक्ति को पहचानने, और प्राप्त करने से हम पुनः समर्थ हो

उससे निषेध कर जीने का कोई अर्थ नहीं है, सबके साथ रहकर आदर्श होना ही सच्चा आदर्श होना है आदर्श वही है भक्त वही है, जो विभक्त नहीं है। जंगल में भागने से यह विद्या प्राप्त नहीं होगी।

❖ ❖ ❖

मै वही कहूंगा – जो कहने योग्य है, वहीं करुंगा जो करने योग्य है, आप लोगों को भी ऐसा करना चाहिए या नहीं आप सोचें हर व्यक्ति स्वतंत्र है, पर मै किसी को रोकता नहीं, कोई निषेध नहीं है यह मार्ग उन सबके लिए है, जो चैतन्य होना चाहें। मैं किसीको हटाता नहीं।

संभावनाएं

फिरना, न सोना उठना बैठना, न खाना पीना। इस बात को समझिए, यह सब कार्य शरीर के है, शरीर माध्यम है, लक्ष्य तो नहीं, शरीर को बनाए रखने के लिए ये आवश्यक हैं, शरीर की रक्षा आवश्यक है अतएवं उसकी रक्षा का उपाय करते हुए वही करो जो करने योग्य है, सुनो। जो सुनने योग्य है भागमभाग से (कमनाओं के पीछे) मुक्त होकर, आत्म मार्ग में लगना है।

❖ ❖ ❖

काम इच्छाएं या वासना ही दुख का कारण है, दुख, इसमें डूब जानें से ही होता है।
" गुरु बनाओ जानकर, पानी पिओ छानकर" यह अच्छे बुरे का ज्ञान, आसक्ति और कामना से मुक्ति संतो की संगति से ही संभव है।

❖ ❖ ❖

यह विद्या है-आत्मविद्या। यही वास्तविक विद्या है, यह देने से बढ़ती है - घटती नहीं। इस विद्या से युक्त होने पर समाज के प्रति हम कर्तव्य करे - उसे औरों को बांटे, समाज से अलग होकर, पलायन कर

सार्थक होओ. बनो नहीं। यहां तो एक से दो हुए कि कामना, वासना इच्छाएं जगीं, इससे बचना है।

❖ ❖ ❖

क्रोध में व्यक्ति सम्मोहित हो जाता है, स्मृति भी भ्रष्ट हो जाती है, बुद्धि नष्ट हो जाती है, अच्छा बुरा सोचने समझने की शक्ति नहीं रह जाती -क्रोधा- - विष्ट में - समझ में नहीं आता। यही क्रोध नाश का कारण बन जाता है।

❖ ❖ ❖

प्रसन्न होना चाहिए। यह प्रसन्नता आत्मिक प्रसन्नता से ही प्राप्त होती है तभी वह वास्तविक प्रसन्नता होती है। क्रोध मत कीजिए क्रोध क्यों करना ? 'हाथी चला बाजार, कुत्ता भूंके हजार।'.

❖ ❖ ❖

आदर्श ! ये आदर्श सत्पुरुष सद्गुरु के संग रहने से आते हैं, पहले परिवार में फिर कुटुंब में फिर समाज में प्रतिष्ठा - क्रमशः प्राप्त होती चली जाती है।

– (प्रेरक उद्‌बोधन) –

साधु, होओ। बनो नहीं, बनना नहीं है, आत्म विद्या के साधन मार्ग में साधु बनता नहीं, होता है। बनना या बनिए नहीं, होइए। आत्मविद्या का साधक सर्वत्र पूजा जाता है, यह कथन सत्य है - विद्वान सर्वत्र पूजयेत"

❖ ❖ ❖

अहं ! किस बात का, जब तुम्हारी अगली सांस ही तुम्हारे वश में नहीं, न मालूम कौन सी घड़ी- अंतिम हो, जब साधारण जीवनचर्या वश में नहीं है शरीर के भीतर होने वाली स्वाभाविक क्रियाएं वशवर्ती नहीं, तो फिर चलने – फिरने – उठने बैठने जैसी सामान्य क्रियाओं का कैसा अभिमान। बहिर्मुखी जब तक है, तब तक परिवर्तन नहीं आ सकता।

❖ ❖ ❖

जन्म क्यों होता है ? अपने आपको देखने के लिए। प्रकार भिन्न हैं – परिणाम एक / कोई ऐसा पुरुष (सद्‌गुरु) मिल जाए, जिससे विचार विमर्श और जिसके बताये गये मार्ग एवं अभ्यास द्वारा, हम अपने कुल – पुरुषों के नाम को सार्थक करें। बाप (या पिता) याने मूल – पुरुष – शुभेच्छा।

❖ ❖ ❖

भाषा और व्याकरण द्वितीयतः हैं, प्रथम एवं अंतिम उद्देश्य है - साधना। साधना करो। ये शक्तियां मिलती है। करके देखिए, सांसारिक जीवन में आप सफल रहेंगे, आपका कल्याण होगा।

❖ ❖ ❖

यह आत्मविद्या दोनों विधाओं से सम्बन्धित है, शब्द ब्रम्ह ! एवं परब्रम्ह दोनों का ज्ञान इससे सम्भव है, निष्णात एवं परमपद के अधिकारी वही हो सकते हैं जो इस आत्म अथवा ब्रम्ह विद्या से युक्त हैं। इसके प्राप्त होने से उत्तमोत्तम, सूक्ष्मातिसूक्ष्म अधिकारी होता चला जाता है, साधु होओ। कल्याण मय मूर्ति बनो।

❖ ❖ ❖

प्रवचन, कीर्तन, ग्रंथ, श्रुतियां, केवल कर्तव्य बोधक हैं, साधना के मार्ग में आने वाली बाधाओं निराकरण की क्षमता मात्र पुस्तकों को पढ़कर- ... नहीं किया जा सकता इससे भ्रम' अथवा संदेह उत्पन्न होगा। आत्मबोध के मार्ग पर चलकर ... जिसने अनुभव किया है, आत्मशक्ति का केवल ... मार्ग दर्शक हो सकता है।

❖ ❖ ❖

यह ब्रम्ह या आत्मा क्या है, अयं आत्मा ब्रह्म "आत्मा या निज के स्वरूप को जानना ही परम ... का साक्षात्कार है। यह दिव्यत्व तुममें है, इसका साक्षात्कार कर परमोत्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है।

❖ ❖ ❖

एक दूसरे पर दोषारोपण क्यों ? वरन् अच्छाई या गुण ढूंढने का प्रयत्न क्यों नहीं ? यह ढूंढने से ही मिलेगा यह ढूंढना जो है – वह भी मात्र अभ्यास से संभव है। इसी अभ्यास से साधक अहं से मुक्त होकर सिद्धावस्था तक पहुंचता है।

❖ ❖ ❖

हम ! हमेशा, अन्य पुरुष में बात करने के आदी हो गये है, हर अच्छी घटना और वस्तु में अपनी छवि और हर आरोपण और, बुराई में दूसरों की ओर हमारा संकेत हुआ करता है, जबकि होना चाहिए- कि बुराई के प्रसंग में हम अपने दोषों और भलाई या प्रशंसा के प्रसंग में दूसरों की ओर संकेत क्यों न करें ?

❖ ❖ ❖

आत्म – आ = (आनंद) + त्म = (विज्ञान) यह आनंद घटना बढ़ता रहता है।

ईच्छा – ई = जिसने बल पूर्वक इस शक्ति को प्राप्त किया (वह समर्थ हो जाता है) + इ.न + छा = (+ ब उसकी बुद्धि इस ओर(संसार-सागर) से उस ओर (परम तत्व) लग जाती है। या बुद्धि निर्मल हो जाती है।

शु = मनोवृत्ति – शुभकामनाओं में बदल जाती है।

-: संकल्प :-

— प्रसंग —

१. किसी जापानी जेन संत के पास एक प्रतिष्ठित व्यापारी व्यक्ति पहुंचा और बोला–महात्मा मुझे अपना शिष्य बना कर अनुग्रहित करें ताकि मै आपके जैसी आत्मिक शान्ति को प्राप्त कर सकूं। संत ने हंसते हुए उत्तर दिया अभी आप दीक्षा के पात्र नहीं हैं। व्यापारी नेआश्चर्य से पूछा ऐसी क्या कमी है मुझमें।

संत ने उनसे कहा बैठो चाय पियो और चाय व प्याली लाने का आदेश दिया। चाय की ट्रे आ जाने पर उन्होंने व्यापारी से अनुरोध किया कि उनके लिए भी चाय वही बना दे। व्यापारी ने चाय बनाकर कप में डालना प्रारंभ किया, प्याली भर जाने के पश्चात भी संत ने उसे चाय डालने को मना नहीं किया।

व्यापारी ने भरे कप में चाय डालना जारी रखा चाय कप के बाहर गिरने लगी संत ने मुस्कुराते हुए व्यापारी से, कहा भरे प्याले में और अधिक चाय नहीं आ सकती। यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर हैं।

२. वैदेही जनक की ख्याति को सुनकर नारद मुनि उनकी सभा में पहुंचे। उन्होंने देखा कि अप्सराओं जैसी सुन्दरियां नृत्य कर रही है सोमरस का प्याला हाथ में लिए हुए राजा जनक नृत्य का आनंद ले रहे हैं। नारद आश्चर्य से खड़े सोचने लगे जनक कैसा ब्रह्म ज्ञानी है उनका व्यवहार तो उसे परम भोगी सिद्ध करता है यह राजा तो पूर्णतया भोग में लिप्त हैं।

जैसे ही जनक की दृष्टि नारद पर पड़ी उन्होंने तुरंत अपना आसन छोड़कर नारद को श्रद्धा पूर्वक अपने आसन पर बिठाया तथा स्वंय नीचे बैठकर उन-की कुशल क्षेम पूछी। नारद ने अन्यमनस्क रुप से प्रश्नों का उत्तर दिया। अब नारद ने जनक से प्रश्न किया हे राजन लोग तुम्हें ब्रह्मवेत्ता कहते है इस धरती पर तुम्हारे समान ज्ञानी कोई नहीं है। ऐसा कहते है लेकिन तुम्हारा व्यवहार देखकर मुझे अब उनकी बातों पर संदेह होने लगा है सत्य क्या है यह मुझे बताओं।

जनक ने नारद के प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि दासों को आज्ञा दी कि महामुनि के विश्राम की पूरी व्यवस्था की जाय। महामुनि कल मेरे दरबार में पधारे ऐसा कहते हुए वे चले गये।

प्रातः दरबार में नारद ने ज्यों ही प्रवेश किया राजा जनक ने उनसे कहा मुनिवर आज सारे नगर में उत्सव मनाया जा रहा है कृपया उसका निरीक्षण कर हमें कृतार्थ करें। मुनि के सिर परउन्होंनेएकतेलकाकटोरा रखते हुए अपने सैनिकों को आदेश दिया कि मुनि को नगर भ्रमण कराया जाय और यदि भ्रमण करते समय एक भी तेल की बूंद कटोरे से छलक कर जमीन पर गिरे मुनि का शिरच्छेदन तत्काल कर दिया जाय।

नारद भयभीत हो सिर पर कटोरा रखे नगर भ्रमण करने चले गए। सारा नगर भ्रमण कर क्लांत तथा पसीने से तर जब मुनि दरबार में वापस आए तो राजा जनक ने उनसे प्रश्न किया क्यों मुनि कर लिया नगर भ्रमण, कैसा लगा उत्सव।

मुनि ने बिसूरते हुए उत्तर दिया – भाड़ में गया आपका नगरतथा उत्सव। सारे रास्ते तो मै इस चिंता में था कि कहीं एक बूंद तेल छलक तो नहीं रहा है सारा समय तथा ध्यान मेरा तेल की बूंद पर था ऐसे में नगर एवं उत्सव का होश किसे रहता हैं।

जनक ने हंसते हुए कहा मुनि भय के कारण जिस तरह आपने नगर भ्रमण तथा उत्सव का आनंद नहीं लिया आपका ध्यान उस बीच केवल बूंद परथाउसीतरह सभा में सब कुछ होते भीहुए मेरा ध्यान केवल उस परम सत्ता पर रहता हैं। यही आपके प्रश्न का उत्तर है।

अपने अंदर देखने के लिए एक आग पैदा करनी पड़ती है

बू और गुल का क्या ताल्लुक है। पैदा करने वाले और हमारा ताल्लुक क्या है ? हम उसे अपने अंदर तलाशें यह बात हमें पूज्य गुरुजी से प्राप्त हुई है जिन्होंने अभ्यास किया है उन्हें अनुभव हुआ होगा जैसे बू गुल से जुदा नहीं हो सकती, मैं उसके अन्दर हूं, वो मेरे अन्दर है। इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है। इसे अभ्यास, रियाज कहते है।

अपने अंदर देखने के तरीके मैंने गुरुजी से सीखे, इन पर अमल भी किया। तजुर्बे होते गये पूज्य गुरुजी अभी दूर है किन्तु उनकी नसीहतें, तालीमात उपदेश मेरे सामने है। अपने अंदर देखने के लिए एक दूसरी आग पैदा करनी पड़ती है इसे मरने से पहले मरना कहते हैं अपने जाहिल शरीर को खत्म कर देना फिर एक सूक्ष्म शरीर की आंख हमारे भीतर पैदा होना। फिर उसके अंदर आना। यह बगैर मेहनत के नहीं हो सकता। इसके लिए पात्रता की भी जरूरत होती है।

सही मार्ग हमारे सामने न रहें तो हम जिंदगी का मकसद पूर्ण नहीं कर सकते। पहले बाहरी चीजों से ध्यान हटाना चाहिए यह पहला अभ्यास है। जाहिरी आंख, कान, दिल के अलावा हकीकी आंख, कान, दिल टटोलना चाहिए। इन्सान को ऐसी शक्ति मिली है कि जिसे सारी दुनिया नहीं देख सकती उसे वह देख सकता है। जिसे सारी दुनियां नहीं सुन सकती उसे वह सुन सकता है। जिसे सारी दुनियां नहीं समझ सकती उसे वह समझ सकता है। इन्सान इस शक्ति का बहुत कम उपयोग करता है। इसका सही इस्तेमाल करने से अंदर की हकीकी आंख, कान, दिल, खुल सकता है।

पूज्य गुरुजी की कृपा से ही हमें अंदर की राह मिली है। उन्हीं की कृपा से बहुत कुछ मिला है मेरी हालत बदलती गई। एक शरीर स्थूल होता है और एक अंदर का सूक्ष्म शरीर होता है। मैंने जरा सी मेहनत से अपनी रूह को देखा है। इसे गुरुजी रंग में रंग मिलाना कहते हैं। अपने आप को पहचानना याने एक आग को अपने भीतर जलाना है, इसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है हर चीज के अन्दर एक बातमा है। एक हकीकत है, उसकी एक नूर है हमें ऐसी हस्ती मिली, हस्तियां बहुत कम है। हमारी खुशनसीबी है कि हमें वो पूज्य गुरुजी मिल गये। उनकी नजर हमारी तरफ बनी रहने से सारे काम बनते हैं।

वो मेहरबानी की नजर हमारे तरफ बनाये रखे। ऐसी शक्ति अल्लाह हमारे बीच बनाये रखे जिससे अंदर की दुनिया हम देख सकें।

श्री मजहर खान

(गुरु पूर्णिमा रायपुर के अवसर पर दिये गये भाषण का अंश) तेलहारा महाराष्ट्र

प्रसंग

हजरत अली का अपने प्रतिद्वंदी से तलवार युद्ध चल रहा था। हजरत ने पूरी शक्ति से अपने विरोधी पर तलवार का वार कर उसे भूमि पर गिरा दिया तब अपनी तलवार से उसकी हत्या करने ही जा रहे थे कि विरोधी ने उनके मुंह पर थूक दिया।

हजरत अली ने तुरंत तलवार नीचे गिरा दी और विरोधी के ऊपर उठकर प्रार्थना करने बैठ गए। आश्चर्य से चकित विरोधी उन्हें प्रार्थना करते देखते रहा। प्रार्थना समाप्त होने पर उसने हजरत से पूछा-हजरत तुमने तो मुझे निहत्था कर दिया था मेरी हत्या क्यों नहीं की।

हजरत ने हंसते हुए कहा मै धर्म के लिए युद्ध कर रहा हूं जैसे ही तुमने मेरे मुंह पर थूका मुझे क्रोध आ गया क्रोध के दौरान किया गया काम अनुचित और असंतुलित है अतः मैने तुम्हारी हत्या नहीं की तथा क्रोध के पश्चाताप के लिए प्रार्थना की। यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है।

परम पूज्य गुरुजी एवं मुख्य अतिथि श्री टी आर जयरामन

सम्मानतीय श्रोतागण

पदार्पण पर्व समारोह ६ अक्टूबर १९८६

"पर्दापण पर्व" एक रिपोर्ताज

बिलासपुर परिवार बहुत दिनों से एक ऐसे शुभ अवसर की खोज में था, जिसमें गुरु पर्व के अलावा परिवार जनों का पारस्परिक मेल जोल हो सके तथा जो परिवारजन किन्हीं अपरिहार्य कारणों से गुरु पर्व में शामिल न हो पाये हो, ऐसे अवसर पर गुरु पूजा का पुण्य लाभ ले सकें। इस भावना को लेकर चलते हुए बिलासपुर गुरु परिवार ने परम पुज्य गुरुजी की अनुमति से ६ अक्टूबर ८६ से एक लघु सम्मेलन जो कि प्रमुखतया बिलासपुर के आसपास के लोगों की सुविधा को देखते हुए बिलासपुर मे मनाया जाना प्रारंभ किया।

इस पर्व पर दूर के लोगों को असुविधा न हो इसलिए विधिवत आमंत्रण नहीं भेजा गया इस के लिए बिलासपुर परिवार क्षमा प्रार्थी है। कारण कि हमने ऐसा कोई बंधन परिवार जनों पर डालना उचित नही समझा जिससे उन्हे किसी तरह की असुविधा हो।

पदार्पण पर्व का चयन ६ अक्टूबर को करने के पीछे कारण यह था कि परम पूज्य गुरुजी ने साऊथ अमेरिका से भारत आने पर इस पूज्य धरती पर अपने चरण ६ अक्टूबर को कलकत्ता बंदरगाह पर उतारे थे। वही दिन हम परिवार जनों का एक स्वर्णिम भविष्य लिखा जाने वाला हो गया। उसी दिन इस पूज्य धरती का उनके पुण्य चरण कमलों का परस्पर मिलाप हुआ और एक पुण्य युग का सूत्रपात हुआ। ऐसे महत्वपूर्ण अवसर को बारम्बार स्मरण करने के लिए इस परिवार को जो गौरव प्रदान किया गया उसके लिए बिलासपुर परिवार अत्यन्त कृतज्ञ है।

स्थानीय परिवार के परस्पर सहयोग से एक संक्षिप्त लघु कार्यक्रम बहुत ही शीघ्रता में निश्चित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्यतया बिलासपुर, रायपुर एवं मुगेंली के लोगों ने भाग लिया। कुछ परिवार जनों ने भी अतिउत्साहित होकर हिस्सा लिया जिसके लिए बिलासपुर परिवार आभारी हैं।

इस कार्यक्रम का विशेष आकर्षण कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के सामने गुरुजी के मुखार बिंद से निकले हुए वचन थे। जिन्हे यहाँ के नागरिको ने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक सुना तथा वे निश्चित रुप से प्रभावित हुए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री. टी. आर. जयरामन प्रबंधक, एस. ई. सी. एल. थे। जो कि गुरुजी के सम्पर्क में आते ही ऐसे रंग गये कि हमारे ही होकर रह गये। एवं पति-पत्नि दोनों ने गुरुजी से दीक्षा लेकर परिवार में प्रवेश पा लिया।

कार्यक्रम ६ अक्टूबर ८६ की सुबह गुरु वंदना एवं पूजा से प्रारंभ हुआ। परिवार के विभिन्न व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम के महत्व पर विचार व्यक्त किये। मध्यान्ह में परिवार जनों की एक विचारों का आदान प्रदान हुआ।

सायंकाल शहर के सम्मानित एवं विशिष्ट नागरिकों को गुरुजी ने अपने दर्शन एवं उपदेशो का लाभ दिया। कार्यक्रम की समाप्ति पर एक सामूहिक भोज का आयोजन किया गया। इस तरह से ६ अक्टूबर सोल्लास परिवार जनों द्वारा व्यतीत किया गया।

हमारी योजना है कि पर्दापण पर्व हर वर्ष एक पुण्य तिथि के रुप में बिलासपुर या बिलासपुर के आसपास मनाया जाए ताकि इसकी पुण्य स्मृति अक्षुण्य रहे।

बिलासपुर परिवार

– नैतिकता का स्त्रोत गुरूजी में हैं –

प्राणी शास्त्रीय होने के नाते मै कह सकता हूं कि प्राणियों की मूल प्रकृत्ति स्वयं का बचाव फिर परिवार का बचाव होती है। लेकिन जब आदि मानव का विकास हुआ नई मूलभूत वृत्ति पैदा हुई मुक्ति की खोज यह उस समय की बात है जब सभ्यता पिछड़ी हुई थी। प्रकृति से बचाव आग से बचाव, ठंड से बचाव उसी के फलस्वरुप सारा ज्ञान प्राप्त हुआ और आधुनिक सभ्यता विकसित हुई गुरुत्वाकर्षण से परे अंतरिक्ष में मानव का प्रवेश आदमी की मुक्ति है, खोज है।

विज्ञान के विभिन्न शास्त्रों में ज्ञान तेजी से बढ़ता गया। कल का सच आज का झूठ हो गया। वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों की अप्रतिष्ठा हो गयी है। धर्म केवल कर्म काण्ड में बदल गया है, कर्मकाण्ड की प्रतिष्ठा के कारण मूल्यों से ध्यान हट गया है। यह बड़ी सोचनीय स्थिति है।

सत्य बोलना, यह सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिये आवश्यक है सत्य वचन का मूल्य स्थापित करने की आवश्यकता है क्योंकि इससे मानवीय समस्याओं - के मध्य विश्वास एवं आस्था के लिये आवश्यक है किंतु यह डरा धमकाकर सिखाया जाना गलत है।

पूज्य गुरुजी जीवन भर जिज्ञासु रहे हैं। पूज्य गुरुजी की यात्रा एक सत्या - न्वेषी की यात्रा है पूज्य गुरुजी के शिष्यों की दो महत्वपूर्ण बातों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है पहली महत्वपूर्ण बात है उनके शिष्य परिवार में विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय के व्यक्ति है यह वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के लिये बहुत आवश्यक हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण बात है कि पूज्य गुरुजी के मेरे परिचित शिष्य अत्यंत कर्तव्य निष्ठा तथा ... हैं। मुझे उनकी सज्जनता तथा व्यक्तित्व ने ... प्रभावित किया है। दैनिक जीवन में अत्यंत सरल ... सच्चे हैं शिष्य परिवार की नैतिकता का स्त्रोत ... गुरुजी में ही है।

इस वर्तमान समय में नैतिकता की प्रति... तथा धर्म एवं सम्प्रदाय के झगड़ो को - मु... जरुरी है यह पूज्य गुरुजी के सानिध्य में संभव है।

(गुरु पूर्णिमा रायपुर के अवसर पर दिये भाषण के अंश)

डां मेहरा
प्रमुख अतिथि
डीन मेडिकल कालेज, राय...

पदार्पण पर्व समारोह

६ अक्टूबर १९८६

प्रकृति और शक्ति क्षेत्र

व्यक्ति के विचारों के अनुरुप शरीर की उर्जा से अपने आसपास जैविक विद्युत का पर्यावरण का निर्माण करता है। जिसे अंग्रेजी में Aura कहा है। मस्तिष्क में उत्पन्न होने वाले विचार जैविक विद्युत के रुप में बाहर निकलते हैं विचार अपने गुणो के अनुसार तथा प्राणी के शक्ति की प्रमाण में एक निश्चित सीमा में- बिखर जाते हैं इस परिक्षेत्र के अंदर यदि दूसरा प्राणी प्रवेश करता है, तो इन दोनो की जैविक विद्युत का परिक्षेत्र एक दूसरे से प्रभावित होता है इसे भी समझे की जब हम किसी सत्पुरुष के या सज्जन के समीप जाते हैं, हमें उसके परिक्षेत्र के अनुरुप एक आनंद दायक अनुभूति होती है। जो कि बहुधा आकरण होती हैं इसी के विपरीत जब हम किसी राक्षसी प्रकृति के व्यक्ति के पास जाते हैं तो हमें एक विचित्रप्रकार का भय और वहां से जल्दसेजल्द अकारण हटने की इच्छा होती है। व्यक्ति में परिक्षेत्र धनात्मक हो सकते है तथा ऋणात्मक हो सकता है प्रत्येक व्यक्ति में इन दोनो तरह की उर्जा निहित रहती है। सात्विक प्रवृति वाले व्यक्ति में धनात्मक उर्जा बहुत मात्रा में होती हैं तथा ऋणात्मक उर्जा की मात्रा कम होती हैं। इसीलिए हम देखते है कि ऋणात्मक उर्जा वाला व्यक्ति या यों कहे कि राक्षसी प्रवृति वाला व्यक्ति सात्विक व्यक्ति के परिक्षेत्र में आने पर एक अजीब सी बेचैनी महसूस करता है, परिणामस्वरुप यदि सात्विक परिक्षेत्र का प्रभाव बहुत अधिक हुआ तो उसकी राक्षसी प्रवृत्ति का परिक्षेत्र दब जाता हैं या प्रभाव हीन हो जाता है यदि राक्षसी प्रवृत्ति अधिक मात्रा में हुई तो ऐसा प्राणी रिजेक्शन के कारण सात्विक प्रवृति के व्यक्ति से दूर भागने की कोशिश करता है।

इस परिक्षेत्र वाली परिकल्पना का दैनिक रुप से अपने कार्यों को सिद्ध करने के लिये हम व्यवहार में ला सकते हैं।

प्रकृति एवं प्राणी में एक सूक्ष्म संबंध हैं। प्रकृति का परिक्षेत्र एवं प्राणी का परिक्षेत्र यदि एक सा हो जाये तो इस प्रक्रिया से हमें कार्य सिद्धि मेंएक आश्चर्य जनक परिणाम मिल सकता है। उदाहरणार्थ, साधना कक्ष घर में बनाने के पहले हम यह निश्चित कर लें कि कौन सा कक्ष हमें प्राकृतिक रुप से सबसे ज्यादा प्रिय है। और उस कक्ष का कौन सा स्थान सबसे ज्यादा आकर्षित करता है उस स्थान को निश्चित कर हम प्रतिदिन नियत समय पर इसी स्थान पर एक विशेष स्थिति में बैठकर यदि हम साधना करें तो हमारीसाधना के दौरान निकलने वाली जैविक विद्युत उस स्थान को शक्ति के अनुरुप निश्चित परिक्षेत्र में बदल देगी। भले ही वह साधना का समय कम से कम या ज्यादा से ज्यादा हो। कुछ दिनो के बाद हमें यह अनुभव में आएगा कि जैसे ही हम उस स्थान पर उस विशेष आसन पर बैठते है पुराने परिक्षेत्र के प्रभाव के कारण हमारा ध्यान बिना प्रयत्न के लग जाता हैं व्यवहारिक रुप से इस परिक्षेत्र में हम यो कह सकते है कि यदि हम किसी मानसिक तनाव से गुजर रहें हों तो तुरंत ही उस स्थान पर प्रवेश कर जाये, हम यह देखेंगे कि प्रवेश करने के साथ ही हमारा तनाव धीरे धीरे गलता जाता है। ऐसा अनुभव में भी आया है।

दूसरा दैनिक उपयोग हम अपने घर के बालक बालिकाओं के ऊपर भी कर सकते हैं। यदि किसी छात्र को एक निश्चित स्थान एवं स्थिति एवं समय पर कुछ दिन बैठाया जाय और अपने विषय के अध्ययन में एकाग्र होने के लिए कहा जाय तो वह छात्र शनैः शनैः उस स्थान पर अपना अध्ययन परिक्षेत्र का निर्माण कर लेगा और ज्यों ही वह उस क्षेत्र में प्रवेश करेगा अध्ययन के प्रति उसकी रुचि एवं एकाग्रता आ जायेगी। क्यो न हम आज ही से अपने बाल गोपालो को इस सिद्धांत के अनुसार कुशाग्र बनाने का प्रयत्न करें।

डॉ गिरीश पान्डेय
अस्थि रोग विशेषज्ञ
राजेन्द्र नगर बिलासपुर म० प्र०

ऊर्जा की अनंत में खोज करना ही, धर्म, आध्यात्म दर्शन तथा विज्ञान है-

डार्विन के विकासवाद के अनुसार मनुष्य बंदर का विकसित रुप है, प्राणीशास्त्रीयों ने मानव को उसी प्राइमेट समूह के अंतर्गत रखा है जिस समूह में बंदर वर्ग के प्राणि आये हैं। प्रसिद्ध विकासवाद के प्रवर्तक लेमार्क के अनुसार अनुसार अनुपयोगी अंग नष्ट होते हुए तथा उपयोगी अंगो के विकासतथा उनके नवीन पीढ़ी के हस्तांतरण के सिद्धांत के आधार पर ही सरल से जटिल जीवो का विकास हुआ है।

मेंडल जिन्हें आधुनिक जेनेटिक्स (Genetics) का पिता कहा जाता है नवीन जीवों की उत्पत्ति का आधार जीन्स का आपस में समन्वय **Recombination of gene** को माना हैं अर्थात अमीबा से मानव या सरल से जटिल जीवों का विकास एक अत्यंत जटिल तथा धीमी प्रक्रिया रही तथा इस प्रथ्वी पर प्राणियो के संसार की रचना हुई। सर्वाधिक सरल जीव वाइरस से लेकर मनुष्य की कोषाओ में क्रोमोसोम पाये जाते है. इनमें जीन्स स्थित होते हैं, प्रत्येक गुणों के लिये एक जोड़ी जीन्स होते है और उसी के अनुरुप हमारी रचना होती है। प्रत्येक प्राणीयो की मूलभूत प्रकृतियां समान होती हैं, सर्वाधिक विकसित मानव भी भोजन, सुरक्षा प्रजनन के लिये वैसे ही संघर्ष करता हैं जैसे तथा जीव करते हैं। डर्विन के अनुसार प्रकृति उन्हें चुनती है जो संघर्ष में विजयी होते हैं।

आदिम मानव से आज तक के सभ्य मनुष्य के के विकास में मनुष्य के रहन सहन, तौर तरीके में अत्यधिक परिवर्तन आये तथापि मूल प्रवृतियां वही है। पाषाण युग से लेकर आज वर्तमान की औद्योगिक युग तक का विकास मनुष्य के मस्तिक का उसके विचारों का विकास, चमत्कार कहा जा सकता है। मनुष्य ने अनेक वैज्ञानिक अविष्कार किये पूर्ण भौतिक सम्पन्नता उसने हासिल की। साथ ही विकसित हुआ मनुष्य का अहम, इस अहम् के साथ विश्व राष्ट्र एव समाज के स्तर पर वर्ग संघर्ष उभरा, धर्म, जाति के सम्प्रदाय केझगड़ेपनपे। भूमि के लिये युद्ध, संप्रभुता के लिए युद्ध प्रथम तथा द्वितीय विश्वयुद्ध की परिणीति थी।

सबल की विजय **Servival of the fittest** के इस युग में विश्व एवं राष्ट्र के स्तर पर मानवीय संवेदनायें धीरे – धीरे नष्ट होती जा रही हैं एक भौतिकवादी चिंतन पनप चुका है, मनुष्य अत्यंत स्वार्थी हो चुका है हमें हमारे पड़ोसी, भाइ बांधवो से तभी हमदर्दी है जब हमारा कोई स्वार्थ सिद्ध होता है। राष्ट्रीयता, सत्य की महत्ता, श्रम की महत्ता शांति सभी महत्वपूर्ण बाते समाप्त सी हो रही है। वे महान सामाजिक मूल्य सच्चाई, ईमानदारी अतीत की वस्तु बन चुके है। इन सामाजिक मूल्यों के पतन के समय में हमें ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो मूल्यों के इस संकट को खत्म कर मनुष्य को शांति, अंहिसा सत्य, नैतिकता की ओर ले जायें। इस मानवीय मूल्यों के संकट के समय में परम पूज्य गुरुजी का सानिध्य जनसाधारण के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण एवं मनुष्यता की ओर कदम है। गृहस्थ संत, कर्म योगी श्री गुरुजी ने धर्म एवं अध्यात्म की वैज्ञानिक धरातल पर विवेचना की हैं कर्मकांड से परे रहकर भी, गृहस्थ धर्म में रहकर हम किस तरह मानवीय रह सकते है यह शिक्षा हमें गुरुजी से मिलती है।

दर-असल आदि मानव ने भयानक आंधी तुफान बिजलियों से डर कर जिस ईश्वर की कल्पना की वह, वह परम शक्ति विभिन्न विवादों में घिर गयी। धर्म, भक्ति के स्थान पर, विभिन्न सम्प्रदाय, कर्मकाण्ड सामने आते गये। वस्तुतः धर्म की परिभाषा "धारयते इति धर्म" हैं, अर्थात जो धारणा किया जाता है वो धर्म है हमें मानव धर्म धारण करना है। धर्म का अर्थ स्वयं को पहचानना (Self-Realization) भी है। मानव धर्म अर्थात, मानवीयता का पाठ हमें उसी से ही मिल सकता है

जो स्वंयसूचित हो, उन मानव गुणों को धारण करना हो। पुज्य गुरुजी के स्वभावमेंहममयही महसूसकरते है।

स्वंय को पहचानने के लिये भी एक दिशा निर्देशक चाहिये, स्वंय को पहचानना एक बड़ी साधना है इसके लिये अभ्यास की जरुरत है हमें इसके लिये सहायता की आवश्यकता होती है गुरुजी इस साधना में सहायक होत है।

केल्यानी होत आहे,
आधी केलेच पहिजे।

अर्थात किसी भी चीज को स्वंय कर देखना चाहिए, पहले क्रिया में उतारना चाहिए। पुज्य गुरुजी हमेशा यही सूत्र वाक्य कहते हैं हमें करके देखना है। भौतिक रुप से सम्पन्न होने पर भी मनुष्य तरह-तरह की चिंताओ में रहता है उसकी चिंता की मुक्ति के लिये, मानसिक अशांति के निवारण के लिये, ध्यान एवं योगाभ्यास का विशिष्ट महत्व है। पुज्य वासुदेव तिवारी जी ध्यान एवं योग पर विशेष अधिकार रखते हैं।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान नित नवीन अविष्कार कर रहा है, भौतिक शास्त्र, शारीरिकी (Phisiology) में भी नवीनतम अविष्कार हो रहे हैं ' टेस्ट टयूबबेबी के सफल प्रयोग हो रहे है तथा अमीनो एसिड के संश्लेषण (Synthesis) की दिशा में वैज्ञानिक सफलता प्राप्त कर रहे है। तथापि जीव की उत्पत्ति का स्त्रोत कहां से आता है, मनुष्य मृत्यु के बाद किस लोक में चला जाता है यह प्रश्न अभी नहीं सुलझा है। प्रथम डाइआक्सी -राइबो न्यूक्लिक एसीड Deoxvribonuolic acid (D. N. A.) के अणुओ के निर्माण से लेकर मानव के पंचतत्वों पृथ्वी, आकाश, जल, वायु, आग, से निर्मित देह के अगणित रहस्य अभी भी नहीं सुलझे।

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।
पंच - रचित अति अधम शरीरा ।।

मनुष्य का उपलब्ध ज्ञान अभी भी अधुरा है। मनुष्य सृष्टि का रहस्य नही जान पाया है। यह सच है कि आकाश में नित्यनीयन निहारिकाओं की खोज होती है, यह सच है कि नित्यनवीन आयुध मनुष्य आपसी युद्ध के लिये बना रहा है, यह भी सत्य है कि हमने वर्षा तुफान एवं उष्मा के आंकडे एकत्र करने के यंत्र बना लिये है, हम कीटाणु युद्ध की ओर बढ़ रहे हैं। आइनस्टीन का सापेक्षता का सिद्धांत हमने सैद्धांतिक रुप से समझा है तथापि उस उर्जा को हम नहीं समझ पाये हैं जो रुप बदलती है, नवीन कणो को जन्म देती है।

उस अपरिमापित ऊर्जा को कोई भी वैज्ञानिक नाम दे लें. चाहे विद्युत चुम्बकीय तरगें कहे या अन्य नाम दे उस ऊर्जा का स्त्रोत कहां है ? (Electro) Magnetic waves) उसकी उत्पत्ति कैसे हुई ? इसकी अनंत में खोज करना ही धर्म, आध्यात्म, दर्शन एवं विज्ञान है। यही हमारे मनीषी एवं वैज्ञानिकों का भी कथन है।

इस खोज में आइये हम साथ हो लें मानव होने के नाते।

मंगला देवरस

स्थान: बिलासपुर(म. प्र.) (पुत्री स्व.वासुदेव देवरस)
तिथि: ८ जून ८७ सहायक प्राध्यापिका प्राणी विज्ञान
दिवस: सोमवार तिलक नगर बिलासपुर म. प्र.

। ॐ ।।

श्री गुरुवें नमः

"मंत्र मूलम् गुरुः वाक्यं:"

पिताश्री का सन् १९५१ में, स्वर्गवास हो जाने पर १२ वर्ष की आयु में मै रायपुर से दुर्ग, अपनी बड़ी बहन एवं बहनोई स्व० विश्वनाथ मिश्रा के यहां "शिक्षा दीक्षा" हेतु अपनी मां के साथ आया। यह एक भावी प्रेरणा थी।

येन्, केन प्रकारेण ६ वीं से मेट्रिक तक शिक्षा पूर्ण हुई, एवं रोजगार हेतु भिलाई इस्पात संयंत्र में नियुक्ति हुई।

घरेलू वातारण हेलमेल किन्तु कलहपूर्ण रहा। वैराग्यपूर्ण जीवन रहा। क्रोध व खीज भी थी। घर के पास ही एक पीपल का बड़ा वृक्ष – आज भी है। प्राय हमेशा मेरा कथन रहें कि "इस पीपल के वृक्ष मे नित्य नए पत्ते आते हैं एवं पुराने झड़ते हैं – किसी को पता नही कब आयाऔर कब गया"। यह भी क्या जीवन है? इस प्रकार मै मनुष्य जीवन की उस पीपल के पत्ते की भांति समझता रहा।

मेरे बहनोई (जीजा जी) पूर्वजों की तरह ही संगीत प्रेमी थे। इससे हमारे भांजे भी स्वाभाविक रूप से संगीत से लगाव रखते थे। यही कारण रहा कि हमारे स्व० जीजा जी मेरे द्वितीय भांजे स्व० चित्रनाथ मिश्रा से एक संगीत शिक्षक के बारे में प्रशंसात्मक चर्चा किए।

एक दिन, सन् १९६१ के मध्य में, आदरणीय श्रद्धेय गुरुदेव (श्री वासुदेव रामेश्वर तिवारी) मेरे जीजा जी के साथ आए एवं एक संगीत शिक्षक के रूप में परिचय हुआ। चर्चाबाद गुरुदेव ने स्व० चित्रनाथ को संगीतकला प्रवेश की सलाह दी। साथ ही मुझे भी तबला सीखने हेतु साथ लिए। यह सत्य है कि एक संगीतमय घर में रहकर भी मुझे तबले की शिक्षा गुरुदेव ने स्वतः दी। इस प्रकार एक संगीत शिक्षक के रूप में, हम उनके सानिध्य, संगत एवं समीप से रहे। हम अधिकांश समय हमारा उनके साथ चर्चाओं में व्यतीत होता रहा। वे हमसे जुड़े हुए थे और हम उनके सिर चढ़े हुए थे। किन्तु आदर में कमी नहीं थी। प्रथम दर्शन में ही आकर्षण हो गया था। संगीत शाला की चाबी व प्रबंध व्यवस्था मेरे जिम्मे रही।

संगीत विषय कम कर आपने हमें मूल विषय आध्यात्मिक शिक्षा की ओर उन्मुख किया। यह मेरी आंतरिक अभिरुचि के अन्तर्गत रही। समयानुकूल उन्होंने हमें दीक्षा दी। इस तरह वे हमारे आध्यात्मिक गुरु के रूप में मेरे जीवन में स्थापित हुए। इस तरह मेरा दुर्ग आना "शिक्षा – दीक्षा" हेतु सार्थक हुआ।

आगे की शिक्षा मेरी स्वाध्यायी रूप में होती रही और गुरुदेव की कृपा से मुझे दो स्नातकोत्तर (अर्थ एवं दर्शन) एवं विधि की उपाधि प्राप्त है। तबले में केवल मेट्रिक हूं। यह सब उपाधियां पढ़ाई कम किंतु, गुरुदेव की स्नेहिल कृपा पर ही निर्भर है– कारण, मेरा गुरुदेव के सिवाय, अन्य कोई नहीं है। यह गुरुदेव भी जानते हैं। इसी से मै उनसे सदा कृपा की याचना करता रहता हूं।

सन् १९६२ की बात है, एक शाम संगीत कक्ष में गुरुदेव के साथ केवल मैं एवं मेरा स्व० भांजा चित्रनाथ मिश्रा थे। गुरुदेव हारमोनियम लिए हुए थे, कि मेरे भान्जे ने अपना दाहिना हाथ उनकी ओर बढ़ाया एवं अपने बारे मे जानकारी चाही। गुरुदेव ने उनके हाथ की तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका अंगुलियों के केवल छोर क्षण भर के लिए पकड़े एवं

अंगुलियां छोड़कर मेरी ओर इंगित कर एक वाक्य बोले :— "अन्त में यही तुम्हें साथ देगा"

बस बात आई गई हो गई, किन्तु यह वाक्य मुझे विस्मृत न हो सका। मैं प्रायः यह सोचता था कि मेरा भांजा इतना संपन्न एवं नम्र स्वभाव, क्या कभी ऐसा भी अवसर आएगा ? और खैर, करके अपना सिर झटक दिया करता था। यह वाक्य " मंत्र मूलम् गुरु वाक्यम् .." २० वर्ष बाद पूर्णतः सत्य हुआ। घटना इस प्रकार है :—

६ वर्ष के अन्तराल में मेरे दो–दो भांजों (बड़ी बहिन के ५ पुत्रों में से) का अचानक स्वर्गवास हुआ घटना का पूर्वाभास मुझे प्रायः हो जाया करता था। शिवनाथ की तबियत खराब होने पर, सूचना पाकर उसकी परिचर्चा में मै रहा मुझे देख संतोष भी हुआ। १६-१२-८१ से ८-१२-८२ तक भिलाई चिकित्सालय में रखकर उसे वापस घर ले आए एवं ४-३-८२ तक वह घर में विश्राम करता रहा। इस अवधि में मेरी पूर्ण देखरेख एवम् निगरानी स्वतः रही। वह इस अवधि में भी ध्यानस्थ रहता था। मेरे घर में भी कुछ कठिन विपत्तियां रहीं, किन्तु उधर ध्यान न देकर, उसकी परिचर्या में ही अडिग रहा। वह प्रायः मुझे रोक लिया करता था एवम् सिनेमा, ध्यान, आसन व चांदी की तरह सफेद रंगों की चर्चा किया करता। अपने कानों से "ॐ" ध्वनि भी, मुझे कान लगाकर सुनवाई। मै केवल सान्त्वना ही देता रहा।

फरवरी २३ या २५ की तारीख होगी, में जब प्रातः १० बजे उसे देखने पहुंचा तो वह आराम था। मैंने लक्षण ठीक न दिखने पर उसका नाड़ी स्पन्दन देखा, वह नहीं था। मैंने अपनी बड़ी बहिन को गंगाजल एवं तुलसी पत्र उसके मुह में डालने की शांत सलाह दी। गंगालज लेने से इंकार कर दिया। एवं अपनी माँ के पूछने पर मुस्कुराते हुए ऊपर की ओर गोल–गोल इशारा किया। कोई डाक्टर सुलभ न होने से एक होमियोपैथिक डॉक्टर को बुलवाया गया। डॉक्टर ने स्टेथस्कोप से उसकी जांच की एवं नाड़ी देखी। वह उठकर बैठ गया। डॉक्टर को भी नाड़ी स्पन्दन नहीं मिला, अतः वह अवाक रह गया। कारण नाड़ी स्पन्दन नहीं है, और मरीज उससे बात कर रहा है। झटपट उसने दवा लिखकर सलाह दे दी।

मार्च २ सन् ८२ गुरुवार को, शाम कार्यालय से वापस होते समय मै हर्षित था, एवम् गंगा घंटे का विचार मस्तिष्क में दौड़ रहा था। एक घनिष्ठ फोटोग्राफर (मेरे भांजे के हर्ष – विभोर, आनंद में वार्तानुसार) के पास गया, किन्तु उस फोटोग्राफर का लड़का उसी दिन रेल से कट गया था - सो मै सूचना छोड़ वापस हुआ, एवम् मुहल्ले से जानकारी लेते हुए शाम करीब ५ बजे भांजे के पास पहुंचा। कमरे में भीड़ थी एवं सब चिन्तित थे। भांजा स्थिर सोया पड़ा था, एवं खुले मुह में एक लम्बा सा तुलसी पत्र पड़ा था। उर्ध्वश्वांस था। सब चिन्तित एवं परेशान थे। पंडित जी गीता पाठ हेतु बैठे थे मैने अगरबत्ती गुलाल, कपूर और सुगंधित सामाग्रिया मंगवाई और हाथ–मुह धोकर ३ बार विचार कर गुरुमंत्र का उच्चारण किया। मेरे भांजे ने पलक एवम् सिर हिलाया। सब अवाक् रह गए। स्पर्श करने दौड़े, मैने रोका उन्हें, एवम् सभी से वैसे ही वैसे ही जोर-जोर से उच्चारण करने को कहा ४–५ बार दोहराने के बाद मेरे भांजे ने प्रसन्नता से आंखे खोल दी।

मैने उससे पूछा उठकर बैठोगे ? उसने हां में सिर हिलाया, एवम् मैने सहारा देकर उसे बिठा दिया। सब प्रफुल्लित रहे। उसका चेहरा एवं आंखे एक समाधिस्थ की तरह थी। पंडित ने अपना पाठ शुरु किया।

रात्रि ११-४५ पर मैं वापस हुआ। उसके छोटे भाई की असमर्थता प्रकट करने पर मैने अपने साले को आवश्यक निर्देश देकर वहीं पास सोने की सलाह दी। दूसरी प्रातः अर्थात् ४-३-८२ को उसके घर में उसके विश्राम का निर्देश देकर कार्यालय चला गया। संध्या

वापस होने पर भांजे को उठाकर दवा आदि दी। उसने अपने ही हाथ से पिया। मैने वही सुगंधित सामग्रिया पुनः मंगवाई। पंडितजी भी आए, पाठ प्रारंभ हुआ। अंतिम ३ श्लोक बाकी थे कि भांजे को जो पद्मासन में था, शाम ७ बजे खांसी का झटका आया। लोग पानी लेकर दौड़े, मैने रोका, कफ-कफ चिल्लाए। उसने अपना मुंह खोल दिया। उसका चेहरा निस्तेज हो गया। मै समझ गया, मेरा भांजा उड़ गया। करीब १॥ मिनिट बाद एक हिचकी आई एवम् ओऽम शब्द निकला। उसके बाद उसे हमने जमीन पर उतारा। फिर क्या था, रुदन क्रोध एवम् कलहपूर्ण वातावरण और बौछार मुझ पर।

रात्रि पार्थिव शरीर के पास रहा एवम् प्रातः ज्ञात हुआ कि मेरा साला जो ३-३-८२ को उसके पास लेटा था, उसने पूरे कमरे में एक प्रकाश-पुंज देखा। पूरा कमरा प्रकाशित था। वह घबराकर बत्ती जला बैठा। मेरे भांजे ने उसे बत्ती बुझाकर सो जाने कहा। इस प्रकार ४-३-८२ को मेरे भांजे की सद्गति हुई।

ऐसे कर्कश एवं कलहपूर्ण वातावरण में, मुझ आश्रित में, यह अपार शक्ति, विचार मात्र गुरु कृपा ही रही इस तरह उपरोक्त गुरु वाक्य मंत्र स्वरूप पूर्णतः सत्य हुआ।

आज मेरा पूरा परिवार गुरुजी की शरण में है। इसी प्रकार दूसरी घटना सन् १९८४ में, गुरुदेव की अनुमति से पूरे परिवार के साथ (गुरुदेव के बड़े सुपुत्र श्री रुद्रमणी शर्मा एवम् बहुए व बच्चों सहित) महाराष्ट्र गुजरात एवं राजस्थान की यात्रा कर गुरु-पूर्णिमा के अवसर पर इंदौर पहुचना था, तब की है। सोमनाथ से द्वारिका जाते समय, राजकोट पहुंचने के पूर्व हमारी निजी मेटाडोर करीब ४-५ फीट के अन्तर पर आगे खड़ी ट्रक से टकराने वाली थी किन्तु अचानक ड्राइवर ने देखकर झटपट गाड़ी बांयी ओर से मोड़ी। रात्रि १० बजे का समय रहा होगा हम सबके होश-हवास उड़ गये। मै केवल गाड़ी के अंदर खड़ा होकर केवल यह देखकर रहा था कि हमारी गाड़ी सड़क छोड़ तिरछी कीचड़ पर धंसकर रुक गई। उतरकर देखने पर सभी को ज्ञात लगा। बाजू से ८-८ फीट की लम्बी कटीली घनी झाड़ियां थी। किसी को कुछ नहीं हुआ। क्योंकि ट्रक के आगे एक दूसरी ट्रक दांयी ओर तिरछी फंसी आगे वाले ट्रक में कोई सिगनल एवं लाईट आदि के न रहने से यह स्थिति बनी। हमारी गाड़ी के पीछे ट्रकों का तांता रुक गया। वे ही लोग हमारी गाड़ीको रस्सा बांधकर पीछे खींचे। जल्द ही यह कार्य हो गया। एवम् हमारी यात्रा सकुशल पुनः प्रारंभ हुई। यह मात्र गुरुदेव की कृपा ही थी कि हम सब सकुशल रहे। २५ दिन की यह यात्रा, छोटे - छोटे बच्चों के साथ बिना तकलीफ हंसी - खुशी के साथ संपन्न हुई।

सन् १९८६ में मेरा चौथा पुत्र कक्षा छटवी की वार्षिक परीक्षा में, विज्ञान पर्चे के दिन किसी प्रश्न का उत्तर न सूझने पर गुरुदेव का स्मरण आंख बंद करके करने लगा। गुरुदेव का सौम्य चेहरा स्पष्ट रूप से उसे झलका एवम् उसे उत्तर सुझाई पड़ा। शाला निरीक्षक ने उसे सोता समझ कर झिड़की दी। यह वह प्रसन्नचित घर आकर बतलाया।

यह हमारे पूरे परिवार का गुरु शरण में अनन्य श्रद्धा एवं विश्वास का है।

गुरुदेव के १४ वर्ष के सामीप्य में जिसे उनके ही शब्दों में वनवास संज्ञा है, अब मेरे जीवन में परिवर्तन मै स्वतः अनुभव करता हूं।

मेरा परिवार गुरुदेव की शरण में नतमस्तक है एवं गुरुदेव से बारम्बार उत्कृष्ट प्रार्थना - याचना है कि हमें अपने शरण में ही स्थान देकर हमें आध्यात्मिक प्रगति का स्नेहिल आशीष प्रदान करें।

योगेश ठाकुर कांग्रेस भवन के
हनुमान मंदिर के पास ढीमरपारा
दुर्ग [म. प्र.] ४९१००१

स्नेहिल

अनुभव

परमपूज्य गुरुजी के सानिध्य में जीवन के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण का विकास हुआ है। उनके सानिध्य में आने के पूर्व मै अपने सुपुत्र चि. अशोक कुमार द्विवेदी के बुरी संगत में पड़ जाने से व्यथित होकर उनसे अलग हो गया था। गुरुजी के दर्शनार्थ जब मैं गुरुजी के दर्शनार्थ जब में मुंगेली गया तब गुरुजी ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा था – सब ठीक हो जाएगा।

इसके तत्काल पश्चात् चि. अशोक के जीवन में परिवर्तन आया, दुर्व्यसन छोड़ वह सत्मार्ग में लग गया एवं दिनांक २२-२-८७ को उसे एक पुत्र - रत्न भी प्राप्त हो गया।

दूसरा एक उदाहरण यह भी है कि दिनांक ७-२-८७ को रात्रि सुख की नींद ले जब सुबह मै सोकर उठा तो दस्त की शिकायत हुई कुछ घन्टे के उपरान्त लगातार उल्टी होने लगी। कुछ घंटे करीब ६ बजे तक यह क्रम चला, डाक्टर से सम्पर्क करने के लिए सोच ही रहा था कि मेरे शरीर का तापमान लगातार गिरने लगा। निरंतर कमजोरी बढ़ रही थी कुछ देर में ही मै चेतना खोकर, गिर पड़ा था। लोगों ने मरणासन्न जानकर अस्पताल में भर्ती करा दिया। दिनांक ११-२-८७ को कुछ चैतन्य होने पर मै छुट्टी लेकर घर आ सका बेचैनी व नींद न आने के आलम में मुझे गुरुजी के दर्शन हुए उनकी प्रेरणा के वशीभूत एक स्तोत्र का पाठ किया। फिर चेतना खोने की स्थिति उत्पन्न होते ही, गुरुजी ने मेरे सिर पर हाथ फेरा, मैं गहरी निद्रा में उतराने लगा उनका वह स्पर्श अविस्मरणीय सुख की अनुभूति थी।

मेरी २ भतिजियों एवं एक भतीजी का विवाह गुरुजी के बिलासपुर प्रवास के दौरान डा. पांडे के यहां ठहरे थे गुरुजी के आशीर्वाद स्वरुप, शीघ्र ही सम्पन्न हो गया जिसके लिए मै लम्बे समय से चिंतित था। गुरुजी की अनुकम्पा एवं कृपा से हम सब सानंद है। उनके चरणों में मेरा शत २ एवं दण्डवत प्रणाम।

एम. पी. द्विवेदी

प. पू. गुरुजी से दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जीवन में नित चैतन्य एवं नवीन अनुभूतियों का क्रम अभ्यास के साथ २ बढ़ता गया है, दीपावली के दिन प्रात: तीन बजे अभ्यास कर शवासन में लेटे २ मुझे गहरी नींद आ जाने पर मैने अनुभव किया कि मै हरि ॐ बोल रही हूं। पश्चात मुझे गुरुजी के दर्शन उन्हें प्रणाम करने के बाद मुझे बाल सौम्य सूर्य के दर्शन हुए।

हमारे घर के पीछे रहने वाले स्व. ससुरजी श्री आबाजी के मित्र श्री मुठाल को जो हार्ट पेशेंट थे, अचानक एक बार हृदयाघात की शिकायत होने पर वे मूर्छित एवं काष्टवत हो घर में पड़े हुए थे। शोर होने पर वहां पहुंचकर जय गुरुदेव २ ऐसे मन ही मन उच्चारण के साथ मै उनके छाती पर हाथ फेर रही थी कुछ ही देर बाद, गुरुजी की कृपा से उनकी चेतना वापस लोट आयी और वे स्वस्थ हो गये। इस अनुभव के साथ ही गुरुजी द्वारा किए गये जीवन रक्षा के फलस्वरुप उनपर मेरी आस्था दृढ़ होती चली गई, एवं उनकी कृपा से मेरा जीवन अंत तक सफल रहे, यही गुरुजी के चरणों मे मेरी प्रार्थना है।

सौ. शालिनी काण्णवं
साई बाबा मंदिर के सामने
वर्धा – ४४२००१

गुरूदेव का सानिध्य एवं अनुभूतियां

माता – पिता से धार्मिक प्रवृति विरासत में मिली, जिसमें सगुण के साथ निर्गुण का समावेश था। छोटा परिवार दोनों पुत्रियों के विवाह के पश्चात केवल मै और पत्नी ही रह गये।

सांसारिक जीवन से ज्यादा लगाव न होने के कारण, ध्यान की ओर पहले से ही आकृष्ट थे, किन्तु बिना किसी लक्ष्य के, क्योंकि जिन लक्ष्यों से साक्षात्कार हुआ कभी भी स्थिरता नही प्राप्त कर सकें। जीवन में बहुत महापुरुषों का सानिध्य मिला, किन्तु स्थिरता कभी भी नहीं मिल सकी।

इसी बीच श्री योगेश ठाकुर जी से चर्चाएं होने लगी, जो मेरे साथ ही मेरे आफिस में, कार्यरत है। जून ८३ में उन्होंने श्री गुरुजी की पुस्तक A D p In to Devine Confluence पढ़ने को दी। वह शैली चूंकि मन के विचारों से काफी समानता रखती थी, अपनी ओर आकृष्ट कर गई, व कुछ जानने की इच्छा को जागृत किया। शून्य में ध्यान की क्रिया चालू थी ही, किन्तु स्थिरता का अभाव – बोध होता था।

अक्टूबर ८३ में ताजिया का जुलूस जा रहा था। मै और मेरी पत्नी अपने क्वार्टर से, वह दृश्य देख रहे थे। एकाएक, मेरी पत्नी को महसूस हुआ कि "प्रकाश का एक गोला" ताजिया से निकलकर आया व उनकी बांह में प्रविष्ट हो गया।" उसके कुछ दिनों बाद, परिवार में एक सदस्य की मृत्यु ने हमारे जीवन को हिला दिया। पत्नी की मानसिक स्थिति भी कुछ विक्षिप्त सी हो गई।

जनवरी २६, १९८४ को श्री गुरुजी से, श्री योगेश ठाकुर जी के माध्यम से, प्रथम दर्शन हुए। मेरी पत्नी की दशा के कारण व परिवार में हुई क्षति से विचलित, हमारे मन को, उनके द्वारा एक घंटे की चर्चा ने बहुत धीरज दिया। उनके आदेशानुसार एवं मार्ग दर्शन में कार्यरत रहने से मेरी पत्नी को, जो सारे शरीर में जलन की अनुभूति होती थी, शांत हुई। उसी दिन से, श्री गुरुजी पर अगाध, श्रद्धावश, उन्हे पथ – प्रदर्शक मानकर नित्य ध्यान चालू रखा। चैत्र नवरात्री पर पत्नी की स्थिति, फिर से विक्षिप्त हो गई, एवं पूरे नवरात्री भर उन्हे एक प्रकार की तन्द्रा सी बनी रही। नौ दिन बिना निद्रा के रह कर, व दुर्गाजी के दर्शन की अनुभूति चलती रही। गुरुजी को पत्र के द्वारा सूचित भी किया। इसके बाद एक दिन मुझे स्वप्न में गुरुजी के दर्शन हुए। उन्होंने मुझे व मेरी पत्नी को एक बग्घी में बैठाकर कोचवान को हमें गंतव्य तक पहुंचाने का निर्देश दिये। कुछ दिनों बाद, गुरुजी का सांत्वना भरा पत्र आया। फिर मेरी पत्नी का भी मानसिक संतुलन वापस आया। "गुरु पुर्णिमा पर्व" पर मुंगेली गये, तब गुरुजी से चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि पृष्ठ – भूमि मजबूत होने से ऐसी अनुभूति शीघ्र मिलती है, जो बहुत कम लोगो में ही होती है।

इसके पश्चात् श्री गुरुजी से साक्षात्कार होते रहते है। मन अब स्थिर एवं प्रसन्न रहता है।

मुझे अपने को चुंकि कोई प्रकाश के दर्शन नही हुए, किन्तु चित्त में आनन्द हमेशा बना रहता है। ज्ञानेश्वरी गीता व भागवत को एकाधबार कभी पढ़ा था, जिससे प्रेम व आनंद, कर्तव्य के साथ समाहित करने की आस्था बन गई है और उसी मार्ग पर आनंद की अनुभूति करते हुए जीवन चल रहा है। प्रकाश से साक्षात्कार न होने के कारण, न तो कोई क्लेश होता है और न हीनता ही मालूम पड़ती है। कुछ समय पूर्व गलत स्थान का खाया – पीया पदार्थ शरीर को कष्ट देता था, किंतु अब उसकी भी अनुभूति

अनुभव

प्रिय गुरुबंधु सादर गुरुचरण स्मरण। आपका पत्र मिला। पूज्य गुरुजी एक कथा सुनाते हैं सुतीक्ष्ण को उनके रामजी के साथ यात्रा के समय क्या कथा कहें यह बात उठती है। निर्णय होता है कि आप बीती कही जाय जो सानुभूत एवम् सत्य होती है। अतः मैंने लेख हेतु अपनी स्मृति को टटोला, अनुभवों का अवगाहन किया कहीं से कुछ ऐसा न प्राप्त हुआ जिसे लिखा जा सके जिससे गुरुबंधुओं या जिज्ञासुओं को लाभ हो।

मेरी स्थिति ectra ordinary ordinary शिष्यों की है. अतः मैं लिखने या बोलने की क्या धृष्ठता करुं एक ही बात बार बार कही या लिखी जा सकती है वह है असीम गुरुकृपा एवम् स्नेहाशीष। इसकी वर्षा सभी शिष्यों पर समान रुप से हो रही है।

सादर

डा. रघुनाथ प्रसाद पांडेय

प्रोफेसर एवम् विभागाध्यक्ष फिजियालाजी

एस. एस. मेडिकल कालेज रीवा

प. पू. श्री गुरुजी से मैंने दिनांक २७.४.१९८२ को दीक्षा मिली। तब मेरी जीवन नौका दिशाहीन थी, लेकिन दिक्षा के बाद जीवन का एक उद्देश्य निश्चित हो गया। मै संगीत में रुची रखता था, इसलिये इन्द्रपाल सिंग चंद्रेल से मेरी मैत्री हो गयी, मैत्री के कारण उन्होंने अपनी व्यथा बतायी, कि मै विशारद हूं मेरी गाने की प्रगति किसी को भी अच्छी लगी नहीं, उन्होंने कुछ अघोरी प्रयोग मेरे ऊपर किया तब से मैं पूरा गाना नहीं गा सकता मै पागल जैसा हो जाता हूं यह स्थिति सुनकर और देखकर मुझे अच्छा लगा नहीं, मैं सोचने लगा, इसकी कोई दवा नहीं है, इसलिये मैंने पू. गुरुजी का चरणा - मृत उसको पिला दिया। उस दिन से वो अच्छा हो गया, वो अभी नंदूरबार में संगीत शिक्षक की नौकरी करता है। पू. गुरुजी ने बताये हुये योग मार्ग पर शनैः शनैः चल रहा हूं, अवश्य ही गंतव्य तक पहुंचूंगा।

राजू श्रीधरराव कण्णव

साई बाबा मंदिर के सामने

(शेष पृष्ट ३४ आगे का)

नहीं होती, क्योंकि गलत - सही की अनुभूति समाप्त सी होती जा रही है। संसार एक स्टेज सा मालूम पड़ता है, जिसमें इंसान कर्ता के द्वारा निर्धारित कार्य, करता रहता है। कारण उसका मन जबरदस्ती अच्छे - बुरे का विश्लेषण करके, सुख - दुख की अनुभूति करता है।

श्री गुरुजी के चरणों में एकाग्रता रहे, ऐसी ही इच्छा है। मन शांत बना रहे। यह जानने की साध नहीं है, कि आध्यात्मिक मार्ग हम आगे की मंजिल की ओर बढ़ रहे हैं अथवा पीछे की ओर जा रहे है। केवल आनंद की प्राप्ति हो - यही कृपा बनी रहे।

विनोद शंकर पंड्या

दिनांक २५/५/८७

(व्ही. एस. पंड्या)

मोतीलाल नेहरु नगर

भिलाई नगर (म. प्र.)

– अनुभव –

परम पूज्य गुरु जी से आध्यात्मिक दीक्षा लेने के बाद मुझे मानसिक शान्ति तथा कुशलता के अनुभव का आनन्द मिल रहा है। वर्तमान में मुझे जो अनुभव हुये उनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है।

एक दिन मै सुबह उठा स्नान के बाद प्रतिदिन की तरह गुरु जी के फोटो के पास अगर बत्ती जलाया तथा गुरु जी का कुछ समय तक बैठ कर ध्यान किया बाद में उठकर बाहर गया किन्तु मुझे बाहर अच्छा नहीं लगा और मैं तुरन्त करीब ८.३० बजे घर मे आकर चारपाई में लेट गया तथा आंख बंद कर गुरु जी का ध्यान करने लगा कुछ समय बाद मुझे एक सुन्दर स्वर्ण मय चमकता हुआ रथ जिसमें दो सुन्दर सफेद घोड़े बंधे हुवे थे तथा उस रथ में एक सजी मूर्ति किरीट मुकुट सिर मे लगी जो कि मेरी तरफ ही देख रही थी बैठी दिखाई दी। रथ मेरी तरफ आ रहा है और उसे मैं अच्छे से देखने का अनुभव कर रहा हूं। रथ जैसे ही मेरे पास बिल्कुल करीब पहुंच कर रुका और मैं उस सजीव मूर्ति को पूर्ण रूप से पहचानने की कोशिश किया उसी क्षण उस मूर्ति से हजारों वाट के बल्ब का प्रकाश निकला और वह पूरा दृश्य प्रकाश में बदल कर समाप्त हो गया तथा उस समय हृदय में काफी धड़कन बढ़ गई। मैं दृश्य को देखने के लिये फिर से और समय तक पड़ा रहा किन्तु इसके बाद कुछ दिखाई नहीं दिया। उठने पर मुझे बहुत ही स्फूर्ति तथा आनन्द का अनुभव हुआ।

गुरुजी के निर्देशानुसार मैं गुरुजी का ध्यान करता हूं तो मेरे सामने सफेद प्रकाश दोनों भौहों के मध्य में दिखाई देता है और वह प्रकाश में मेरे चारों तरफ फैल जाता है तथा उस प्रकाश में मै विलीन हो जाता हूं कुछ क्षण तक मुझे अपने शरीर का ही अनुभव नहीं होता किन्तु जैसे ही फिर से शरीर का अनुभव होता है उस समय शरीर इतना हल्का तथा आनन्द का अनुभव होता है कि जिसका वर्णन ही नही किया जा सकता।

भौतिक कार्य भी जो जीवन को सुखमय रख सके उन पर उत्पन्न बाधा का सामना भी गुरु कृपा से अपने आप होता है, मेरा पुत्र मनीष जो कि 8 वर्ष का है गत वर्ष 1.9.86 को बिलासपुर में उसका एक जीप से शाम 6 बजे एक्सीडेन्ट हो गया लड़का जीप के सामने पहुंच गया तथा अन्दर अगले चके के पास गिर गया। ड्रायवर के द्वारा जीप का ब्रेक लगाकर जीप रोक दी लोगों के पुकार लगाने पर कि बच्चा जीप से कट गया जीप ड्रायवर जीप को आगे न ले जाकर पीछे को बैक किया तथा जीप को लेकर भागा तथा और सिविल लाइन बिलासपुर में ले जाकर रिपोर्ट किया कि मुझसे एक बच्चे का एक्सीडेन्ट हो गया है। शायद बच्चा जीवित नहीं है। यह भी मेरे गुरु कृपा ही थी कि यदि ड्रायवर जीप को पीछे घुमाकर न भागता तो जीप के दोनों चके बच्चे के सीने से निकल जाते। बच्चे को चोट काफी थी जिसे लोगों के द्वारा तत्काल मेन हास्पिटल बिलासपुर ले जाया गया बच्चा सीरियस था उसे खून की भी उल्टी हुई। हेड इन्जुरी थी सीने में काफी दर्द था स्वांस लेने में काफी परेशानी थी आक्सीजन गैस दी जा रही थी। मुझे मै डा. श्री गिरीश पान्डेय जो कि अपने गुरु परिवार में है को जाकर पूरी घटना बताया। डा, पान्डेय आकर बच्चे का निरीक्षण किये बच्चे की हालत सीरियस देखकर मुझे सांत्वना देकर एक दवा जो कि होमियोपैथिक थी अपने क्लीनिक से श्री अनिल धई द्वारा ले आने के लिये एक परची दिये मै परची ले जाकर श्री धई को दिया दवा तत्काल श्री धई के द्वारा डा पान्डेय के पास ले आकर उनके द्वारा बच्चे को एक खुराक दवा दी गई और दूसरी खुराक 6 घन्टे के बाद देने को बताये. बच्चा आंख बन्द किये पड़ा था उसे खून की बोतल लगी थी करीब 3 बजे बच्चा आंख बन्द किये ही मुझसे बोला

– अनुभव –

सर्वप्रथ मैं महायोगी भगवान् श्री सद्‌गुरुजी के चरणों में अपना मस्तक रगड़ते हुए यह प्रार्थना करता करता हूं कि उनके चरणों की सेवा सदा मेरे द्वारा होती रहे। जिससे वो मेरे परिवार का आत्म कल्याण होता होता रहे, एवं हमारा जन्म सार्थक हो।

योगचर्या के वैज्ञानिक महत्व की तुलना हम कम्प्यूटर से कर सकते हैं, जहां २१ वीं सदी में प्रवेश करने का जो विषय चर्चित है, मै तो यह विचार रखता हूं कि योग योग चर्या से ही यह अधिक सुगम है, क्यों कि यदि राष्ट्र की प्रगति चाहनेवाला, राष्ट्र निर्माण में लगे लोग अगर योग साधन में रत रहे तो प्रत्येक नागरिक का, समाज का, राष्ट्र का व पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव है।

कुंडलिनी की वैज्ञानिक विवेचना मे एक पू श्री सद्‌गुरुजी के शिष्य एवं सचिव (Secretary) होने के होने के नाते इस प्रकार कर सकता हूं कि कुंडलिनी जागृत होने के बाद हर क्षण हर घड़ी साधक की, शिष्य की रक्षा कोई शक्ति करती,है, जो केवल श्री सद्‌गुरुजी ही हैं। किसी को यदि कुंडलिनी को फोटो के रुप में समझना है तो तीर्थंकर के फोटो के पीछे माथे के ऊपर सर्कल या गोला रहता है।

आज ता. 15 12 86 को ही सुबह एक अनुभूति हुई, जिसे श्री पू. सद्‌गुरुजी को पत्र द्वारा लिखकर सागर साज प्रेषित किया हूं। अनुभूति इन्ट्यूशन भी समय में मुझे होते रहते हैं। मै तो इतना ही मानता हूं कि ये सब मुझे वो हमें श्री महायोगी भगवान श्री वासुदेव जी द्वारा प्रदत्त हैं, हम सब उनके द्वारा प्रकाशित हैं।

समय-समय पर श्री पू. सद्‌गुरुजी के दर्शन मुझे होते रहते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व मुंगेली में एक परिवार में एक दुर्घटना हुई थी, मुझे दुर्घटना के कुछ दिन पूर्व वह परिवार याद आता इन्ट्यूशन बार-बार होता एक्सीडेन्ट, एक्सीडेन्ट की शाम को आश्रम से आ कर भोजन कर रहा था, तो मालूम पड़ा दुर्घटना हो गई। ये सब पूर्वाभास हैं, जो अच्छी भावना से श्री पू. सद्‌गुरुजी की निरन्तर सेवा से प्राप्त होती है।

प्रकाश चन्द्र पारेख

सचिव योग साधना मुंगेली

(पृष्ठ ३६ से आगे)

कि पापा जी मुझे गुरुजी वाली दवा खिलाइये। बच्चे के द्वारा गुरुजी का नाम लिये जाने पर बगैर समय की प्रतीक्षा किये मै डा. पान्डेय द्वारा दी गई दवा को बच्चे के मुंह में डाल दिया। बच्चा आंख बन्द किये पड़ा था घड़ी के मुताबिक मात्र 10 मिनट में बच्चे ने आंख खोली और मेरी तरफ देखकर बोला पापा गुरु जी की दवा खाने से मेरे सीने का पूरा दर्द खत्म हो गया तथा स्वांस लेने में भी तकलीफ नहीं है बच्चा उस समय से स्वस्थ्य महसूस होने लगा उस समय नर्स आकर देखीं और बोली कि अब बच्चा खतरे से बाहर है केवल घाव बचे है वह तो ठीक हो जायेगा मै पूरी स्थिति जाकर डा. पान्डेय को बताया उनके द्वारा यह कहा गया कि मेरी मात्र दवा ही नहीं थी उस दवा के साथ एक शक्ति गुरु जी की कृपा थी जो कि मात्र दो खुराक दवा के बाद ही बच्चे को लाभ हुआ आप गुरुजी पर आस्था रखे अब ठीक रहेगा। मै बंगले जाने पर करीब एक घन्टे उस बच्चे के लिये गुरु जी का स्मरण किया था मुझे मालूम था कि बच्चा ठीक हो गया होगा।

श्री मिश्री लाल पान्डेय

वायरलेस हेड आपरेटर

रेडियो स्टेशन, बिलासपुर (म.प्र.)

॥ सत् गुरुवे नमः ॥

प. पू. आदरणिय गुरुजी,

शिसाष्टांग दंडवत –

मुझे तथा अन्य लोगों को प. पू. गुरुजी द्वारा जो लाभ हुये हैं वे नम्रतापूर्वक स्मरणिका के लिए आपको समर्पित करता हूं।

मेरी मझली पुत्री ग्राम कलालखंडा जि. नागपुर से दि. २५.६.८२ को एक विवाह में सम्मिलित होने वर्धा आई थी। एक दिन उसका पुत्र एक चौराहेपर पिपल के वृक्ष के निचे अचानक गिर गया। उसी दिन से उसको तेज बुखारने पकड़ लिया। वर्धा से वे अपने ग्राम वापिस जाने के उपरान्त उन्होंने उसकी प्रकृती बड़े से बड़े डॉक्टरोंको बताई नागपूर तथा काटोल में अच्छे डॉक्टरो से चिकित्सा करवाई चार माह तक दवाईया दी गई। सुधार आने बजाय प्रकृति आस्त बिगड़ती गयी। मांत्रिको का कहना पड़ा की भूत प्रेत की बाधा है और इसे दवासे फायदा नही होगा। प्रकृति अती गंभीर होने पर मुझे पत्र देकर तुरंत बुलाया गया। मैने पहुचने के बाद देखा की उस लड़के को १०२ – १०३ डीग्री बुखार था मेरा एकादशी का व्रत था। मैने चरणामृत डालकर पानी भरकर ग्लास रख दिया। प. पू. गुरुजी की छबी आखो के समक्ष लाई और ध्यान में बैठ गया। ध्यान के उपरांत मैने प. पू. गुरुजी से प्रार्थना की भूत प्रेत बाधा से इस बच्चे को छुटकारा दीजीये। मैंने गुरु मंत्र का उच्चारण करके पानी के छींटे उस लड़के के मुखपर मारे और बचा हुआ पानी पीला दिया आश्चर्य की बात है कि प. पू. गुरुजी के कृपा से चार माह का पुराना बुखार उसी दीन से निकल गया लड़का स्वस्थ हुआ और दूसरे ही दिन से उसने थोड़ा थोड़ा भोजन करना शुरु किया।

दूसरी अनुभूति इस प्रकार की है की मेरे बालमित्र का पुत्र जिसकी उम्र चौविस वर्ष की है जो रिझर्व बैंक, बंबई में नौकरी करता है। छुटी लेकर वर्धा आया। मुझे कहता था की उसे भ्रमिस्ट जैसा लगता है क्या करता है कहां जाता है उनको कुछ सुझता नही क्या बोलता वह भी सुझता नही। मैंने उसे प. पू. गुरुजी का चरणामृत दिया और कहा के " वासुदेवाय नमः " का जप करके अगरबती लगा देना और रोज चरणामृत लेते जाना। उसने यह क्रिया शुरु किया। मैने भी प. पू. गुरुजी से प्रार्थना करी की उसे अच्छा किजिये। आज वह लड़का स्वस्थ है नौकरी कर रहा है और स्वस्थ है।

तिसरी अनुभूती मेरी स्वतः की है की मुझे सन १९७० से लो ब्लड प्रेशर की शिकायत थी डॉक्टरो से उपचार करवाया। आराम नहीं था। दिक्षा लेने के बाद एक दिन प. पू. गुरुजी ने स्वप्न में आकर कहा की सब ठीक हो जाएगा। मेरी यह बिमारी कब निकल गयी मुझे पता नही। आज मैं स्वस्थ हूं।

मेरा एकादशी का व्रत शुरु था, यह माह डिसेंबर ८६ की घटना है। मैं शवासन में था मंत्रोच्चारण करते हुये ध्यान में था। अचानक एक पांव कहीं से आया और मेरे पांव को स्पर्श करके मेरा पांव दबाने लगा मैं घबरा गया। अचानक मेरा पांव अपने आप तेजी से उठा और उस आये हुए पांव पर जोर से मेरी लाथ मारी गयी। और मेरा ध्यान उतर गया प. पू. गुरुजी वर्धा मेंही उपस्थित थे मैंने उनसे बताया प.पू. गुरुजी कहने लगे की तुमने भी जिसे लात मारना था " मैंने भी लात मारी यह बताने के उपरांत " प. पू. गुरुजी ने कहा की वह बला थी। वह भाग गयी " उस दिन से मेरा पूर्ण संकटो से छुटकारा होना शुरु हुआ।

दिक्षा लेने के बाद मुझे सर्व संकटो से छुटकारा मिला और मेरे काम बनते चले गयें किसी भी प्रकार का संकट आने के बाद मै भयभित नही होता और मुझे पूर्ण भरोसा रहता है की प. पू. गुरुजी पास है और वे हि मुझे छुटकारा दिलवाएंगे।

विनम्र सत्गुरु चरण में समर्पित

आपका नम्र

(उ. म, कुटमोट पोलिस स्टेशन के पास मेनरोड वार्ड नं. १
वर्धा ४४२००१

– अनुभव –

जुलाई 1984 में मै डा. गिरीश पान्डेय जी के सम्पर्क में आया जब उन्होंने हमारे घर में अपना क्लिनिक चालू किया। रोज शाम वे आकर यहां बैठने लगे। उनके साथ छोटे भाई सतीश के अलावा अनील श्रीवास्तव, राहुल बाजपेयी वैगरह भी रोज बैठक करते थे। आरंभ में तो कुछ समझ में नहीं आता था कि ये लोग किस संदर्भ में बाते करते हैं। मैं भी कुछ देर बैठा औरचला जाता। कुछ दिनों पश्चाश्त मुझे मालूम हुआ कि डा. साहब होम्योपैथी दवाए भी लोगों को लिखकर देते हैं। चूंकि कुछ वर्षों पूर्व मै भी होम्यो–पैथी कालेज में इसकी शिक्षा ले चुका था,लेकिन अधुरी, मुझे भी थोड़ा बहुत होम्योपैथी का ज्ञान था। सो अब मै रोज शाम डा. साहब के साथ बैठने लगा। कुछ दवाईयां भी क्लिनिक में रख ली। इस तरह अब तो रोज ही डा. साहब का साथ रहने लगा। उनकी अध्यत्म पर होने वाली चर्चाओं में भी रूची होने लगी धीरे धीरे यह रुचि बढ़ने लगी और इस संबंध में और गहराई में जाने और जानने की इच्छा दृढ़ होती गयी।

और मार्च 1985 को मैने डा. साहब से दीक्षा ली। इसके पश्चात तो ध्यान करने में जो आनंद मिलने लगा वह शब्दों मे समझाना नामुकिन है। अपने अंदर कुछ परिवर्तन सा महसूस करने लगा। आरंभ में यह परिवर्तन खुद को भी नहीं समझ में आता था लेकिन लगता था कि कुछ है जरुर। दीक्षा लेने से पहले मुझे क्रोध बहुत आता था। जब तब किसी भी बात पर चाहे बात कितनी ही छोटी क्यों न हो मुझे क्रोध आ जाता था लेकिन आज मै निश्चित रुप से कह सकता हूं कि अब क्रोध कभी कभी आता है किन्तु नहीं के बराबर।

एक सुबह जब मै ध्यान में बैठा था कुछ समय बीत जाने पर मुझे ऐसा लगा कि कमरे का दरवाजा खुला और सूर्य का प्रकाश कमरे के भीतर आया उस प्रकाश में से छड़ी लिए हुए परम पूज्य गुरुजी बाहर निकलकर आए और देखते ही मै संज्ञा शून्य हो गया। कुछ देर पश्चात आनंद की अनुभूति अपने आप होने लगी।

एक बार किसी कार्यवश मै अपने छोटे भाई के कमरे में गया वहां रखी पूज्य गुरुजी की फोटो पर ज्यों ही मेरी नजर पड़ी वह फोटो अचानक गाढ़े नारंगी रंग में आलोकित दिखने लगी। मैंने जानबूझकर कुछ क्षण पश्चात जब दोबारा फोटो पर दृष्टिपात किया वह पुनः अपने श्वेत श्याम रंग में दिखने लगी।

अभी कुछ दिनों पहले मै दोपहर में विश्राम कर रहा था। स्वप्न में गुरुजी के दर्शन हुए और कुछ वार्तालाप भी हुआ अचानक गुरुजी ने मेरी छाती और पेट पर हाथ फेर दिया। इस स्पर्श की अनुभूति से मेरी नींद टूट गई लेकिन वह अनुभूति उसी स्थान पर बहुत देर तक बनी रही जिसका कि मैने स्पष्ट अनुभव किया।

मेरे पिता की मृत्यु के पश्चात हमारी आर्थिक स्थिति, विशाल अचल संपत्ति होने के बाद भी बुरी तरह से डांवा डोल थी जिसका कि निराकरण का कोई भी रास्ता नहीं सूझ रहा था। परम पूज्य गुरुजी के संपर्क में आने के बाद इस स्थिति में एक चमत्कारिक परिवर्तन आया और अब स्थिति शनैः शनैः लोगों की सहायता से काबू में आती जा रही है। इस प्रक्रिया में बीच बीच में मुझे परम पूज्य गुरुजी का निर्देश भी प्राप्त होता रहा। बाधाएं एवं विघ्न किसी न किसी रुप में अपने आप समाप्त होती जा रही है।

विषम पारिवारिक परिस्थियों के कारण मै

— अनुभव —

अनन्त श्री विभूषण गुरुजी के शास्वत कृपा अनुग्रह एवं निरन्तर आशीष के फलस्वरूप ही जीवन का प्रतिपल, प्रतिक्षण पूर्वापेक्षा अधिक उन्नत प्रतीत होता चलता है। दो वर्ष पूर्व दीक्षा के उपरान्त से लगभग प्रतिदिन तेजी से घूमता घटना चक्र, विचार, भाव एवं आचरण में परिवर्तन, सद्गुरु की महती कृपा एवं आशीर्वाद के बिना एक सामान्य श्रेणी के, मुझ जैसे व्यक्ति के जीवन में कदापि ऐसी उतकृष्ट अनुभूतियां नहीं हो सकती थी, जिन्हें प्राप्त करने के लिए सामान्य चेतनाको संभवतः हजारो वर्ष लग जाते हों।

जहां तक सांसारिक जीवन का प्रश्न है, उसमें उन्मुक्तता एवं मृत्युपरक दुर्घटनाओं से रक्षा, दैनिक सामान्य जीवन में प्राप्त होने वाली सफलताएं, सद्भावनाएं एवं परिपूर्णता की ओर निरन्तर विकास, यह सब सद्गुरु की असीम कृपा का ही परिणाम है। जीवन क्रम में आने वाले उतारचढ़ाव एवं सुख–दुख, वाक्य में आने वाले शब्द चित्रों के समान हैं, फिर भी गुरुकृपा के सम्बल के बिना,– घटित होने वाले उतार–चढ़ाव के प्रति निरपेक्ष अन्तर्दृष्टि का विकास कैसे हो सकता है?

कभी कभी और प्रायः वृत्ति संचालितमनोविकारों-आवेग स्वाभाविक है, क्रोध, अहं यह पीछा मुश्किल से छोड़ते हैं, लेकिन गुरुकृपा से संयत होने में सफलता मिल जाती है, मेरी धर्मपत्नी श्रीमती मंजुला जी ने भी दीक्षा प्राप्त कर ली, गुरुजी हमारे विचारों एवं वार्तालाप के क्रम में निरन्तर बने रहते हैं, हमारे पारिवारिक एवं आत्मिक जीवन का प्रत्येक क्षण उनकी सेवा एवं उनके महती उद्देश्य के प्रति समर्पित हो, हम अपने आपको जानने के क्रम में निरंतर सफलतापूर्वक आगे बढ़े, गुरुजी से इसी एक प्रार्थना, चरणवंदना एवं आकांक्षा के साथ, आप सबका अरविंद।

श्रीमति मंजुला शर्मा **डा. अरविंद शर्मा**

सहा. प्राध्यापक

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

डी/८९विनोबानगर, बिलासपुर

(शेष पृष्ट ३९ आगे का)

1976 से आज तक करीब करीब रोज ही नशे के रूप में मदिरा सेवन करता हूं।

कभी कभी मै क्लीनिक में वार्तालाप के दौरान मैं इस नशे का सेवन कर लेता हूं आत्म विज्ञान की चर्चा हम अक्सर क्लीनिक में देर रात तक बैठकर किया करते है चर्चा के दौरान एक अनुभूति जो मुझे विशेष होती है उसमें रीढ़ की हड्डी से एक लहर सी उठकर सीधे सारे मस्तिष्क मेंफैल जाती है और आनंददायी नशा सा छा जाता है. यह स्थिति तब तक बनी रहती है जब तक कि बैठक समाप्त नही हो जाती। उक्त अनुभूति के समाप्त होने पर ऐसा लगता है कि मै और मेरा मस्तिष्क बिल्कुल हल्का हो गया है और किसी भी तरह का तनाव इन पर नहीं है। उल्लेखनीय बात ये है कि जब मै मदिरा के नशे में ऐसी चर्चा में शामिल होता हूं तब भी मुझे यह अनुभूति होती है। और इस नशे में और अनुभूति में मै स्पस्ट रुप से अंतर महसूस करता हूं और यह अनुभव अपने आप में एक अनोखा आनंद देता है लेकिन अब मैने यह महसूस किया है कि मदिरा पान करने में बिल्कुल रुचि नहीं रह गयी है तथा उससे जो लगाव वाली बात पहले थी वह समाप्त हो गयी है तथा मदिरा का प्रभाव भी मस्तिष्क पर पहले की अपेक्षा नगण्य रह गया है।

अनिल घई

गोंड़पारा बिलासपुर

बंधु – परिचय

१।१। अम्बिकापुर

१. नीरज नयन मिश्रा — राजस्वनिरीक्षक जनकपुर भरतपुर जि० सरगुजा
२. डा. दिनेश कुमार द्विवेदी — पी. एच. सी. विश्रामपुर अंबिकापुर
३. श्री नर्मदा प्रसाद मिश्रा — ए. एस. आई पौलिस लाईन अंबिकापुर

।२। अहमदाबाद

श्री अशोक आपटे — बी. ।। त्रिनेश्वर नगर पार्ट I रामपार्क–अहमदाबाद 380061

।३। अकोला

१. श्री वसंत राव जुनडे — मैनेजर युनाईटेड वेस्टर्न बैंक लि. अरोग्य देवीमंदिर खदान ब्लाक नं. 4 अकोला 444001 फोन 5600
२. जनाब मजहर खान — मोमिनपुरा, आकोट, अकोला
३. श्री सुधाकरचैसास प्राचार्य — गडुम प्लाटस अकोला
४. श्री टी. व्ही. कुलकर्णी — गडुम प्लास अकोला
५. श्रीमती लीला देवी द्वारा श्री डा. सुनंदा आवजे — महा. कन्या स्कूल के सामने बडारोड अकोला
६. श्री व्ही. आर. भिडे — मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव बिरला मंदिर के सामने जठारपेठ
७. श्री एम. एन. मोरगांवकर — पोंगे बाड़ा डा. कोठारी के पीछे जयहिंद चौक अकोला

।४। अल्मोड़ा

डा. के. डी. के कोरात्रे — डायरेक्टर विवेकानंद एग्रिकल्चर रिसर्च इन्स्टीट्यूट अल्मोड़ा उ.प्र.

।५। अनुपपुर

श्री. जे. पी. शुक्ल C/o के. पी. शुक्ला — जी. आर. पी. अनुपपुर रेल्वे स्टेशन एस. ई. आर.

।६। औरंगाबाद

१. श्री डी. एल. शर्मा — एन8, के 56 सिडको कार्नर जयबजरंग नगर औरंगाबाद 431001
२. श्री एम. एन. मोरगांवकर — सुपरिंटेंडेंट सेंट्रल एक्साईज बिल्डिंग नं. 9 घर नं. 39 हाऊसिंग बोर्ड कालोनी पीर बाजार के पास न्यू उस्मानपुर औरंगाबाद

।७। बुलढाना

श्री निनू भाऊ पलकी रिटायर्ड शिक्षक — कोठारी हायस्कूल नान्दूर रेल्वे स्टेशन जि. बुलढाना.

।८। बीड

श्री, डी. एस. अड्गांवकर — क्वा. नं. E-2/7 (old) T.R.S. colony परली बैजनाथ T-2 अंबाजोगाई जि. बीड महाराष्ट्र

इलाहाबाद

।९।

१. श्री पं. अमरनाथ द्विवेदी — ग्राम हथीगज पो. पुरावा खान तह करछना जि. इलाहाबाद
२. श्री जगदीश प्रसाद त्रिपाठी — 103 चौखंडी कीट गंज इलाहाबाद
३. श्री मोतीलाल शुक्ल — व्यायाम विभागाध्यक्ष श्री गौरी शंकर स्मारक संस्कृत महाविद्यालय श्रंगवेपुर इलाहाबाद
४. श्री शेषमणि शुक्ल — ग्राम किहुनी खुर्द पो. पवारी तह. मेजा
५. श्री बलदेव प्रसाद शुक्ला (शास्त्री) — संस्कृत महाविद्यालय प्रतापगढ़ गढ़ मुकाम बरौंहा पो. गाढ़ा त. मेजा जि. इलाहाबाद
६ श्री जगदीश प्रसाद तिवारी — मु. कालूपुरा पो. गाढ़ा त. मेजा
७. श्री राजकुमार पांडे — ग्राम पो. अरका जि. इलाहाबाद
८. श्री सनत कुमार तिवारी — प्रोफेसर कालोनी मेकेनिकल इंजिनियरिंग कालेज आर्फ टेक्नालार्जी पी. डी. आर. वाय. अदन
९. श्री चन्द्रकांत मटकीवाले — हरिकुंज मकान नं. 2-B--89/2 गीता ज्ञान निकेतन स्कूल के पास नयी बस्ती अल्लापुर इलाहाबाद
१०. श्री विध्यवासनी शुक्ल — ग्राम बरौंहा पो. आ. गाढ़ा त. मेजा
११. श्री बद्री प्रसाद मिश्रा — ग्रामलेतार पालिया पो. गाढ़ा तहसील मेजा जि. इलाहाबाद
१२. श्री शंभुनाथ शुक्ला — ग्राम बरौंहा पो० भागा त. भेजा
१३. श्री सदानंद तिवारी — ग्राम कालूपुरा पो० भागा त. भेजा
१४. श्री रामचतुर तिवारी ,, — ,,
१५. श्री विद्याकांत तिवारी ,, — ,,
१६. श्री पारसनाथ बामपुरापडि — मु. सुकुलपुरा पोस्ट गाढ़ा त. भेजा
१७. श्री. बद्री प्रसाद नाथूराम तिवारी — ग्राम सेमरिहा पो. कोराव त. भेजा. जि. इलाहाबाद.
१८. श्री राजेकुमार पांडेय — ग्राम पो. आ. अरका इलाहाबाद.

अमरावती

।११।

१. श्री मदन देशपांडे — बैंक आफ इंडिया जय स्तंभ चौक सामरा काम्पलेक्स अमरावती
२. श्री अनिल एस धर्माधिकारी
३. श्री अशोक श्रीधर धर्माधिकारी — ६८० वर्क शाप (ई.एस.ई) माफति ५६ एपीओ
४. श्री भास्कर देशपांडे — मुधोलककर पेठ अमरावती444601
स्टेट बैंक आफ इंडिया अमरावती टेलि. ३५६७ ६७ शारदा नगर अमरावती
५. श्री गुलाबचंद राम विलास लड्ढा — मातकनी जैन अमरावती, फोन ४४४६०१
६. श्री सी. एस. अडगांवकर — ५७ शारदा नगर अमरावती

१०।

बैंगलोर

१. श्रीमती एस शारदा राव अनुपमा इस्ट जयानगर — न. ६-२ मेन रोड़ बी ब्लाक बैंगलोर

११।

बाल्को

१. श्री चन्द्र प्रकाश वा.देवरस मैनेजर पी.पी.सी.डी — डी २ सेक्टर II बाल्को टाऊन शिप बाल्को ४९५६८४

१२।

बालाघाट

१. श्री ज्ञानचंद जैन — सुपरियर सेल्स सर्विस एम. पी. गैसडिलर हिन्दू पे. का. लि. मयुर बिल्डिंग मेन रोड बालाघाट

२. श्री महेश द्विवेदी — एस. डी. ओ. पी. एच. ई लांजी बालाघाट

३. चतुर मेहता — किराना दुकान सायकिल स्टोर्स बालाघाट म. प्र.

(१३)

भोपाल

१. श्रीमती डा. प्रतिभा प्रभाकर गुर्जर, — सुगंध ए/445 मानसरोवर कालोनी शाहपुरा भोपाल 462016

२. श्री कमलेश कु. माकोडे – ई-4-58 सी मुलभा-द्वारा डा. खान का बंगला बिट्टन मार्केट के पास अरोरा कालोनी भोपाल

३. बी.पी. तिवारी इंस्पेक्टर पोलिस — यु. डी. सी. आई. कालोनी जेल घाटी जहांगीराबाद भोपाल.

४. श्री दिलीप मराठे — निवास E 85 गौतमनगर आदर्श सोसायटी भोपाल 462023

५. डी. एल. शाह. एवं श्रीमती तेजकुमारीशाह — प्रेस प्रतिनीधि 112/9हाथी खाना भोपाल .

६. डा. श्री एस. डी. एन. तिवारी. — रिटा. चीफ कंजरवेटर फारेस्ट साम्य दिलीप प्रोफेसर कालोनी भोपाल-म.प्र.462002 टे. 75978

१४।

छतरपुर

श्री सोहन लाल वर्मा ब्रांच मैनेजर — बुंदेलखंड क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक बाजना पो. बाजना जि. छतरपुर

१५।

चित्तौडगढ़

१. गोविंदा आचार्य द्वारा शरद चंद्रआचार्य — लोहारा गली, प्रतापगढ़ जि. चित्तोड़गढ़

२. श्री दलवंत सिंह ,रानावत — ग्राम पो. महाराज की नेतावल म्हाजा सिहपुर चित्तोड़गढ़.312207

चंद्रपुर

१९६१

वसुंधरा बाई, अनुगांवकर	बोरकर का मकान सिविल लाईन चंद्रपुर
श्री एन.एस. गंवडे	मनु मिस्त्री के सामने गाजी बाजार बैंक आफ बरोदा चंद्रपुर

दिल्ली

१९७१

श्री आर. जे. भागवत	ई. सी. /19 रोहतक रोड, न्यू हिंद मार्ग नई दिल्ली.

धमतरी

१९८१

श्री रानूलाल जी बंगाली सूत व्यापारी	मेन रोड धमतरी जि. रायपुर

बिलासपुर

१९९१

श्री बसंत भासदेव	आफिसर स्टेट बैंकजिस उद्योग केन्द्र उहदंड बिलासपुर
श्री लक्ष्मण राव देशपांडे	हनुमान मंदिर के पास तिलक नगर
श्री एन. एम. देशपांडे	सहायक मंत्री जरहाभाठा बिलासपुर मुस्कार ध्यान १७ क्रिन्बी कालोनी से पीछे
श्री एन. एन. देशपांडे	काम्हेर गार्डन के सामने बिलासपुर
श्री गजानद राव देशपांडे	तिलक नगर बिलासपुर
श्री राहुल बाजपेई	ईदगाह चौक जूनीलाईन टेलि. ४००१, ३९४६
श्रीमती पुष्पा देवरस	टेलिफोन ३२७३ तिलक नगर बिलासपुर
यादव अमृतराव गोवर्धन टे ४७२०	तिलक नगर, बिलासपुर
प्रकाश यादव राव गोवर्धन	एडव्होकेट जरहाभाठा बिलासपुर
श्री अनिल पई, श्री सतीश पई.	गोडपारा बिलासपुर
श्री दिघ्रस्कर अरबिन्द कृष्णराव, ए. एस. एल. आर.	तिलकनगर बिलासपुर
श्री विकास देशपांडे	टिकरापारा बिलासपुर
श्री जगदीश गुप्त	उपयंत्री गनियारी आयकट उपसंभाग क्र. ४ काडा लोरमी ४९५११४
डा. बद्री जायसवाल	टे. ३५०४ – ४५२४, नेत्ररोग विशेषज्ञ नार्मल स्कूल रोड
श्री टी. आर. जयरामन	मेनेजिंग डायरेक्टर एस. ई. सी. एल. मुंगेली रोड बिलासपुर
डा. गिरीश पाण्डेय, श्रीमती डा. सुधा गिरीश पाण्डेय	टे. २१०० नेहरु बाल उद्यान के पास राजेन्द्रनगर, बिलासपुर

" नर्मदा प्रसाद त्रिवेदी	तिलकनगर बिलासपुर
" ए. के. कुरियन	प्रो. इंजिनियरिंग कालेज तिलकनगर बिलासपुर
" लक्ष्मी प्रदाद मिश्र, श्रीमती कला लक्ष्मीप्रसाद	ब्लाक नं. ९० धर्म प्रकाश की चाल सर्किट हाऊस रोड़ बिलासपुर
श्री सलील मिश्र, श्रीमती मंजू सलील मिश्रा	सर्किट हाऊस रोड बिलासपुर
श्री रघुनाथ डी. कुपटकर सौ प्रतिभा	धर्म अस्पताल के बगल से राजेन्द्रनगर
श्री दामोदर कुपटकर, सौ इंदिरा, कु. आशा कुपटकर	इंजिनियरिंग कालेज केंपस बिलासपुर
श्री एम. वी. ठाकरे	टिकरा पारा बिलासपुर
डा. आर. पी. श्रीवासन रिटा. सिविल सर्जन	रि. मेलड्रायवर टिकरापारा बिलासपुर
	तिलकनगर बिलासपुरटे. ४०८१
डा. बी. आर प्रधान एच. ओ. डी. फिजिक्स	गोवर्धन भवन नया सरकंडा राय सा. बनवारी लाल के घर के पास बिलासपुर
श्री ए. व्ही. राजू	लाईब्रेरियन इजि. कालेज बिलासपुर
श्री मिश्री लाल जी पांडेय	वायरलेस आपरेटर पुलिस लाईन बिलासपुर
श्री शरद शर्मा	सिनियर एम. आई. जी. के सामने टेलि. ५१५५नेहरूनगर
-श्री अनन्तपुरी गोस्वामी माताजी -श्रीमती दुर्गादेवी	ग्राम पंधी पो. पंधी
-श्री मेलनपुरी गोस्वामी सौ. डली मेलनपुरी	जि. बिलासपुर
-श्री समपुरी गोस्वामी सौ प्रमोद सुरपुरी	"
-रोशनपुरी	"
-श्री ईश्वरी प्रसाद चंद्रा	" सी. ओ.डी./4 विनोबा नगर बिलासपुर
-श्रीमती विमला तिवारी W/o रामखिलावन तिवारी	ग्राम. व. पो. कौसला व्हाया पामगढ़. बिलासपुर
-टी आर वैसवाड़े	रतनपुर बिलासपुर हायस्कूल के पास
-अतुल कुमार तिवारी वकील.	सी/ओ श्री लक्ष्मी प्रसाद मिश्र
डा. अरविन्द शर्मा प्रो.	डी/46 विनोबा नगर बिलासपुर
-श्री डी. आर. चित्रोलकर	साई डेयरी तिलक नगर बिलासपुर
-श्री गिरीश दिवान अडव्होकेट	मगारपारा बिलासपुर
-कु० ममता मुकुंद गोवर्धन	द्वारा ,,अशोक गोवर्धन मंदाकिनी कुदुरंड बिलासपुर सरकंडा बिलासपुर
-श्री नेताम	सहायक वन विस्तार अधिकारी चंडीपारा पामगढ़
श्रीराधेश्याम सिंह	जिला बिलासपुर.
	द्वारा " रघुनंदन भारती ग्राम-चंदरपुरी पो.
श्रीमती गीतादेवी	बंतलपुर जि. बिलासपुर
	फारेस्ट कालोनी पेंड्रा रोड बिलासपुर
-श्री ओ.पी. शर्मा रेंजर	दुर्गा मंदिर पेंड्रा
-श्री विद्याकांत तिवारी शास्त्री,	सरकारी हनुमान मंदिर के पास मु. पो.पसान
-श्री राधिका प्रसाद तिवारी	जि. बिलासपुर
	इंजि. कालेज कोनी बिलासपुर
-श्री हिदायत अली पी.टी.आई	

–श्री जी.डी.मोहगांवकर, गी. डी.डी. मोहगांवकर	द्वारा " कुपटकर, टिकरापारा बिलासपुर
–श्रीमती ऊषा जोषी,	"
–" गौतम सिंग	ग्राम हथकेरा पो० बावली बिलासपुर
–हरिप्रसाद पांडेय, शास्त्री,	सरकारी हनुमान मँदिर के पास मु. पो. पमान जि. बिलासपुर.
–" बी. पी. शुक्ला	सी/ओ. २६ विद्याउपनगर बिलासपुर.
–" एस. के शुक्ला सब इंजिनियर	सब इंजिनियर पी. एच. ई., पेंड्रा रोड़
–" अतुल कुमार तिवारी	एडवहोकेट रेस्टहाऊस के सामने पेंड्रा रोड़ बिलासपुर
–" प्रभात खरे	मेडिकल रिप्रजेन्टेटिव, जेकबचाल बिलासपुर म.प्र

१२०। दुर्ग भिलाई

श्रीमती प्रभादेवी तिवारी	मोतीलाल जैन के मकान के पीछे बेमेतरा तहसील. पो. बेमेतरा–दुर्ग
श्री आर. डब्लू. शर्मा	सेक्टर–७ गली ३३ एम. बी/ओ. सी.के-४ भिलाई
श्री योगेश ठाकुर	कांग्रेस भवन पंच हनुमान मँदिर के पास ढ़ामरपारा
प्रकाश मिश्रा	ए/८ पंचशील नगर दुर्ग
किशोर शंकर पड़रा	प्लाट न. २ ब्लाक २२ मोतीलाल नेहरू नगर (पूर्व) भिलाई 46(012
किशोर कुमार सी/ओ. स्व. विश्वनाथ मिश्रा	बढ़ईपारा दुर्ग
गजानन राव सोनी	भोईपारा दुर्ग
कु. कृष्णा गुप्ता प्रिंसपाल	जामुलवाड़ा दुर्ग.
राजेन्द्र सुंदर गुप्ता	बनियापारा दुर्ग.
ज्ञानचंद मेहता	द्वारा मेहता जनरल स्टोर्स धमधा पो. धमधा दुर्ग
श्रीमती गुरूचरण कौर	बल जेल रोड़ दुर्ग.
मोहन पुरी गोस्वामी	मु. पो. सोरार त० बालोद दुर्ग.

१२१। देवास

श्री. पी.के बाजपेईद्वारा के. मी बाजपेई	एरिया मैनेजर ट्राईबल वेलफेयर डिपार्टमेंट 118 मोतीबंगला देवास–4 5001
श्री. एम. एम. पिसाल	115 आनंदपुरा महेश टाकीजके पास

१२२। धुलिया

श्री व्ही. एस. जोशी	2 12 शिवाजी रोड़ मजूरबार जि. धुलिया.

१२३। दमोह

श्रीमती सुधा मलैया	विजय आईल मिल दमोह 47(661

ग्वालियर

श्री मधु भैया	इन्दापुर कर एडव्होकेट फालके बाजार ग्वालियर म० प्र०
श्रीमती अरविन्द जी नावेलकर	(आर्शीवाद" जनकगंज ग्वालियर
श्री आर. के. शिन्दे	एडव्होकेट सरदार काका साहेब डा. श्रीमती ओमबाला शिन्दे शिन्दे का बाड़ा हनुमान चौक जनकगंज लश्कर ग्वालियर
डा. व्ही ए. शिन्दे श्रीमती डा. सईदा शिन्दे	स्वीटी, नताशा (प्रिटी) प्रोफेसर विभाग जिलाध्यक्ष मेडिकल कालेज ग्वालियर म० प्र०
श्री ए. जी. यादव,	यादव भवन नया बाजार लश्कर ग्वालियर
श्री व्ही. जी. खोत, श्रीमती उमा खोत	एडव्होकेट सरदार आग्रो का बाड़ा ग्वालियर लाकर
श्री दिलीप सितोले, श्री विक्रम	कँटू रोड ग्वालियर
डा. सी. के. शुक्ला	रिजस्ट्रार एनाटामदे जी. आर. मेडिकल कालेज ग्वालियर
श्री अनिल चोबे	एफ. २ पार्क होटेल 'पड़ाव' ग्वालियर
श्री सोलटके	इलेक्ट्रकल इंजीनियर नगर निगम ग्वालियर
,, आर. एम. दीक्षित, कु. अंजु दीक्षित रिटायर्ड	पब्लिसिटी आफिसर, गर्ल्स डिग्री कालेज-के पास. लशकर ग्वालियर
,, यशवंत गोरे	ग्राम मूडा लश्कर ग्वालियर
,, डा. धारकर	न्यूरोसर्जन ग्वालियर
,, डा. महेश सक्सेना, द्वारा डा. माथुर क्लीनिक	त्रिवेणी घाट ऋषिकेश

२५

जबलपुर

श्री एस. आर. तिवारी — अनुप भवन नं. 1768 राईट टाऊन जबलपुर 482001

(२) सौ ज्योति सराफ — 673 मढाताल जबलपुर

(३) श्री सुबेदार द्वारा बी. ए. एस. धर्माधिकारी ए. डी. 980 — वर्कशाप ई. एम ई 56 ए पी ओ

२६

कानपुर

शरद दास 224 एफ. डी. — इयनू के एस पी जी. बाई सी/ओ 56 ए पी ओ.

२७

खरसिया

श्री शारदा प्रसाद शुक्ला — कार्यपालन यंत्री सिंचाई विभाग खरसिया 496601

२८

लखनऊ

श्रीमती भारती द्विवेदी, डी/1614 — पेपर मिल कालोनी निशांत गंज लखनऊ 226006

२९

मंदसौर

सुनील वी चौधरी एग्रीकल्चर फायनेंस आफिसर — सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया/रतनगढ़ स. जावद मंदसौर

३० **मद्रास**

१।	श्री मोहनचंद वैध सी/ओ गुरु शांति इन्टर प्राइजेज	पुलिस डिपार्टमेंट 50 एन. एस. सी. बोस रोड सेकेन्ड फ्लोर मद्रास
२।	श्री कस्तूर चंद्र – मोहन चंद्र वैद	बिशप लाईन मकान नं. १ राक्सी टाकीज के पास डाल्टन चौक मद्रास

३१ **मुंगेली**

श्री डा. भानू गुप्ता	भू. पू. स्वा. मंत्री ठे. 55 महामाई वार्ड मुंगेली
श्री प्रमोद कुमार गुप्ता	पता महामाई वार्ड मुंगेली
श्री सुनील गुप्ता	मुंगेली
श्री प्रकाश चंद्र पारेख	गांधी वार्ड मुंगेली
श्री प्रेमचंद्र जी पारेख	गांधी वार्ड मंडी मुंगेली
श्री राधे श्याम जी जोशी	शिक्षक मुंगेली
श्री सुरेन्द्र अवस्थी	खरीपारा मुंगेली
श्री ईश्वर लाल जी जोशी	महामाईपारा मुंगेली
श्री ज्ञान शंकर शुक्ला	शिक्षक मुंगेली
सरदार बलवंत सिंह सलूजा	तखतपुर त्रिलोचन मौर
रजूम प्रसाद तिवारी	
श्याम सुन्दर गुप्ता	पुराना बस स्टैंड मुंगेली
एम. एल. काटोलकर प्रिंसपल	मुंगेली उ. मा. शाला
मनीष गोवर्तन C/o श्री मुकुंद गोवर्धन मुंगेली	
व्यास नारायण तिवारी	पंडरिया रोड नल घर के पास मुंगेली
श्री मोहन चंद्र वैध	मुंगेली
सियाराम मिश्रा मुनीमजी	
श्री भंवर लाल जी पारेख	गोल बाजारपारा मुंगेली
बलीराम जी सोनी	महामाई वार्ड
श्री तिवारी	पी. टी आई – मुंगेली
डा. सुशील शुक्ला बी. एम. एस.	
श्री विष्णु दत्त मिश्रा	पोस्ट मास्टर मुंगेली
राम अवतार तंबोली	महामाई वार्ड मुंगेली
अशोक कुमार जैन लखपत राय जैन	गोलबाजार मुंगेली
श्रीमती मुखबाई तिवारी	मुंगेली
श्री मुन्ना द्विवेदी बड़ा बाजार	
श्रीमती अवस्थी पति डा. राम अवस्थी	
श्री अशोक तिवारी	वासुदेव योगाश्रम मुंगेली
श्री स्वयं प्रकाश गुप्ता	
अनु दिवान	
कु. कांता केशरवानी	
शांति लाल जी फुलिया	

हरिशरण तिवारी
सोना लाल जी - ग्राम व पोस्ट सोमनी जि. राजनांदगांव,
श्री उद्योपुरी गोस्वामी बाजारपारा मुगेंली
श्री शेषपुरी C/o श्री उद्योपुरी गोस्वामी मलाई घाट के पास जवाहर वार्ड मुगेंली
ओंकार प्रसाद जी गुप्ता

गोरे लाल ताम्रकार

परमानंद ताम्रकार
श्री श्याम गुप्ता C/o दीपक विद्युत केन्द्र बर्तन दुकान महामाईपारा
श्रीमती गीता गुप्ता मेन रोड मुगेंली
सिविल लाईन
राजा प्रसाद वार्ड कटनी शिव हथरी के पास जि. जबलपुर

३३

इंदौर

श्री बी. एस. भटजी वाले टे. 22505 एच. आई. जी सी./14आर. एस. शुक्ला नगर इन्दौर 452001
श्री मोहन राठौर रिटा एस. पी. 906 बैराठी कालोनी नं. २ इन्दौर
श्री शरद राठोर 17 महाबीर मार्केट इन्दौर
श्री डा. पी. कु. मरकर सेक्टर ए मकान 30 साईनाथ कालोनी इन्दौर
श्री प्रभाकर दुबे द्वारा डा. कररकर ए/30 पी. साईनाथ कालोनी इन्दौर
श्री लक्ष्मीकांत द्विवेदी एडव्होकेट 95 बिया बानी इन्दौर
बी. पी. रूनावत 6 स्टाफ क्वाटर्स शा. कला. वाणिज्य महा विद्यालय इन्दौर
श्री कैलाश गुप्ता टेलि-34753 141 जूनी कसेराबाखल इन्दौर
श्रीमती गीता सप्रे शिक्षिका 204 श्री नगर इन्दौर
श्री बी. के. चौधरी 31 रवीन्द्र नगर एलासिया पी. डब्ल्यू डी. वर्क शाप के पीछे इन्दौर
श्री रामकिशन जी गाडो दिया 89 इसली बाजार इन्दौर
श्री रामकरण मिश्रा शिक्षक होमिथोपेथ कडालीम बड़ा गणपति के पास इन्दौर
श्री एस. डी. पांडेय प्राध्यापक फिजिक्स 86 प्रकाश नगर इन्दौर
श्री पुन्डलीक डिस्ट्रीक्ट जज. सिविल लाईन इन्दौर

३४

नागपुर

टीं. व्ही. सेन्टर इन्जिनियर सेमिनारी हिल्स नागपुर
सौ माधुरी प्रवाण राजदेरकर एडव्होकेट कांग्रेस भवन एवं के पास नागपुर
श्री मनोहर श्याम राव जोशी आल इण्डिया रेडियो C/o डा. दानी साहेब देशमुख का बाड़ा पटवर्धन
सौ कमल जयंत कृष्ण कुलकर्णी हाईस्कूल के सामने, सीताबर्डी नागपुर
123 दीनदयाल नगर, नगर नागपुर 22
श्रीकांत चिकेकर टिलका पुतला सुभाष रोड, नागपुर
सुरेश पारलकर, फोटोग्राफर 4 टी. बी. हास्पीटल गन्हलमेंटे मेडिकल नागपुर
सौ किशोरी प्रदीप जलगावंकर छत्रपति नगर रायपुर रोड नागपुर
दिलीप माधव देशपांडे

जी. ई. ए. पांडे 332 शंकर नगर नागपुर 10-440010
मोहन देशपांडे C/o प्रमोद देशपांडे आरती सोसायटी 240/ल सुयोग मंगल कार्यालय के पास, नागपुर
सौ अलका द्वारा श्री किशोर लांडगे अयाचित मंदिर के पीछे लकड़ी पुल महाल नागपुर 440002

नगर

३५
श्री एन. एल. धर्माधिकारी E 44/219 संगमलेर वाघ सहाकारी गक्कर कारखान अमृत नगर संगमलेर जि. नगर (महा)

नासिकसिटी

३६
श्री विद्याधर देशपांडे १६ उषाकिरण ४ पार्टमेंट्स शरणपुर क्रास रोड केनेड़ा कानेरा के पास OPP बसंत मार्केट नासिक 422005

पुणे

३७
श्री द. य. पतकी 1030 शिवाजी नगर आकाश गंगा सोसायटी माडल कालोनी बंगला चौक पुणे १६

रायपुर

३८
डा. एम. एस. पंवेर रीडर आयुर्वेदिक कालेज रायपुर
डा. श्रीमती कुवंवत कौर पंवेर रीडर एनाटमी वार्डन गर्ल्स हास्टल मेडिकल कालेज के पास रायपुर 49 (01
डा. टी. के. बेनर्जी एम. डी. रेडियो लाजिस्ट बैजनाथपारा रायपुर
मेडिकल कालेज डी. हासपीटल
डा. एस. के. दास एम. एस. एनाटामी दासविला विरदी कालोनी रायपुर
श्री एस. के डागा आर. टी. सी. बिल्डिंग, जी ई रोड
श्री व्ही. एस. दुदे रीजनल मैनेजर एम. पी. स्टेट कं. यूमर्ड फेडेरेशन क्वार्टर 55 पंचशील नगर रायपुर
श्री नेमा जी सेल्स टैक्स आफिसर
श्री रामेश्वर गिरी कंकालीमठ ब्राम्हणपारा. रायपुर
मोहन गिरी कंकालीमठ ब्राम्हणपारा रायपुर
श्री एम. जी. एम. नायडू एम. डी. हामियो क्लीनिक जेल रोड रायपुर
डी सी. एम. वर्मा पेथालाजिस्ट जयराम टाकीज के पास रायपुर

रीवा

३९
महेश्वरी प्रसाद द्विवेदी ग्राम भाड़ी (हनुमान) जिला रीवां
श्री राम रहीम मिश्र पैपर खार मऊगंज जि, रीवां
श्री राजीव लोचन शर्मा ग्राम सेवक ग्राम सीगो पो. रायपुर सोनौरी जि. रीवां
श्री बी. एन. अवस्थी एडव्होकेट जि. कोर्ट रीवां
श्री शिव बालक प्रसाद द्विवेदी ग्राम बासा पो. गोविन्दगढ़ जि. रीवां

राजनांदगांव

४०
(१) श्री शोभाकांत पाठक चालान नवीस जामातपारा राजनांदगांव
(२) सौ आशारानी देशपान्डे द्वारा श्रीव्ही- एन देशपान्डे न्यू सिविल लाईन किरन बुनाई केन्द्र राजनांदगाव म. प्र.

रींवां

४१	डा. रघुनाथ प्रसाद पान्डेय प्रोफे. एवं विभागाध्यक्ष फिजियालाजी	मेडिकल कालेज रींवाडी.-4-मेडिकल कालोनी रीवा436001
	श्री मेजर एस. पी. सिंह	अमहिया रोड़. रींवा. 486C01
	डा. डी. सी. नायक लेक्चरर	रींवा FI G. M Compus, Medical College colony Riwa
	श्री मुद्रिकाप्रसाद सिश्र	व्यंकट हाय. से. स्कूल सतना, रींवा
	नरेन्द्र प्रसाद तिवारी	ग्राम डेल्ही व्हाया मनगवा जिला. रींवा
	,,महेन्द्रकुमार शर्मा	,, ,,
	,,आर. के. त्रिबाठी	,, ,,
	श्री अमरीश चंद तिवारी	,, ,,
	,,चंद्रिका प्रसाद मिश्र	ग्राम शाहपुर । रामपुर । पो. रामपुर व्हाया नई गढ़ी रींवा
	, डा. डी. के द्विवेदी	ग्राम पासा पो. गोविंदगढ़ रींवा
	श्री जगदीश प्रसाद पांडेय	ग्राम बरांव पो. बराव . मऊगंज तहसील
	,, केशरी प्रसाद मिश्रा	ग्राम शाहपुर पो. रामपुर व्हाया नई गढ़ी .
	,, रामबदन मिश्रा	शिक्षिका ग्राम ठेरा जि. रींवा
	,, डा. आर. सी. तिवारी.बी एम.ओ.	रामपुर बघेलान. सतना
	,, रामकिंकर त्रिपाठी एडव्होकेट	बी. आ. गिरजा प्रसाद म/ए-1 शक्ति नगर रींवा
	,, भैयालालजी तिवारी सौ श्यामवती	ग्राम फूल मऊगंज रींवा म. प्र.
	श्री अंजली कुमार तिवारी परिवार	चौबरहा पो. रामपुर
	,, भुवनेश्वरी प्रसाद तिवारी एडव्होकेट	ग्राम चंवरहा पो. आ. फूल जि. रींवा
	भगवान प्रसाद त्रिपाठी	मु. सलैया पो. मऊगवां जिला रींवा.
	श्री राधेश्याम सिंह बघेल	ग्राम चवरहर पो. फूलबाग तह. मऊगंज जि.रींवा
	,, डा. गर्ग रीडर एनाटामी एम.एस.मेडिकल कालेज	मेडिकल कालेज रींवा
--	सुश्री डा.अ मा श्रीवास्तव प्राध्यापिका फिजयालाजी	मेडिकल कालेज कालोनी रींवा.
--	श्रीराम रहीम मिश्र।	ग्राम पैपर खार पो. आ. बरांव जि. रींवा म. प्र.
--	श्री महेश्वरी प्रसाद द्विवेदी	ग्राम भाडी पो. हनुमना
—	श्री राजीव लोचन शर्मा	ग्राम. सींगी पो. आ.सोनौरीतह. ब्योहार जि.रींवा
—	" गिरजा प्रसाद पटेल	ग्राम बरांव पांडेय आटा चक्की पो. बराव व्हाया मऊगंज रींवा .
—	डा. रामानुज शर्मा	प्राथमिक स्वास्थय केन्द्र मऊगंज पो. मऊगंज
—	श्री रामसिलाप मिश्रा	ग्राम हनमन पो. पटेहरा व्हाया मऊगंज
—	" प्रभाशंकर मिश्र	ग्राम खाजूरहन पो. बराव व्हाया मऊगंज तहसील हनुमना
—	" बी. एम. अवस्थी	एडव्होकेट जि. कोर्ट रींवा.
—	" शिवबालक प्रसाद द्विवेदी	ग्राम. बांसा पो. गोविन्दनगर

१४२। **शहडोल**

श्री डा. जानकी प्रसाद मिश्र रिटायर्ड डी. ओ.	पानी टंकी के पास बुढ़ार रोड शहडोल
श्रीमती मनोरमा श्री चद्रवती मिश्रा	शहडोल
भैयालाल जी तिवारीलिपिक जि. शि. अ. कार्यालय डी ई ओ	शहडोल
गुरु प्रसाद जी पांडे शिक्षक	अवस स्कूल शहडोल म. प्र.
श्री मिश्रीलाल जी पान्डे	,, ,, ,,
,, रामानुग्रह पांडेय	,, ,, ,,
,, अतिगड़ प्रसाद पांडेय	,, ,, ,,
डी. एस. बाकडे प्रिंसपल	जी. एस. हाई स्कूल कोतमा जि. रीवा
सनतकुमार पाठक	ग्राम पटरा पो० अमरहा जि. शहडोल
डा. एम. के. शर्मा बी. ए. एम.	पुडवा शहडोल
श्रीमती सत्यवती खरे	सरदार पटेल स्कूल वार्ड ३ के पास स्टेशन रोड शहडोल
राम समुज पांडे (वन विभाग)	माला कालोनी शहडोल म. प्र.
धनप्रकाश शर्मा शिक्षक	शारदा कालोनी शहडोल
श्री हरनारायण दुबे डी. ई. ओ. , ए. डी. ई. एस.	शहडोल
महाजन लाल शर्मा	शारदा कालोनी पुलिस लाईन के पास शहडोल
श्री विष्णु तिवारी	पुरानी बस्ती कल्याणपुर रोड गायत्री शिशु पाठशाला के के पास शहडोल
,, उमा द्विवेदी	प्राध्यापिका गंज पाठशाला शहडोल
रामबदल मिश्रा व्याख्याता	अमरहा शहडोल
श्री एस. के. मिश्रा उप वन मण्डलाधिकारी	पो. जयसिंगनगर जि. शहडोल म, प्र.
प्रगकुमारी बाजपेई	लेक्चरर गर्ल्स हाईस्कूल गोविन्द कंगाऊ
राम किशोर दुबे	,, ,, ,, ,,

१४३। **वर्धा**

श्री व. वि. तकवाले	एडव्होकेट श्री निवास कालोनी भवन कंवर रोड वर्धा ४४२००१
,, प्रभाकर निलकंठ राव पांडे	श्री निवास कालोनी
,, के. एन. देशपांडेय	गांधी मेमोरियल लेप्रोसी फाउंडेशन वर्धा
सौ. आशा सदावते	श्रीनिवास कालोनी
प्रकाश काशीधर	भगतसिंह पुतले के पास रामनगरा वर्धा
सौ. रमाबाई देशपांडे मोतीवाले देशपांडे	सेहिरा मार्केट के समाने वर्धा
श्री बाबा साहेब चोपडे	राजनगर पोस्ट आफिस वर्धा
पंजाब राव नानखेडे	सावरे ले आऊट वर्धा
श्री शुक्ल	गांधी कालोनी फलडेशन
श्री वाई. डी.	कानिटकर रामनगर वर्धा
श्री बोहा दाजिबा	क. व साईबाबा मंदिर के सामने वर्धा
श्री श्रीधर केशव	का. व ,, ,,

मदनलाल जी वैग
श्री उमाकांत महादेव कुटेमाटे
शांताबाई जोशी सी/ओ. बालातकलाले — पुलिस स्टेशन के सामने संजय इंगोले गणेश से मार्ग राष्ट्रभाषा रोड हिन्दनगर वर्धा.
श्री भाऊ जी अवरकर, बाबूराव मुढाल, अंना अवरकर
श्री आशा साहेब उब रकर — समर्थवाडी वर्धा
सौ/ गोन्दा बाई आंदरे — वर्धा ,,
मालोतराव वरवट, श्री मधुकर जवदेड — वर्धा ,,
- श्री बाबूराव लोनकर सौ सुमित्रा बाई लोवकर — कुलेवकील चाल इंदिरा मार्केट के सामने वर्धा
- सौं पुष्पा उवरकर . — मोड़े वकील की चाल वर्धा .
- सौ सुमित्रा पाहिम. — " वर्धा.
- सौं मोरेबाई शिक्षिका. — " वर्धा .
- रत्नाकर कुलकर्णी — " वर्धा.
- दिनकर राव घसेटे — परदेशीपुरा हिंदनगर श्रावणे प्लाट वर्धा.
- नामदेव राव गंडे मैनेजर बैंकम बरौदा — स्नेहल नगर वर्धा.
- सौ रंजना केलकर — मु. पो. वायण्ड वर्धा।महा.।
- अनुल अ वर्गी कनिष्ठ अभियंता — समर्थ वाडी वर्धा.
नि. पा. ।बा। उपविभाग चार्मोर्शी मु. पो.चामोर्शी, जिला गढ़चिरोली ।महा।
- मदन तिवराकर — साबके प्लाट चौरौली-वर्धा.
- प्रमिला उपाध्याय — वसंती भुवन नगर परिषद के पास वर्धा.
- शांता जोशी — वसंतराम आर. मिश्रा तेलेनपुरा, वार्डन-31 वर्धा.
- श्री शशिकांत मोहनलाल मेहता — लिंगीमंदिर वार्ड, न. I2 वर्धा 44 001

सागर

४४
- श्री देवेन्द्रसिंग राय — आर. टी. ओ (परिवहन आयुक्त) सागर
- श्री सोनटके इलिक्ट्रिकल इंजिनियर — सागर

श्रीनगर

४५
- श्री अब्दुल हमीद खान — I. P. S दि डेस्टीनेशन सकूरा पो. नसीमबाग श्रीनगर (J&K)
- श्री ओ. एन बबलू श्रीमती आशा बबलू — रिजनल इंजिनियरींग कालेज नसीमबाग श्रीनगर (J&K)
- श्री एस.एम. घर श्रमती डा. घर — राजबाग श्रीनगर
- डा. महाराज कृशन मिसरी — द्वारा दरबनाथ स्टोर सिकोपचानपुरा श्रीनगर(J&K)
- श्री बी. जेड़ रैना श्रीकांत रैना — कोरानगर श्रीनगर(J&K)
- डा. मोहोम्मद सुहेल खान — Md suhail khan – Vet Theriogenolgist Zakura Shrinagar (J&K)

ढाडे

४६
श्री विजय नीलकंठ मर. देश पांडे — दातानाथ भवन जि. ढाबे

हम इनके आभारी है

श्री हरीश केडिया
तिफरा

भारत प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज
तिफरा

एक्मे प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज
सिरगिट्टी

ए. के. प्रोडक्ट
तिफरा

ए. के. केमिकल्स
तिफरा

बाम्बे ग्लास एण्ड केमिकल वर्क्स
तिफरा

भाटिया प्रिंटर्स
तिफरा

लंकेश इंडस्ट्रीज
तिफरा

आनन्द प्लास्टिक इंडस्ट्रीज
तिफरा

तेज इंडस्ट्रीज
तिफरा

के. आर. पी. वाणिज्य
तिफरा

नेहा केमिकल्स
तिफरा

मौसाजी मेटल वर्क्स
लिंक रोड़

आर. के. स्टील्स
रायपुर

हरीश इंडस्ट्रीज
तिफरा

अब्दुल हुसैन आदमजी
जूनीलाइन

जयंत कापर एण्ड स्टील प्रोडक्ट
लालखदान

बिलासपुर कारुगेटेड
तिफरा

अर्चना क्लाथ स्टोर्स
सदर बाजार

प्रीमियर एजेंसीज
सदर बाजार

पेंड्रावाला एण्ड मधुछाया
गोलबाजार

नरेशचंद सुरेशचंद
दयालबंद

श्री अशोक अग्रवाल

श्री प्रताप खुशलानी
गोलबाजार

न्यू लक्ष्मण क्लाथ स्टोर्स
सदर बाजार

मौसाजी स्वीट्स
गोलबाजार

जयंत स्टोर्स
सदर बाजार

सलूजा रेडियो
सदर बाजार

श्री मूलचँद खंडेलवाल
गोल बाजार

डा. मिहिर चक्रवर्ती

श्री सुभाष वर्मा ठेकेदार

श्री लक्ष्मीकांत मिश्रा
सेतुनिगम

श्री विजयपाल गुप्ता
रतनपुर

श्री बी. पी. कश्यप

डा. आर. एस. शुक्ला

बिलासपुर प्रकाशन
फोन 3225 ... बिलासपुर

करुणामय

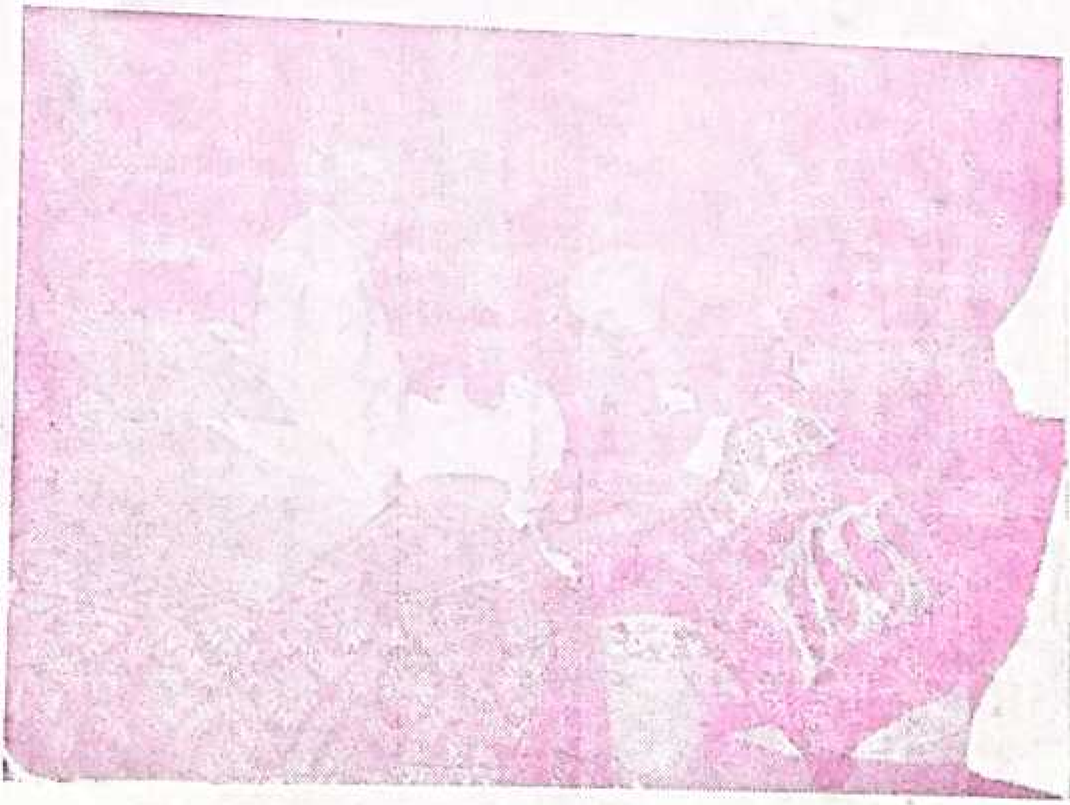

गुरुवंदना

रीवा गुरु पूर्णिमा

"एक में सब सबै में एका"

'All in one and one in all'

कलेण्डर

					JUL.	AUG.	SEP.	OCT.	NOV.	DEC.	JAN.	FAB.	MAR.	APR.
1	8	15	22	29	W	S	T	Th	Su	T	F	M	T	F
2	9	16	23	30	Th	Su	W	F	M	W	S	T	W	S
3	10	17	24	31	F	M	Th	S	T	Th	Su	W	Th	Su
4	11	18	25		S	T	F	Su	W	F	M	Th	F	M
5	12	19	26		Su	W	S	M	Th	S	T	F	S	T
6	13	20	27		M	Th	Su	T	F	Su	W	S	Su	W
7	14	21	28		T	F	M	W	S	M	Th	Su	M	Th

मुद्रक : बिलासपुर प्रकाशन (युग पराक्रम परिसर) न्यू बस स्टेण्ड बिलासपुर (म. प्रं.) [illegible]३२२५